ऋतु.
मेरी प्यारी गुड़िया

गौरी संशाज

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Gauri SanshaG 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7018-847-1

Cover design: Rohit
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: January 2026

Contents

Chapter 1 - वसंत ऋतु (Spring Season) Childhood 1

Chapter 2 - ग्रीष्म ऋतु (Summer Season) Teenage..............13

Chapter 3 - वर्षा ऋतु (Rainy Season) Adulthood.................25

Chapter 4 - शरद ऋतु (Autumn) Midlife................................41

Chapter 5 - हेमंत ऋतु (Pre-Winter Season) Elderhood 51

Chapter 6 - शिशिर ऋतु/शीत ऋतु (Winter season) old age 63

Chapter 7 - मेरी प्यारी गुड़िया... ऋतु ।..83

Chapter 1 - वसंत ऋतु (Spring Season) Childhood

कितना तालमेंल होता है इन मौसमो में..देखते ही देखते बदल जाते है, और किसी को हैरत भी नहीं होती। बाबा कहते है के इंसान का जीवन भी इन्ही मौसमों के जैसा होता है। जैसे हर साल ऋतुएं बदलती है। वैसे ही इंसान का जीवन भी बदलता रहता है। बस फर्क इतना है कि ऋतुओं को फिर से वापिस आने के लिए अगला साल मिल जाता है। पर हम इंसानों के जीवन में ये सारे परिवर्तन एक ही बार होते है।

Chapter 1

कितना सुंदर बाग है। मैं बाहर होती तो यहां के हर एक फूल से रंग चुन लाती। यहां लगे हर एक फूल को छू कर उनकी खुशबू सूंघ कर महसूस करती। इतने सारे रंग-बिरंगे फूल, मैं सारे..! नहीं..नहीं...सारे नहीं। इनमें से कुछ जो मुरझाने वाले होंगे, उनको चुन-चुन कर तोड़ लाती और मां के लिए एक सुंदर सा गजरा बनाती। और उस गजरे में एक गुलाब का फूल जरूर लगाती । मां को गुलाब कुछ ज्यादा ही पसंद है। पर बाबा उन्हें गुलाब का पौधा छूने से रोक देते है। वो कहते है, उसमें कांटे होते है। जिनसे मां को चोट लग सकती है।

उफ्फ...ये भीनी-भीनी सी मिठी-मीठी सी सर्द हवा..पर इस हवा की छुअन चुभ तो नहीं रही है। बीते कुछ महीनो में तो ये अलाव ही हमारा सहारा रहा है। और अब देखो इस अलाव को ऐसे शांत ठंडा पड़ा है। जैसे इसने भी दिसंबर और जनवरी की ठंड के बाद राहत की सांस ली हो। पर अब तो अगली ठंड तक इसकी भी छुट्टी रहेगी।

हां लेकिन अभी बाबा की होली से पहले कोई भी छुट्टि नहीं है। पर फिर भी बाबा पिछले कुछ महीनो से., ऐसे ही हर रोज जल्दी घर आ जाते है। मां को अपने हाथो की बनी चाय पिलाने। और रात का खाना भी खुद ही बनाते है। बाबा कहते है इस बसंत मां उन्हें उनकी जिन्दगी की सबसे प्यारी खुशी देने वाली है। जैसे बसंत जिंदगी की नई शुरुआत लाता है। वैसे ही मां और बाबा इस वसंत अपनी जिन्दगी की एक नई शुरुआत करेंगे।

कुछ इसलिए भी बाबा पिछले कुछ महीनो से मां का ज्यादा ख्याल रखते है। पर मां खुशी देने वाली है..इसलिए ख्याल रखते है.? या ख्याल रखना बाबा की आदत है..?

लेकिन अभी तो इस साल की ये अलविदा कहती कड़ाके की ठंड, ये भीनी-भीनी सी सर्द हवाएं। जो मां को छू कर गुजर रही है। मां और मुझे अपने होने का एहसास बहुत गहराई से करा रही है। एक शॉल को ओढ़े हुए मां घर के छज्जे में रखी एक कुर्सी पर बैठी बाबा के हाथो की बनी गर्म चाय के साथ कुछ बिस्कुट का इंतजार कर रही है। पर ये हवाएं है जो उन्हें छू कर बैचेन कर रही है। वो अपने आप को इस एक छोटे से शॉल में इस तरह से समेंटे जा रही है जैसे कोई नन्हा सा बच्चा अपने आप को मां के आंचल में समेंट लेता है। पर वो यहां से उठ कर अंदर क्यों नहीं जाती.?

शायद इसलिए क्योंकि उन्हें इस साल की आखरी मीठी सी भीनी सी ठंड को अलविदा कहना है। और वो अलविदा कहे भी क्यों न। इस साल इस ठंड ने उन्हें अपने होने का एहसास हर साल से कुछ ज्यादा ही कराया है। इस ठंड वो पूरे समय घर के अंदर अलाव की गर्मी में ही तो रही है। जो अब मजे से छुट्टियो में जाने वाला है। वो अब जाते हुए भी इस सर्द हवा को न महसूस करे, तो आते हुए वसंत का स्वागत कैसे करेंगी।

पर अभी तो उन्हें इस ठंड से एक कड़क अदरक की चाय ही बचा सकती है। और उस पर वो चाय बाबा के हाथो की बनी हो। तो मानो जैसे भरी सर्द में गर्म हवा जो अलाव से आती हुई आग की लपटो को छू कर गुजरती है। फिर इंसान के जिस्म को अंदर तक तरो-ताजा कर

देती है। वैसे ही ये बाबा के हाथो की बनी अदरक की चाय मां और मुझे इस ठिठुरन भरी सुस्ती में ताजगी से भर देगी।

ये भीनी सी ठंड, अदरक की चाय और उस पर बाबा का पसंदीदा गाना 'जिंदगी एक सफर है सुहाना'। पर इस सुहानी सी शाम में सर्द हवाओ के बीच भी मां को आता हुआ पसीना बाबा को घबराहट में डाल रहा है। इससे पहले बाबा कुछ पूछ पाते । मां के चेहरे पे उनके मन की बेचैनी साफ दिखने लगी। अब तो इस अदरक की चाय पर से भी मां-बाबा दोनों का ध्यान हटने लगा। एक तो कोई आस-पास भी तो नहीं है दोनों के। जो बाबा के साथ मां को संभाल सके। घर में अकेला होना भी कितना मुसीबतो भरा होता है न। अब तो बाबा को डॉक्टर को फोन लगा ही लेना चाहिए। या मां को हस्पताल ले के जाना चाहिए। पर बाबा भी न, कहां कुछ समझते है। वो तो अब तक इस अदरक की चाय को ही दोष दे रहे है। और बाबा तो बाबा ही है। उन्हें तो अब ये हस्पताल के डॉक्टर ही कुछ समझाएं।

बाबा भी..! सब जानते हुए भी बच्चो सा काम करते है। और घबरा भी जल्दी जाते है। उन्हें समझना चाहिए न मां का नवमा महीना चल रहा है। मैं किसी भी समय उनका साया छोड़ उनके सामने आ जाऊंगी। पर इसमें बाबा की भी कोई गलती नहीं है। मां-बाबा को साथ हुए इतने साल हो गए। वो दोनों अब तक अकेले है। उन दोनों ने कितने जतन किए है। मुझे इस दुनिया में लाने के लिए। बाबा ने तो दफ्तर तक से आधे दिन की छुट्टी ले रखी है। वो भी पिछले नौ महीनो से। तब से जब से उन्हें ये खबर लगी है के मैं आने वाली हूँ।

उन्होंने हर रोज मां और मुझे अपने हाथ का बना खाना खिलाया है। बाबा को तो मेरे बारे में कुछ भी नहीं पता। न ये के मैं लड़का हूँ या लड़की.?

न ही ये के मैं उन्हें पसंद भी करूंगी या नहीं? उन्हें तो ये भी नहीं पता के मुझे उनके साथ खेलना पसंद आएगा भी या नहीं? और न ही ये के पिछले नौ महीनो से जो मैं., उनके हाथ का बना खाना खा रही हूँ। वो मुझे पसंद भी आता है या नहीं? उन्हें तो कुछ भी नहीं पता.! फिर भी वो मेरे आने का इंतजार कितनी बेसब्री से कर रहे है।

बिल्कुल उस चांद वाली कहानी के बच्चे की तरह। जो पानी की भरी थाली में चांद के दिखने का इंतजार करता है। और शाम होते ही जैसे ही उसे वो चांद दिख जाता है। तो वो उत्साह से खिल उठता है। मुझे लगता है बाबा भी इस तरह से अपनी सभी, उनके मन में चल रही बैचेनियो को भूल कर उत्साह से भर जायेंगे। और उछल-उछल कर पूरे हस्पताल को अपने सिर पर उठा लेंगे। बिल्कुल वैसे ही जैसे मां की हल्की सी आह सुन..वो सारा घर सिर पर उठा लिया करते है।

कितना मुश्किल समय है, घड़ी की सुई जैसे आगे बढ़ने का नाम ही नहीं लेती। और ये पहर कल की शाम से आज का सूरज सर चढ़ आया है। बाबा ने भी कल की चाय के बाद अभी तक कुछ नहीं खाया। डॉक्टर भी उन्हें सब्र रखने का कह रहे है। पर बाबा है के मां के पास से हटने को तैयार ही नहीं। सब कह तो रहे है, चिंता मत करो सब ठीक होगा।

लेकिन बाबा की बैचेनी मुझे अब उदास करने लगी है। कहीं बाबा को एक लड़के का इंतजार तो नहीं है? वो बार-बार मां को ये क्यों कह रहे है के उनका बेटा बहुत बहादुर है। तुम परेशान मत हो सब ठीक होगा।

वो इससे पहले भी कई बार ये कह चुके है। सर्दी-गर्मी के मौसम में भी जब वो दफ्तर से आ कर मुझसे मेरा हाल पूछते थे। तब भी तो मुझे बेटा ही कहते थे। मैं बाहर आ कर इन सर्द हवाओ को छूना-महसूस करना तो चाहती हूँ। पर मुझे इस बात का डर भी है। अगर बाबा को बेटी नहीं चाहिए हुई तो..! तो मैं क्या करूंगी..? वो जैसे ही मुझे अपने हाथो में लेंगे। और ये सुन कर के मैं बेटा नहीं बेटी हूँ। तो खुद को मुझे गले लगाने से रोक न ले। कहीं मेरे बेटी होने की वजह से, मैं उनके नर्म हाथो के दुलार से वंचित न रह जाऊं। कहीं उनकी ये उत्सुकता मेरे बारे में सुनते ही खो न जाए।

मां भी तो कहीं इसी बात से बैचेन नहीं है। उन्हें भी तो इस बात का डर नहीं है। इतने महीनो का सुखद इंतजार अगर उतना ही सुखद न रहा तो.! मां-बाबा के मीठे रिश्ते में खटास ला देगा। पर मैं तो ऐसा नहीं चाहती। मैंने तो दोनों को हमेशा बराबर चाहा है।

कितनी बार जब मां बीमार हुई है, तो बाबा ने उन्हें कड़वी दवा दी है। जो मां के साथ-साथ मुझे भी तो मिली है। कितनी बार उन्होंने मां की लापरवाहियो पर गुस्सा किया है। और जोर से उनको डांटा है। वो डांट मां के साथ-साथ मैंने भी तो सुनी है। कितनी बार तो मैं मां के साथ भूखी भी रही हूँ। और कितनी बार तो उनके साथ चक्कर खा कर गिरते-गिरते बची भी हूँ। मां ने बाबा से छुप-छुप कर जब-जब मिट्टी खाई है, उनके साथ उस मिट्टी का स्वाद मैंने भी तो चखा था। कितनी बार मां ने मुझसे बाबा की शिकायत भी लगाई है। और बाबा ने भी तो मां को बातो-बातो में कितने सारे करेले खिलाएं है। दोनों के बीच हुई कितनी सारी नोक-झोक का हिस्सा रही हूँ मैं।

वो इमली, वो आम की कलियां जो मां ने चटकारे ले-ले कर खाई है। मैंने भी तो उस स्वाद के चटकारे लिए है। कैसे इस साल की तेज सर्दी में रजाई पर सिमट जाती थी मां। सिर्फ मुझे उस तीखी सरदिली हवा से बचाने के लिए।

इस दिवाली एक मेरे नाम की फुलझड़ी भी तो मां-बाबा ने मिल कर जलाई थी। कितना इंतज़ार किया है दोनों ने मेरा। उन्होंने मुझे अपनी पसंद का सब बताया है, पर मैंने...? मैंने तो कभी किसी से नहीं कहां., मुझे ये दोनों नहीं चाहिए। पर अगर इनको मैं नहीं पसंद आई..! तो मैं क्या करूंगी? इसी उलझन से मेरा भी जी घबराने लगा है।

इस साल की ठंड जाने को है। सुना है बसंत आने वाला है। मां बाबा कितनी बार कह चुके है। इस साल उनके जीवन में भी बसंत की नई शुरुआत होगी। मेरे आने से उनके आंगन में भी इस बसंत एक कली खिलेगी। जिसकी मेहक उनके सारे घर में बिखरेगी।

मेरे मन की घबराहट और बाबा के मन की बेचैनी का इस समय कोई हल नहीं है। ये हल तो अब तब ही निकलेगा जब मैं और बाबा आमने-सामने होंगे। पर वो घड़ी कब आएगी। डाक्टर का कहना है बस कुछ देर की बात है, सब ठीक हो जाएगा। ये तो बाबा भी देख रहे है के हस्पताल के सभी लोग यहां-वहां अपने काम में लगे हुए है। उनके पास मां के अलावा और भी तो मरीज है। फिर भी बाबा सबके पास जा-जा कर एक ही बात पूछ रहे है। फिर जब वो बाबा को समझा दे के सब ठीक है। तो वो सब मिल कर बाबा की कलाकारी का नमूना देख रहे है।

बाबा - नहीं-नहीं मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ। जनता हूँ सब ठीक है। आप लोग सब अच्छे से कर रहे है। मैं तो बस यूं ही...

अपने मन की बेचैनी छुपाते बाबा कितने प्यारे लग रहे है। पर फ्रिक करने की आदत उनकी कैसे छूट जाए। बस किसी के कह देने से।

मां कैसी है, मैं कैसी हूँ। कल से पचास बार पूछ चुके है डॉक्टरों से। और डॉक्टर हो या नर्स सब उन्हें हज़ार बार बता चुके है के मैं ठीक हूँ, मां ठीक है।

लेकिन पिता तो ऐसे ही होते है न। उनका स्वभाव ही ऐसा होता है। जैसे पूरी तस्वीर बना कर हर एक रंग वो खुद से चुनते है। फिर उस तस्वीर को फ्रेम करा कर खुद अपने कमरे में बिस्तर के सामने वाली दिवाल पर लगाते है। और रोज आते-जाते उसे ऐसे देखते जाचते और संभालते है। जैसे कोई बच्चा अपने खिलौने दिन में पचास बार संभालता है। इस डर से कि कहीं कोई खिलौना चटक तो नहीं गया। जैसे एक माली बाग के हर पेड़, हर फूल, हर पौधे को खुद चुनता है। फिर भी बाग छोड़ते-छोड़ते एक बार फिर सबकी तरफ देखता है। कहीं कुछ रह तो नहीं गया। ये जानते हुए भी के उसने सब अच्छा किया है। उसी तरह पिता का भी यही स्वभाव है। सब अच्छे से करते है, फिर भी बार-बार देखते जरूर है के सब ठीक तो हुआ न।

अब तक तो डॉक्टर को भी समझ आ गया है। बाबा की बेचैनी तब तक नहीं जाने वाली जब तक वो खुद अपनी आंखों से मां और मुझे देख नहीं लेते। इन्हीं चिंताओं के बीच ये एक दिन भी निकल गया।

आज तो सुबह से सबके मन में उत्सुकता के साथ चिंता का भी आना-जाना लगा है। जैसे मन किसी एक आवाज का इंतज़ार कर रहा है। इस बात की उत्सुकता बाबा के चेहरे पे साफ- साफ दिख रही है। और सब अच्छा हो ये चिंता भी बीच-बीच में चक्कर लगा ही लेती है। इसी सबके बीच बाबा ने भी कल से कुछ खाया तक नहीं। बस मां के जिद्द

करने पर उनके साथ ही कुछ फल खाए थे। उसी बीच उन दोनों में ये चर्चा भी हुई थी। आज बसंत पंचमी का त्यौहार है। हर साल की तरह घर पर सरस्वती जी का पूजन करना है।

मां - आज तो दिन भी बहुत अच्छा है। तुम चिंता क्यों करते हो। मां सरस्वती सब अच्छा ही करेंगी। तुम घर जाओ यदि जरूरत पड़ी तो नर्स से कह के तुम्हें बुलवा लूंगी। वैसे भी घर पास ही तो है। तुम घर जा कर बगीचे में पौधों को पानी देना। मंदिर में पूजा करना, एक दिया जलाना और प्रार्थना करना। फिर कुछ खाने में पका कर खा लेना। और वापिस आते समय बाग से कहना कि वो मेरा मन, मेरा घर और मेरा जीवन अपनी खुशबू से महका दे। तुम फिर वहां से एक गुलाब का फूल मेरे लिए भी लेते आना।

मां को हां कह कर बाबा यहां प्रतीक्षालय में बैठे है। उनके कदम जैसे वहीं जम गये है। मां सच कहती है बाबा को सीधी बातें कम समझ आती है। जब से मां के कमरे से बाहर आए है। जो भी नर्स दिख रही है उनका सिर खा गए। अब ये बात उन्हें कौन समझाए के नए फूल कली से बाहर आने में थोड़ा सा समय तो लेते ही है। फिर वो फूल अगर नौ महीने अपने पेड़ की जड़ों में रहा हो, तो उसके खिलने का समय थोड़ा और बढ जाता है। पर इस बैचेन मन का क्या करें.. बेचैन मन को घड़ी की टिक-टिक स्पष्ट सुनाई देती है। वैसी ही बाबा को भी इस वक्त मां से दूर होते हुए भी मेरी धड़कने स्पष्ट सुनाई दे रही है।

हस्पताल के बगीचे में घूमते हुए बाबा का ध्यान एक गुलाब के पौधे पर पड़ा। तो उन्हें याद आया के मां ने सुबह-सुबह ही उनसे एक गुलाब मांगा था। इस पौधे में भी तो एक कली खिलने में है। वो कली अपने ऊपर लिपटी हुई सुर्ख हरी पत्तियों से एक जंग सी लड़ रही है। जंग भी

ऐसी जीने-मरने की नहीं बस बाहर आ कर खुद इस खूबसूरत दुनिया को देखने की। अपने आस-पास के रंग महसूस करने की। खुल कर सांस लेने की।

ये देखते-देखते बाबा का ध्यान जैसे उस कली में ही कहीं अटक गया है। वो कुछ देर के लिए ही सही पर अपने आस-पास की सारी दुनिया भूल गये थे। उन्हें देख ऐसा लग रहा है। जैसे वो इसी क्षण की कबसे प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ देर की जद्दो-जहद के बाद गुलाब की पंखुड़ियों ने चुपके से बाहर झांका है। और आंखों को मसलते हुए, अपनी बाहें फैला कर अंगड़ाई ली है। हवा के एक झोंके ने भी उसको हल्का सा धक्का दिया है। ताकि वो फूल अपनी आंखे खोले और दुनिया को देखे। उस हवा के झोंके के साथ उस फूल की महक जब बाबा ने महसूस की तो जैसे वो मनमुख्ध हो गए।

नर्स - सर..! होले से आवाज आई..

बिना कुछ सुने बाबा के शब्द किसी शायर से कम नहीं थे..वो अपने ही अंदाज में बोले..नए जीवन ने जन्म लिया है..एक कली फूल बन गई..

नर्स - जी सर..आपको भी बहुत-बहुत बधाई हो। आपको बेटी हुई है।

उसी उत्सुकता में बाबा जब मुझे खोजते हुए आये। और कमरे के बहार खड़ी नर्स ने उन्हें अंदर आने रोक लिया। तब बाबा के चेहरे पे कुछ क्षण के लिए आयी उदासी उनके मन की प्रसन्नता को कहीं दूर बहुत दूर ले गयी।

नर्स - सर आप यहीं रुके अभी कुछ देर है। इन शब्दों ने बाबा के इतने सालों के इंतज़ार के समय को और पांच गुना बड़ा दिया।

अब तो इतना समय हो गया अभी भी और इन्तेज़ात करूँ ? क्या हुआ सब ठीक है न? पता नहीं क्या हुआ अब। इस चिंता के बीच एक आवाज़ आयी.. आप अंदर जा सकते है। आपकी पत्नी आपका इंतज़ार कर रही है। कितना खिल-खिलाते बाबा माँ के कमरे में आये। ऐसा लगा जैसे किसी बच्चे को उसका पसंदीदा खिलौना मिल गया हो। जैसे किसी बच्चे को पानी से भरी कटोरी में चांद दिख गया हो।

जब मैंने बाबा का स्पर्श पहली बार महसूस किया तो बाबा के हाथो में कपन थी, उनकी आँखों में सतरंगी पानी था। जिसकी कुछ बूंदें मेरे चेहरे पर भी गिरी थी। उनके चेहरे पर खुशी थी और खुशी से ज्यादा सुकून था। बाबा बताते है, जब उन्होंने मुझे पहली बार अपनी गोद में लिया था। तो उन्होंने खुदसे एक वादा किया था। वो अपने बाग़ के इस गुलाब को कभी मुरझाने नहीं देंगे। मैं उनके इतने सालो की बागबानी का नतीजा हूँ। उनके लिए मैं एक ऐसा गुलाब हूँ। जो उनके और माँ के जीवन को महक से भर देगा।

मुझे उस दिन ये पता लगा। बाबा को मेरा इंतज़ार कितनी बेसब्री से था। मैं बेमतलव ही इस बात से डर रही थी। के बाबा को बेटी चाहिए या नहीं?

बाबा ने तो कभी इस बारे में सोचा ही नहीं। उन्हें बेटी चाहिए या बेटा। उन्हें तो हमेशा से सिर्फ मैं ही चाहिए थी। वो हमेशा से सिर्फ मेरा इंतज़ार कर रहे थे। और अब ये इंतज़ार मेरा और बाबा के साथ के सफर का ख़त्म हुआ। मैं उनके सामने उनकी गोद में हूँ।

अपनी बाँहों में संभाले हुए बाबा मुझे एक टक बस देखे जा रहे है...देखे जा रहे है। बिलकुल निशब्द मां के बिस्तर के पास। जिस जगह डॉक्टर ने उनके हाथो में मुझे दिया था। वो तब से उस जगह से एक इंच भी

नहीं हिले। मानो जैसे बूत बन गए है। के कहीं वो हिले और ये पल उनसे छिन गया तो.।

मां - अब बस भी करो मुझे भी तो उसे निहार लेने दो। वो अब कहीं नहीं भागी जा रही.. लाओ मुझे दो। मुझे भी तो हमारी बेटी का चेहरा देख लेने दो।

हमारी बेटी ये शब्द बाबा के लिए उनके पसंदीदा संगीत सा था।

भावुक मन, उत्सुकता से भरा चेहरा, भीगी आंखें , भरे हुए गले के साथ लड़खड़ाते होठो से बाबा ने कहां मेरी गुड़िया। हमारी बिटिया..हमारी बेटी.. मैं पिता बन गया। हमारे घर की रौनक मेरी गोद में है। मेरी एक बेटी है.. सुना तुमने, सुनो.......पुरे हस्पताल में मिठाई बटवाओ। मेरी गुड़िया हुई है।

मां बताती है उस दिन हस्पताल के चौकीदार से ले कर बड़े डॉक्टर तक सबको पता था, मैं हुई हूँ। बाबा ने खुद सबको जा-जा कर ये खुशी बताई थी।

Completed

Chapter 2 - ग्रीष्म ऋतु
(Summer Season) Teenage

दिन ढलते है या गुजर जाते है। ये बात समझने में कितनी मुश्किल हो सकती है। कल ही की बात लगती है, जब बसंत का मौसम आया था। बागो में नए फूल खिले थे, चारों तरफ घर आंगन में इन फूलों की महक बिखरी हुई थी। भीनी सी धूप थी, भीनी सी ठंड थी। स्वादिष्ट मौसमी सब्जियां थी, भीनी-भीनी बारिश थी। नए साल के त्यौहार भी थे, रंगों भरी होली थी।

ऐसे ही एक बसंत को मैंने ये दुनिया पहली बार देखी थी। बाबा कहते है वो सालों के इंतेज़ार के बाद पहली बार पिता बने थे। मां ने पहली बार उनके बैचैन होने पर गुस्सा नहीं किया था।

Chapter 2

ये दिन भी कितनी जल्दी गुजर जाते है न.! बचपन तो जैसे कल ही की बात थी। और अब देखो मैं 13 साल की हो गयी हूँ। बचपन से बाबा का हाथ थाम कर चलने वाली। आज अपनी नई साईकिल पर अकेले स्कूल जाती है। और तो और घर का कितना सारा काम भी खुद ही करती है।

अभी-अभी बसंत ख़त्म हुआ है। मेरे पेपर भी ख़त्म हो गए है। होली में मैंने और मेरे सभी दोस्तों ने मिलके बहुत सारी मस्ती की। बाबा को रंग लगाने के चक्कर में मैंने पुरे घर को सतरंगी कर दिया। वो तो भगवान का धन्य है, मेरे पेपर थे होली के बाद। तो मैं मां की डांट से बच गयी..और उनकी मार से भी।

मां कभी-कभी गुस्से में हाथ उठा देती है। पर बाबा..बाबा हमेशा सिर्फ लाड़ करते है। और बहुत सारा प्यार करते है। बस जब मैं पेपर के समय ज्यादा खेलती हूँ। तो थोड़ा सा यानी हल्का सा, मां को दिखाने के लिए गुस्सा करते है। और बहुत सारा समझाते है। कभी-कभी तो खुद ही पढ़ाने बैठ जाते है।

पर अब..अब तो मैं शरारत कर सकती हूँ। अब मुझे कोई नहीं रोकेगा मेरे सारे पेपर ख़त्म हो चुके है। और गर्मी की छुट्टी भी लग गयी है। अब तो मेरी मोज़ ही मोज़ है।

मैं तो इस गर्मी, खुद से..बाबा की मदद के बिना साईकिल चलाना भी सीख गई हूँ। अब तो मैं अकेले कहीं भी आ-जा सकती हूँ। कुछ भी काम कर सकती हूँ। मुझे अब बाबा की इतनी जरूरत नहीं पड़ती।

अब मैं खुल कर बाहें फैला कर हवाओं में उड़ती हूँ। बागों को उनके सही रस्ते का पता बताती हूँ। तितलियों को उनके पंखो पर सही रंग भरना सिखाती हूँ। भौरों को फूलों से रस पीना सिखाती हूँ। और कलियों को फूलों की तरह खिलना भी सिखाती हूँ। खुशबू को हर तरफ बिखरना सिखाती हूँ। हवा को हर दिशा में दूर तलक बहना सिखाती हूँ। पेड़ों को ऊपर और ऊपर आसमान तक बढ़ना, नदी को दूर समुन्दर तक बहना, सूरज को सही दिशा से निकलना, तारों को ठीक से टिमटिमाना सिखाती हूँ। और चांद को देख कर इतराती हूँ। इतनी सुन्दर, इतनी समझदार हूँ मैं।

बाबा कहते है। मैं बहुत सयानी हो गई हूँ। और जिम्मेदार भी..और बहुत सुन्दर भी, बिल्कुल मां की तरह। मेरे बालों में किसी झरने से ज्यादा लहर है। ये मेरी आंखें समुन्दर से भी गहरी है। और ये गुलाब की पत्तियां.. क्या ही कोमल होगी.! सब कुछ अच्छा है मुझमें। मैंने कल ही मां को बताया के मेरे होठों के ऊपर ठीक मेरी नाक के पास एक तिल भी है। जो मुझे और भी ज्यादा खूबसूरत बनाता है। पर माँ कहती है, जीवन जीने का सलीका सिर्फ खूबसूरत दिखना नहीं होता। सादगी भी खूबसूरती का एक बहुत सुन्दर रूप है। मैं जितनी सादा रहूँगी उतनी और ज्यादा खूबसूरत लगूंगी।

पर मां तो बहुत पुराने ख्यालों की है न। उनके समय में इतना सब होता भी तो नहीं था। उनको क्या पता खूबसूरती क्या होती है। अब बाबा को ही देख लो। वो तो मुझे कभी नहीं रोकते-टोकते बनने-सबरने से। बाबा

तो मां को भी कभी-कभी डांट देते है मेरे लिए। वो कहते है, यही तो उम्र है बनने-सबरने की। बेटियां सजी-सबरी अच्छी लगती है। उनकी सुंदरता से पूरा घर सुन्दर लगने लगता है।

जैसे पहली बसंत में खिले फूल की खुसबू, दूर कहीं पहाड़ों से बहती हवा, जब कई नदियों को छू कर गुजरती..तो उसकी शीतलता और भी बढ़ जाती। वैसे-जैसे तिल में मिल जाने से गुड़ की मिठास और बढ़ जाती है। पायलों की छन-छन से एक मधुर ताल छिड़ जाती है। भौरों के पास आने से जब कली खुदमें इतराती है। तितलियां जैसे इंद्रधनुष से रंग चुन कर लती है। पतझड़ की पत्तियों से जो चर-चर आवाज़ आती है। कोयल की कूक से जो मधुर आवाज़ आती है। जैसे सूरज की किरण ठंड में राहत देती है। पीपल की छाओं तपती दुपहरी में ठंडक देती है। हर फल का स्वाद मीठा लगता है। जैसे बेलें बगीचे से निकल कर खिड़कियों में चढ़ जाती है। वो दिवार का सहारा ले पुरे आंगन को सजाती है। वैसे ही बेटियां भी घर को घर बनाती है।

बस बाबा की यही एक बात सुन मैं इतना इतराती हूँ। आसमान को छूने पंख फैला उड़ जाती हूँ। और मैं अपने घर की सबसे अच्छी बेटी कहलाती हूँ।

पिछली बार जब गलती से मुझसे छत पर रखा गमला टूट गया था। मां ने कितना डांटा था मुझे। और तो और कान पकड़ कर सीढ़ियों से मुझे बैठक तक लाई थी। इतना गुस्सा हुई थी वो मुझ पर। जैसे मैंने कोई गमला नहीं छत गिरा दी हो। उस दिन गुस्से में मां ने मुझसे खाना खाने तक को नहीं कहां था। उन्होंने अकेले ही खा लिया था। कितना रोई थी मैं अपने कमरे में अकेले बैठ कर। और वो मुझे चुप तक कराने नहीं आयी थी। मेरी आँखों के नीचे बड़े-बड़े काले गढ्ढे पड़ गए थे। पूरा

काजल फ़ैल गया था। पर मां उनको थोड़ा सा भी एहसास नहीं हुआ, के मैं मन से कितनी दुखी हूँ। मुझे कितनी चोट लगी होगी।

मैंने सोच लिया था। मैं अब माँ से कभी बात नहीं करूंगी। न ही उन्हें अपनी कोई भी बात बताऊंगी। मैं जब बड़ी हो जाऊंगी न और पढ़ने के लिए यहाँ से दूर चली जाऊंगी। तब मैं मां को वहां से फ़ोन नहीं करुँगी, और न ही उनके लिए कुछ बाजार से ले कर आऊंगी। जब बाबा आएंगे न घर दफ्तर से, तो मैं उनसे माँ की शिकायत करूंगी। उन्होंने मुझे खाना भी नहीं दिया। वो बाबा के पीछे मुझे कितना डांटती है। मुझपे कितना गुस्सा करती है। मैं सब बाबा को बताऊंगी। मेरी कट्टी आज से माँ के साथ।

बाबा - ये क्या सुन रहा हूँ मैं..! मेरी गुड़िया ने आज खाना नहीं खाया.. क्यों ?

हाँ नहीं खाया और अब से मैं इस घर का खाना खाऊंगी भी नहीं। इतना डांटती है माँ मुझे आपके न होने पर। हर बात पे गुस्सा, अब मैं कोई बच्ची थोड़ी हूँ। बड़ी हो गई हूँ, अपना काम खुद करती हूँ। अब मैं अपने दोस्तों के साथ घूमने भी न जाऊं? मस्ती भी न करूँ? मुझे खेलने भी नहीं देती किसी के साथ। वो गोलू को भी आज घर से जाने को बोल दिया। एक गमला ही तो टूटा था मुझसे। उसके सामने माँ ने मेरे कान पकडे, मुझे डांटा।

बाबा - अच्छा जी तो मामला सबके सामने डांट पड़ने का है। दोस्तों के सामने डांटा आज माँ ने। पर गुड़िया अब जब आप बड़ी हो गयी हो तो फिर इन बच्चों के साथ खेलना क्यों है?

आप माँ की तरफ से बोल रहे है न..आपको भी लगता है के माँ सही है। मैंने ही गलती होगी..आप भी जाओ यहाँ से मुझे आपसे भी बात

नहीं करनी। आप दोनों मुझे नहीं समझते। मेरे इतने अच्छे दोस्त है सब। पता आपको जब मैं उनके घर जाती हूँ तो उनके माँ बाबा मेरा बहुत ख्याल रखते है। हमको कभी खेलने से मना नहीं करते। और तो और अपने साथ बैठ के खाना भी खिलाते है। कभी बाहर से कुछ खाने को मंगाए तो मेरे लिए भी मंगाते है। पर अपने यहाँ तो माँ उन्हें कभी-कभी पानी तक के लिए भी नहीं पूछती। ऊपर से उनको डांट भी देती है। कभी-कभी तो उनके सामने मुझे भी डांट लगा देती है। और आज तो मार भी लगाई।

वो सब मेरा कितना मज़ाक बना रहे होंगे न। सब हस रहे होंगे मुझ पर। बाबा अब मेरी गलती नहीं है न.. मैं सबसे इतनी छोटी हूँ। मेरी उम्र का तो गली में कोई नहीं है। अब जो लोग मेरे साथ खेलते है, मैं उनके साथ भी नहीं खेलूं? आप बताओ.? माँ को तो हर किसी से शिकायत रहती है।

बाबा - अरे..इतनी सारी परेशानियां सुनने में और इनका हल निकालने में थोड़ा सा समय ज्यादा लगेगा। चलो अभी इस बात को कुछ देर के लिए छोड़ देते है। पहले बाबा को बहुत भूख लगी है तो कुछ खा लेते है। फिर कल दफ्तर की छुट्टी भी है। तो आराम से बैठ कर अपनी गुड़िया की सब परेशानियों का हल निकालते है। पर पहले खाना खा लेते है। नहीं तो... एक और काम भी कर सकते है। एक चहरे से हसी गायब हो गयी है। उसको वापस लाने के लिए क्या किया जाये? हम्म.....खाने के बाद कुछ मीठा खाया जाए? और जानती हो सुना है पास के नुक्कड़ में एक बहुप्रशिद्ध मीठे की दुकान है। जहाँ बहुत स्वादिस्ट छेने मिलते है, क्या इरादा है चले खाने।

बाबा आपको मीठा खाना मना है।

बाबा - हाँ है तो.. पर अब क्या करें पहले मेरी गुड़िया के चहरे की हसी देख कर मीठे की कमी पूरी हो जाती थी। अब जब वो हसी ही गायब है तो उसे वापिस लाने के लिए एक दो पीस छेना तो खा ही सकता हूँ। तुम माँ की चिंता मत करो उनसे मैं बात करता हूँ। तुम ऐसे हस्ती रहा करो..ठीक है..?

बाबा बहुत अच्छे है। मैं बाबा से कुछ भी कह सकती हूँ। अब तो बहुत बार बाबा से चुपके से, माँ से बच कर..माँ की भी चुगली कर लेती हूँ। और बाबा माँ को बताते भी नहीं। वैसे माँ भी कम ही गुस्सा करती है अब। और कभी मुझपे गुस्सा करती भी है। तो मैं उस रोज़ खाना नहीं खाती, न ही उन से बात करती हूँ। फिर जब बाबा शाम को घर आते है। तब वो मुझे मनाते है। फिर माँ को भी थोड़ा सा डांट लगाते है। बाबा मेरे सबसे अच्छे दोस्त है। वो मुझे पैसे देते समय भी हिसाब नहीं पूछते। पर माँ इनको तो सब जानना होता है। जैसे मैं कोई बच्ची हूँ। जो हिसाब-किताब नहीं जानती। या कोई मुझे ठग लेगा। माँ को तो मैं हमेशा ही बच्ची लगती हूँ।

ऐसे में माँ बाबा को भी अपने साथ मिला लेती है। पता नहीं क्यों.? यहां-वहां की सारी बातें बता देती है। मेरी शिकायतें भी लगा देती है। स्कूल में हुए झगड़े की कहानी बाबा को बताने की जरूरत थी क्या? या ये बताने की के मैं बचपन की तरह अभी भी कभी-कभी मिट्टी खा लेती हूँ? या ये बताने की के कल शाम में पास के लड़कों के साथ साईकिल चला रही थी। अगर मैंने घर के बाहर खड़े ठेले से चाट खा भी ली तो क्या .? अपने पैसों की खाई न। बस एक ही टी-शर्ट तो थोड़ी सी छोटी ली थी। आज-कल तो सब चलता है। सब पहनते है ऐसे कपडे। मैं अकेली थोड़ा हूँ। फिर अगर किसी ने गुलाब का एक फूल मझे दे भी दिया तो क्या.? माँ को तो कुछ बताना ही नहीं चाहिए था। किसी से बात

करना कोई बुरी बात होती है क्या? सब दोस्त ही तो है मेरे.. पर माँ को तो चाहिए के मैं उनकी तरह न दोस्त बनाऊं न कहीं बाहर जाऊं। और न ही किसी से बात करूँ। बस ऐसे ही घुसी रहूं घर के अंदर। और अब तो बाबा भी माँ की तरफ रहते है। उन्होंने भी मेरे आने-जाने का समय तय कर दिया है। बाबा भी माँ की बातों में आ गए। अब तो मुझसे पैसों का भी हिसाब पूछते है। कहते है.! जो खाना है घर के अंदर ला के खाओ। पर चाट तो गरमा-गरम ही अच्छी लगती है न। कहते है.! खाली समय में मां के साथ खाना बनाना सीखो। ऐसे जैसे मुझे यही करना हो।

मैं तो बहुत जल्दी यहां से बाहर पढ़ने चली जाऊंगी। अपने सभी दोस्तों की तरह। जैसे पास वाले अंकल का बेटा गया है। मैं भी माँ बाबा से दूर शहर जाऊँगी। फिर अपनी मर्ज़ी से जीऊँगी। बिना किसी रोक-टोक के। अब मेरी कोई उम्र थोड़ी है ये सब सुनने की। यहाँ मत जाओ, ये मत करो , इससे बात मत करो , उससे दोस्ती मत करो , बेफिजूल खर्ची मत करो , इतने छोटे कपडे मत पहनो, बाहर मत खाओ , ये नहीं..वो नहीं..हद्द है। जब मैं खुद कमाने लगूंगी न तब खूब मोज़ करुँगी। बहुत सारे दोस्त बनाऊंगी और उनके साथ बहुत घूमूंगी। पूरी दुनिया देखूंगी।

माँ बाबा के पास तो मेरे लिए समय ही नहीं रहता। माँ सारा दिन अपने काम में लगी रहती है। और बाबा पूरा दिन दफ्तर में रहते है। फिर एक रविवार मिलता है उसमें भी बाबा सारा दिन बाग़ सवारने में और घर की देख-भाल करने में निकाल देते है। माँ को तो रसोई से ही फुर्सत नहीं मिलती। बस सारा दिन घर में बगीचे और खाने की बात होती रहती है। हम कितने सालों से तो एक साथ फिल्म तक देखने नहीं गए। जब मैं छोटी थी तो हर महीने हम एक दो फिल्म देखने तो जाते ही थे। पर अब बाबा कहते है मुझे बागबानी सीखनी चाहिए और माँ कहती है

मुझे अच्छा खाना बनाना तो आना ही चाहिए। माँ कहती है घर के काम पर ध्यान दिया करो। बाबा कहते है पढाई भी किया करों। पढ लिख कर बाबा के जैसे बड़ा अफसर बनना है या नहीं?

सब कुछ बनना है मुझे। वो ऊपर जो आसमान है न वो छूना है। पर ये माँ बाबा को समझाए कोई। उसके लिए दूर शहर जाना पड़ता है। यहां गांव की पढाई से नहीं बनता कोई अफसर। मुझे तो शहर जा कर किसी बड़े कॉलेज में पढाई करनी है। फिर अच्छी सी नौकरी भी तो आसानी से मिल जाएगी। कितनी कोशिश की मैंने समझाने की, पर दोनों मानते ही नहीं। कहते है उनसे दूर मैं अकेले कैसे रहूँगी..? जैसे सब रहते है वैसे और क्या।

एक पूरा दिन बात नहीं की थी मैंने बाबा से और माँ से भी.. न ही कुछ खाया था। तब जा कर माने है दोनों, मुझे बाहर भेजने के लिए। इतना भी दुखी कौन होता है..इतनी सी बात पे। मैं कौन सा हमेशा के लिए जा रही हूँ। अभी कुछ सालों में बापिस आ जाऊँगी। फिर मिलने भी तो आती रहूँगी न। रह लूंगी मैं अकेले सबकी तरह। अब मैं 17 साल की हूँ, कोई बच्ची थोड़ी हूँ।

घर के कितने सारे काम खुद कर लेती हूँ। अब तो घर में आधे से ज्यादा मेरी लाई हुई चीज़ें है। माँ तो रासन लेने भी साथ मुझे ही ले कर जाती है। बाबा भी तो कितनी जगह मेरे साथ ही जाते है। अभी कल शाम ही हम दोनों बिजली वाले की दुकान वल्व लेने गए थे। गैस सिलेंडर भी मैं खुद ही भरवा लती हूँ। अब तो बैंक के भी कितने सारे काम खुद ही कर लेती हूँ। जैसे...पैसा जमा करना, निकालना, सब अच्छे से आता है मुझे।

अब बस ये आखिरी गर्मियां है घर पर मेरी माँ और बाबा के साथ। इसके बाद तो ज्यादा दिनों की छुट्टी भी नहीं मिलेगी। स्कूल के सर कह रहे थे। कॉलेज में गर्मी की छुट्टी नहीं होती। बस पेपर के बाद कुछ दिन घर हो आओ, फिर दूसरा सत्र चालू हो जाता है। वहां तो स्कूल के जैसे जाने में देरी भी नहीं कर सकते। जितने दिन मिलेंगे छुट्टी के बस उतने दिनों में ही घर से हो कर बापिस जाना पड़ेगा। पर ठीक है कुछ पाना है तो कुछ खोना भी पड़ता है। वहां से पढ कर जब मैं बड़ी अफसर बन जाऊंगी। तब ये सब बुरा नहीं लगेगा। मां बाबा की तो अभी मेरे बिना रहने की आदत ही नहीं है। इसलिए कुछ दिन उन्हें बुरा लगेगा। पर फिर धीरे-धीरे उनकी मेरे बिना रहने की आदत पड़ जाएगी।

उफ्फ...एक तो पहले बाबा समय पर तैयार होने की आदत डाले। बाबा मेरी ट्रैन छूट जाएगी। फिर कल की ट्रैन मिलेगी मुझे। आप हमेशा इतनी देर करते है। सुबह से 10 बार..फिर से सुने 10 बार... बता चुकी हूँ आपको, सब रख लिया है मैंने। माँ के दिए तीनो बड़े-बड़े घी, लड्डू और मठरी के डब्बे भी रख लिए है। पैसे और बैंक की पासबूक भी रख ली है। कॉलेज की रसीद भी रख ली। ट्रैन की टिकट भी हाथ में है। बस मैं ही नहीं निकली अभी तक, यही हूँ। और जिस तरह से आप देरी कर रहे है न.! मुझे लगता है आपका मन है भी नहीं के मुझे आज की ट्रैन मिले, या मैं जाऊं। माँ अब बस भी करें तीन बार नज़र उतार चुकी है मेरी। मैं कोई तीन साल की बच्ची थोड़ी हूँ। जिसको किसी की भी नज़र लग जाएगी। बाबा चले न अब मुझे जाना है।

एक ज़िद्द के मुझे ये करना है। मैंने सारा घर सर पर उठा लिया था। कितनी खुश थी मैं उस सफर में। ऐसे जैसे मैं किसी ट्रैन की सीट पर नहीं बल्कि बादलों में बैठी हूँ। और हवाओं के साथ आगे शहर की तरफ बढ़ती जा रही हूँ। मेरी नज़र जैसे खिड़की पर ठहर सी गयी थी।

आने-जाने वाली हर गाड़ी मुझसे अलविदा कह रही थी। और मुझे मेरे नए सफर के लिए बधाई दे रही थी। कितनी बड़ी दुनिया है.! ये बात घर से बाहर निकल कर समझ आयी मुझे। बाबा ने कितनी बार कहां था। रात ट्रैन में सो जाओ सुबह तक पहुंचेंगे पर मुझे नींद आये तो आये कैसे। सोचा अगर सो गयी और कोई खूबसूरत नज़ारा पीछे छूट गया तो शहर को जा कर क्या बताऊंगी। कितनी दूर से आयी हूँ।

मन ही मन सब कुछ सोच लिया था मैंने। कैसे क्या करना है। इतनी ख़ुशी के लगा इससे अच्छा और कुछ भी नहीं।

पर जब बाबा को मुझे अकेले अजनबियों के बीच हॉस्टल में छोड़ कर जाते देखा तो आँखें अपने आप भर आई। मैं दौड़ कर हॉस्टल के दरवाजे पर बाबा के गले जा लगी। सबने समझाया मुझे, मैं अब कोई बच्ची थोड़ी हूँ। बड़ी हो गई हूँ.. ऐसे कौन रोता है? बाबा यही थोड़ी रखेंगे साथ। कुछ ने तो भिन-भिनाते हुए हसी भी उड़ाई। ये कहते हुए के इतना ही बाबा से दूर नहीं रहा जा रहा था तो घर ही रहती। किसने कहां था इतनी दूर आने के लिए। लो आ गई एक और पिद्दी बाबा की लाडली। ये बनेंगे कुछ, इन जैसों से कुछ नहीं होना। कुछ दिन यहां रह के बाप का पैसा खर्च करेंगे। फिर रोज शाम रोते-रोते मां बाबा आपकी याद आती है..कह के उदास हो जाएंगे। फिर एक दिन मुझे घर जाना है.. कह कर सारा सामान समेंट कर घर चले जाएंगे। हर साल आते है ऐसे छोटे शहर के तमाशबीन।

मैं सब सुन रही थी और बाबा भी..उनका दिल मुझे इन सबके बीच अकेला छोड़ने के डर से कमजोर हुआ जा रहा था। पर फिर भी मेरे कंधे पर दोनों हाथ रख कर बाबा ने बड़ी हिम्मत से मेरी तरफ देख कर कहा। मेरी गुड़िया इतनी कमजोर थोड़ी है। क्या हुआ अगर कुछ सालों,

हम बैठ कर मां की चुगली नहीं कर पाएंगे। पर यहां रह कर मेरी गुड़िया मुझे बताएगी न के शहर की आबो हवा कैसी है, ऐसा क्या है इस शहर में जो हर कोई इसकी तरफ खींचा चला आता है। ऐसी कौन सी सीख मिलती है यहा। जो हमारे गांव में नहीं मिलती।

अब अगर ये सब जानना है तो तुम्हे यही रहना पड़ेगा न। फिर पढ़ लिख कर जब अफसर बन जाओगी। तो मां बाबा को भी तो अपने पैसों से शहर घुमाओगी न। ये सब करने के लिए हिम्मत से काम लेना। ऐसे रोने से थोड़ा होता है कुछ। ऐसे रोती रहेगी तो आस-पास अपने पसंद के खाने की दुकानें कैसे पता करोगी। चलो अंदर जाओ अब मुझे भी निकलना है। मेरी ट्रेन है..छूट गई तो कल तक किसी होटल में कमरा ले के रहना पड़ेगा। तुम्हारी मां भी घर में अकेली है।

अब हसो जल्दी तुम..तो मैं भी घर जा कर तुम्हारी मां को बताऊंगा के कितनी खुश है उनकी बेटी शहर पहुंच कर। अपना ख्याल रखना, खाना समय पर खाना, और सबसे अच्छे से मिल कर रहना। नए दोस्त बनाना और अच्छे दोस्त बनाना। कुछ भी हो अपनी मां और बाबा से कभी कुछ नहीं छुपाना। ठीक है..और छुट्टियों में घर आना, बाहर जो फोन रखा है। उससे रोज शाम कुछ देर के लिए सही फोन लगा लिया करना ठीक है। और रोज कॉलेज जाना, मन लगा कर पढ़ना ठीक है। अब चलूं मैं.?

बाबा मैं सब जानती हूँ.. क्या करना है। मैं सब अच्छे से कर लूंगी, आप चिंता मत करो। आराम से घर जाओ। घर पहुंच कर फोन जरूर करना। मां से कहना उनकी बेटी बहुत बड़ी हो गई है। उनके बिन रह सकती है। अब जाओ आप ट्रेन छूट जाएगी नहीं तो.. टाटा!

Completed

Chapter 3 - वर्षा ऋतु
(Rainy Season) Adulthood

उम्र है या मौसम.? कितनी रफ़्तार से बदल रहे है। अभी कुछ दिनों पहले तक तो गर्मी थी। और अब ये धुआधार बारिश तो देखो। कितना इंतज़ार था मुझे भी इस बारिशों का। पर अब जब ये इस तरह से बेहिसाब बरस रही है.. तो मन को बेचैन कर रही है। अब जब इन जवानी के दिनों में हूँ। तो समझ आता है के इस उम्र का पढ़ाओ हो या बारिश का मौसम। इसके बारे में बात करना, इसको याद करना और इसके मिलने की बस चाह रखना ही अच्छा है।

Chapter 3

उनके बिना रह सकती हूँ..यही कहा था मैंने जब पहली बार, मैं घर से बाहर निकली थी। जब बाबा मुझे हॉस्टल में छोड़ने आए थे। आज 22 साल की हूँ। पांच साल हो गए है। मुझे यहां शहर में अकेले, कभी हॉस्टल, कभी दोस्तों के साथ एक ही घर में, तो कभी अकेले इस बड़ी सी इमारत के एक छोटे से कमरे में रहते हुए। मैंने हर तरीके से हर जगह रह कर देख लिए है। यहां अपनी मर्जी करने की आजादी तो है। पर घर जैसा सुकून कहीं नहीं है। कितने हॉस्टल बदले शुरुआत में मैंने। फिर सोचा के दोस्तों के साथ रहते है, किसी घर या फ्लैट को किराए से ले कर। पर वहां भी सब बिखरा-बिखरा ही रहा। फिर सोचा अकेले रह कर देखती हूँ। लेकिन यहां भी सुकून नहीं है। हां पर सिमटा सा लगता है सब। कम से कम यहां बिखरेपन की बेचैनी तो नहीं है।

जब यहां आई थी तो सोच था के सारा शहर घूमूंगी। लेकिन पहले पढ़ाई की वजह से समय नहीं मिला और अब..अब ये नौकरी की मार है। पहले तो पेपर के बाद की छुट्टियों में घर जाना हो जाता था। लेकिन अब..अब तो साल बीत गया है घर गए हुए। दिवाली की छुट्टियां भी पता ही नहीं चलती, कब आती है..चली जाती है। एक तो इतनी दूर आ वसी हूँ। घर जाने में समय भी इतना लगता है। पहले लगता था लोग गांव में क्यों रहते है। यहां शहर में तो कितना कुछ है। सब यहीं क्यों नहीं आ जाते। पर अब समझ आता है। शहर में सब कुछ है सिवाय समय और अपनेपन के।

गांव की तंग गलियां जो मुझे गुस्सा दिलाती थी। आज शहर की वैसी ही तंग गलियों से रोज गुजरती हूँ। बस गांव में वो तंग गलियां भी खाली होती थी। और यहां...यहां उन गलियों से गुजरना भी एक कला है।

बारिश का मौसम है। इस साल नौकरी में जाते-जाते पता ही नहीं चला कब बसंत निकल गया। कब होली निकल गई। अब तो गर्मियों की छुट्टियां भी नहीं मिलती..बाबा के साथ शाम कुल्फी खाने का भी ख्याल दिमाग से निकल गया है। इस साल मां के हाथो का बना स्वादिष्ट आम रस की भी याद नहीं आई। बताओ कितना कुछ और है जो याद नहीं है। सब भूल गई हूँ मैं। दफ्तर के साथी सही कहते है। बड़ी हो गई हूँ मैं।

कितनी सुंदर बारिश है.! इसकी एक बात बहुत आम सी है। बारिश चाहे गांव की हो या शहर की। कितना भी शोर क्यों न हो, पानी की एक-एक बूंद की आवाज साफ-साफ सुनाई देती है। यहां भी गांव की तरह ही छतों से, छप्परों से, सड़कों से, गली-नालो से, पेड़-पौधों की पत्तियों से टिप-टिप करते, झर-झर बहते पानी की आवाज सुनाई दे जाती है। और तो और कई जगहों पर भरता, इकट्ठा होता पानी गांव की याद दिल ही देता है। कितना कीचड़ हो जाता था वहां सड़कों पे। और यहां कीचड़ तो नहीं होता। पर हां हर जगह सड़कों पे चौराहों पे एक छोटा सा तालाब जरूरी बन जाता है।

कितने प्यारे दिन होते थे बचपन की बारिश के। कितनी सामान्यतः है न इन बारिशों और इस उम्र में। मैं 22 साल की हूँ। जब से कॉलेज से निकली हूँ, तब से ही बारिश और अपने बीच कई सारी समानताएं देखती और समझती आ रही हूँ। जैसे तेज रफ्तार बारिश में आगे का रास्ता साफ नजर नहीं आता। वैसे ही मुझे भी कभी-कभी जीवन की

इस दौड़ में रास्ते साफ समझ नहीं आते। न ही ये समझ आता है के इस धुंध भरे रास्ते पर चल कर कहीं फस गई तो। इतनी तेज बारिश में मैं रास्ते पर आराम-आराम से चलती जाऊं और आगे जा के पता चले के उस रास्ते की कोई मंजिल ही नहीं है। वो तो कहीं दूर अंधेरे में जा कर जंगलों के बीच एक कच्ची सड़क में खत्म हो गया है। जहां सामने एक बड़ी सी दीवार बनी है। और उसमें लिखा है रास्ता समाप्त।

अब इस तूफान सी बारिश में वापिसी हो तो कैसे? कितना फसा सा महसूस होता है मन में। न उस जगह सून-सान में आधी रात रुका जाता है। और न ही वापिसी की जा सकती है। ये उम्र भी तो ऐसी ही है न.! कितने बड़े-बड़े फैसले लेने होते है, और कुछ समझ भी नहीं आता।जिस रास्ते पर जा रहे है.. उसकी कोई मंजिल है भी या नहीं।

जैसे ये बारिश बिना बात जरा सी धूप जरा सी छांव में बरस जाती है। जैसे पहाड़ों से जंगलों से तेज बारिश होने पर झरने फूट पड़ते है। वैसे ही मैं भी कभी-कभी दिल भर जाने पर रो पड़ती हूँ। मेरी आँखें अपने आप ही नम हो जाती है। और आंसुओं की तेज धार बिल्कुल किसी तेज बहाओं सी नदी की तरह सारे एहसास कुछ देर के लिए ही सही अपने साथ वहां ले जाती है। इन बारिशों को भी तो सही गलत का पता नहीं रहता। जैसे मुझे इस उम्र में कुछ गलत सही समझ नहीं आता। बस एक बेहिसाब बहाओं है जीवन का जो बहता जाएगा। पर मुझे इस बहाओं से एक नया रास्ता बनाना है।

लेकिन एक बात अच्छी है इस उम्र में। मुझे दुख-सुख के बीच का अंतर समझ आ रहा है। पर इतना समझने के बाद भी..कभी-कभी समझ ही नहीं पाती। दुखी हूँ तो किस बात पे.! खुश हूँ तो क्यों.? और जब बाबा पूछते है पूरे दिन का हाल.. तो उनसे कुछ कह ही नहीं पाती। मां को

भी कितनी बार झूठ कहां है मैंने, के सब ठीक है। पर मां सब समझती है। कहती है मैं बड़ी हो गई हूँ। झूठ बोलना अच्छे से सीख गई हूँ। जिंदगी की इस भाग दौड़ में अपने हिस्से के दुःख समेंटना मुझे आने लगा है। बाबा ने भी यही कहां है। मैं मौसमों को और जिंदगी को उनकी तरह देखना सीख गई हूँ।

जैसे कई बार बारिश इतना बरस लेती है के लोग सब भूल जाते है। वैसे ही मैं भी बीते सारे मौसम भूलने लगी हूँ। हर रोज मां बाबा फोन पर याद दिलाते है। बेटा इन बारिशों का अलसी मज़ा अदरक की कड़क चाय और प्याज के बने गरमा-गरम पकोड़ों के साथ आता है। पर यहां ये सब बनाने वाला कौन है। मैं बना भी लूं ये सब तो इसका सारा सामान इकट्ठा करना पड़ेगा। इतनी मेंहनत के बाद भी पकोड़े गरमा-गरम नहीं खा पाऊंगी। न ही उनमें मां बाबा के साथ मस्ती से खाने वाला स्वाद ला पाऊंगी।

जब घर में रहती थी, तो बाबा पीछे दौड़-दौड़ कर मुंह तक निवाला लाते थे। और मां गरमा-गरम खाना बना कर खिलाती थी। एक निवाला भी कम खाऊं तो दोनों परेशान हो जाते थे। अब देखो दिन निकल जाता है। खाने का डब्बा कितनी बार जैसा लेके जाती हूँ। वैसा का वैसा ही वापिस आ जाता है।

शाम होते-होते घर पहुंचते-पहुंचते शरीर भी जवाब दे देता है। जब कमरे का दरवाजा खोलती हूँ तो सामने बिस्तर के अलावा और कहीं नजर नहीं पड़ती। अब तो याद भी नहीं कॉलेज के बाद कब शांति से बैठ कर गरम खाना खाया था। हर रोज मां बाबा से झूठ बोलती हूँ के पेट भरा हुआ है। या फिर उनका मन बहलाने को ये कह देती हूँ। आप लोग जो मजे से खाते हो..ये तेल, चिकनई से बनी हुई चीजें, वो शरीर

को नुकसान पहुंचाती है। पर मैं सच उनसे कह नहीं सकती के मन ही मन मुंह में पानी आ रहा है। मन बिजली से भी ज्यादा तेज रफ्तार से उन दिनों की तरह भागा जा रहा है। जहां आप दोनों के साथ बैठ कर ये पकवान खाती थी।

इतनी समझदार हो गई हूँ। पर फिर भी ये समझ नहीं आता। आपसे कैसे कहूँ के आज खाने में मन की सब्जी नहीं थीं। रोटी भी कच्ची रह गई थी। और अचार का तो पूछो ही मत। बाजार का वो बिना स्वाद वाला आचार जिसमें ढेर सारा पानी मिला कर उसको और वे स्वाद कर देते है। और सलाद.. सलाद के पैसे अलग से देने पड़ते है। उसमें भी ताजी सलाद खाने को नहीं मिलती। कल बड़ी मुश्किल से ताजे फल मिले है, पर इतने महंगे थे, तो ज्यादा नहीं लिए।

वैसे बाबा को ये भी बताना था। गांव में जो बेर हम पीछे गुप्ता जी के बगीचे से तोड़ कर ढेर सारे खा लिया करते थे न। वो तो यहां देखने को भी नहीं मिलते। और इमली की कीमत तो कहने में शर्म आ जाए। मां के हाथ की बनी कैथे की चटनी का स्वाद भूलने लगी हूँ। खाने में अब तो सब्जी रोटी डाल चावल ही समझ आता है। दिन सारा दफ्तर में निकल जाता है। और शाम कमरे की सफाई में। रात होते-होते तो कल दफ्तर जाने की चिंता सताने लगती है।

बस मां बाबा के साथ बात का समय ही अच्छा होता है। पर उसमें भी कितना कुछ छुपाना पड़ता है, झूठ बोलना पड़ता है। क्या कहना है क्या नहीं ये सब याद रखना। आधा ध्यान तो इसी बात पर रहता है। इतनी उलझनों के बीच मां से उनकी दवाई का तो पूछा ही नहीं। और न ही बाबा से, उनके दफ्तर की चर्चा हुई। उन्होंने अपने चश्मे का नंबर दिखवाया या नहीं? क्या करती हूँ मैं भी। जो सबसे ज्यादा जरूरी था..,

वही याद नहीं रहता। अब तो बचपन की यादें भी मन में धुंधली हो गई है। जैसे इस खिड़की पे पड़े पानी से बनी ओश की वजह से उस तरफ का नजारा धुंधला हो गया है।

इस मौसम की तो खबरें भी डरा देती है। बाबा ने बताया के पास गांव में बाढ़ आई है। बहुत नुकसान हुआ। सब मिल कर हालात पर काबू पाने की कोशिश कर रहे है। बाबा का फोन रखते ही दिमाग में अजीब सा ख्याल आया।

सोचा के इस उम्र में भी तो हादसे ज्यादा होते है। व्यक्ति हर तरह का नुकसान इसी उम्र इसी मौसम में उठाता है। फिर पूरा साल पूरी जिंदगी उस नुकसान की भरपाई करता रहता है। और जो भरपाई नहीं कर पाते वो पीछे छूट जाते है। कितना बेचैन कर देने वाला दृश्य है। बूंदों में नमी है, और आसमान में कड़कड़ाती बिजली। दोनों में ही बढ़िया संतुलन बना हुआ है। इनमें से किसी एक ने भी गड़बड़ की तो भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

ऐसा ही ताल मेंल बनाने की कोशिश मैं हर रोज करती हूँ। मुझे यहां नौकरी करते हुए 4 साल हो गए। न उम्र का पता चला न ही समय का। और पता चले भी कैसे रोज एक साइकिल के पहिए की तरह एक ही जैसा तो दिन बिताती हूँ। कभी साल में एक बार कुछ दिनों की छुट्टी ले कर घर चली जाती हूँ। और हर बार वापिस आते समय सोचती हूँ। के नादानी की एक जिद्द अगर बाबा ने पूरी न की होती। तो आज मन में इतना बोझ न होता। मैं उनसे इतना दूर न होती। हम साथ रहते साल के हर मौसम में।

मां गरमा-गरम पकवान बनाती, मैं और बाबा मस्ती से बैठ कर खाते। और यहां-वहां की बहुत सारी बातें करते। मैं चुपके से बाबा से मां की

चुगली भी करती। और बाबा होले से हल्की सी आवाज में मेरी हां में हां मिलाते। फिर हम मां को चिढ़ाते।

खाने के नमक ज्यादा है, थोड़ा कम डाला करो। ये चाय में शक्कर इतनी ज्यादा क्यों है..! आज के खाने में इतना स्वाद नहीं था न बाबा। मां भी बहुत प्यारी है, वो पहले थोड़ा सा चिढ़ती, फिर नाराज़ हो कर अपने काम में लग जाती। और भीन-भिनाने लगती

'हां मुझे कहां कुछ बनाना आता है। तुम बाप बेटी ही तो इतने सालों से सब अच्छा करते आ रहे हो। मैं करती ही क्या हूँ..! सुबह से शाम तक इनकी फरमाइशें पूरी करो। इतनी गर्मी में यहां चूल्हे के सामने बैठ कर रोटी सेंकों, सब्जी बनाओ और इन दोनों को स्वाद नहीं आ रहा। ऐसा है तो खुद ही बना लिया करो दोनों '।

मां कितनी भी नाराज़ क्यों न हो जाए। बाबा उन्हें अपने गानों से बातों से माना ही लेते है। और वो मान भी जाती है। लेकिन कभी-कभी वो गुस्से में बाबा को बहुत डांटती और मुझे घर का काम सिखाने लग जाती। मैं भी कुछ देर उनका गुस्सा देख कर चुप-चाप से काम में लग जाती। और बाबा को आंखों के इशारे से कहती ' बचा लो न बाबा '।

बाबा भी सब समझते है। फिर भी कभी-कभी मां के तेवर देख उनकी तरफ हो जाते है। पहले ये सब समझ नहीं पाती थी। अब जब इन बारिशों में बीते दिनों की याद आती है। तो समझ आता है बचपन से जिसे में चिढ़-चिढ़ समझती थी। वो नोक-झोक असल में प्यार है, अपनापन है। मां बाबा के बीच वो नोक-झोक न होती तो घर-घर नहीं लगता।

हमेशा से शांति चाहती थी मैं। मां की वो चिढ़-चिढ़ हल्ला लगती थी मुझे। और अब उनकी आवाज सुनने तक को तरस जाती हूँ। अपनी

व्यस्तता में अगर कभी उनको फोन न कर पाऊं तो लगता है दिन का कोई जरूरी काम छूट गया है।

अब तो हाल ये है.. के कितनी बार तो मैं जान कर गलती कर देती हूँ जब भी घर जाती हूँ। या फोन पर पकड़े जाने वाला कोई झूठ ही कह देती हूँ। ताकि किसी बहाने से ही सही मां की डांट सुनने को मिल जाए। या वो कुछ समझा ही दें। वो नहीं तो बाबा ही कुछ कह दें। पर दोनों ही आराम से नरमी से बात करते है। वो सब जान जाते है, मैं झूठ कह रही हूँ। फिर भी कुछ नहीं कहते। बस हर फोन को रखते हुए एक ही बात पूछते है। घर कब आओगी.? इस बार आना तो समय निकाल कर आना।

हर रोज उस एक फोन पर मां बाबा की आवाज बताती है। वो कितना कुछ सुनना चाहते है मुझसे। और मैं हर रोज सब बताते-बताते रह जाती हूँ। कभी सोचती हूँ वो परेशान होंगे। कभी सोचती हूँ क्या मतलब है इन सब बातों का। बेमतलब की बातें है, दिन गया बात गई। मां बाबा भी तो कितने परेशान रहते है घर पर अकेले। मां सारे दिन अकेले घर संवारती है, संभालती है। और बाबा बाजार का सारा काम देखते है। दोनों फिर भी एक दूसरे से कोई शिकायत नहीं करते। फिर मैं इस उम्र में इतनी जल्दी हार कैसे मान सकती हूँ।

अभी तो ये मेरे जीवन के संघर्ष की शुरुआत है। बहुत काम करने है। ताकि मां और बाबा को आराम दे सकूं। मैं नहीं करूंगी तो कौन देखेगा ये सब। मां बाबा का तो बेटा-बेटी सब मैं ही हूँ। फिर मैं भी ऐसे उनसे अपनी परेशानियों की शिकायत करने लगूं तो कैसी बेटी कहलाऊंगी। लेकिन मैं ये भी जानती हूँ के बाबा के लिए मैं हमेशा सबसे अच्छी बेटी रहूँगी या उनका सबसे अच्छा बेटा। पर मां कभी-कभी थोड़ी खामियां

गिना देती है। और खामियां गिनाते-गिनाते कहती के जब तुम्हारे बच्चे होंगे तब पता चलेगा। कैसा होता है मां होना।

पहले उनकी इस बात पर मैं हस पड़ती थी। लेकिन अब उम्र के इस पड़ाव में आ कर लगता है मां सच कहती है। शादी होने के बाद जिंदगी बदल जाती है। बिल्कुल इस मौसम की तरह।

जब कच्ची उम्र की नादानी की धूप पर जवानी की बारिश पड़ती है। तो व्यक्ति में नरमी आ ही जाती है। जैसे तेज तपती धूप से झुलसी धरती का बादलों से मिलन हुआ हो। वैसे ही किसी सच्चे अच्छे इंसान का साथ, कच्ची उम्र के बाद आई जवानी को राहत देता है। दिल को नरमी से भर देता है। वैसा ही एक साथ मैंने भी चुना है।

वो बाबा की तरह तो नहीं है। पर मां कहती है किसी के साथ में पिता को ढूंढना..या उसको बिना जाने उसकी क्षमताओं का आकलन करना गलत है। और अगर कोई आदमी अपने साथी में मां ढूंढे तो गुस्सा करना सही है। हम दोनों ने ये तय किया है। हम कभी एक दूसरे में अपने माता-पिता को नहीं ढूंढेंगे। हम जैसे है वैसे ही हमेशा एक दूसरे के साथ रहेंगे। इतनी परेशानियों के बीच जब कभी घर पर किसी से कुछ कह नहीं पाती। तो एक वो ही है जिससे बिना झिझक सब कह देती हूँ। और घंटों उसे बैठ कर सुनती भी रहती हूँ। उसे भी मुझसे बात करना, मिलना मेरा हाथ थाम कर मुझे मेरे कमरे तक छोड़ना अच्छा लगता है। उसके साथ जिंदगी किसी सुंदर बगीचे जैसी है। जिसे बारिश ने अपनी बूंदों से सींचा है। बहुत दिनों से सोचती रहती हूँ। हिम्मत करके किसी दिन मां बाबा से कह ही दूं इनके बारे में। कह दूं कोई है जिसमें मैंने अपनी खुशी ढूंढ ली है।

बहुत दिनों से मां भी इशारों में कहने की कोशिश कर रही है। बहाने से मुझे मेरे उम्र के साथियों की शादी की तारीख बता रही है। किसके कितने बच्चे हुए, किसकी कहां बात चल रही है, कौन अपनी नौकरी छोड़ कर घर आ गया है। ताकि उसके घर वाले उसकी शादी कर पाए। मैं भी जानती सब हूँ। वो क्या कहना चाहती है। पर बाबा के डर से चुप हो जाती है। पीछे से बाबा जब उनकी कमर पर उंगली लगा कर, हल्के से हम्म..बस करो कहते है। तब मां यहां-वहां की बातें करने लगती है। कभी-कभी उनकी बातें सुन डर जाती हूँ। लगता है उन्होंने कोई मेरे लिए देख रखा है। अगर ऐसा हुआ तो मैं उनकी बात कैसे काट पाऊंगी। मुझे कोई अच्छा सा मौका देख अपनी बात कह देनी चाहिए। इतनी उलझने है प्रभु एक ये भी बढ़ गई।

तेज बारिश हो रही है, खिड़की दरवाजे बंद है। फिर भी बारिश के पानी की आवाज अंदर तक आ रही है। कितना गहरा अंधेरा है। बाबा भी इतनी दूर गांव में बैठ कर शहर की खबरें देख-देख कर परेशान होते है। सुबह से पांच बार फोन कर के कह चुके है, अपना ख्याल रखना।

इतनी बार बाबा का फोन आने पर मैंने भी धीरे से अपनी बात कह ही दी। बाबा को कहा के कितना परेशान होते है आप इतनी दूर बैठ कर। कोई मेरे लिए इसी शहर का अपने जैसा ढूंढ क्यों नहीं लेते। उसी के साथ कर दे मुझे तो आपकी एक परेशानी कम हो जाएगी। बाबा भी हस कर बोले.. इतनी दूर शहर का.! भाई मै कहां से ढूंढूं.? तुम यहां आ जाओ यहीं का कोई अच्छा सा देख लेते है। वो भी तुम्हारा मन हो तो.. बाकी तुम कोई परेशानी थोड़ी हो मेरी। बाबा को तो तुम्हारी फिक्र करने की आदत तब से है। जब से तुम इस दुनिया में आई भी नहीं थी। जब बाबा को पता भी नहीं था के तुम आने वाली हो।

मैं भी थोड़ा झिझकी फिर लंबी सांस ले कर तेज बारिश की आवाज का फायदा उठा कर सब बोल दिया। सब कुछ एक सांस में कह देने के बाद। जब मैंने दूसरी सांस ली तब तक बाबा ने ख़ामोशी की चादर को इस तरह ओढ़ लिया था के बाहर की तूफानी बारिश का शोर भी मुझे सुनाई नहीं दिया। फोन के उस तरह से कोई आवाज नहीं आई।

कुछ देर बाद सारी हिम्मत जुटा कर.., मैंने अगली सांस लेते हुए., आवाज दी बाबा....उस तरफ से मां ने कहां बेटा घर आ जा. कुछ दिनों के लिए, फिर बात करते है। बारिश बहुत तेज है साफ-साफ कुछ सुनाई नहीं देगा। तुम खाना खा कर सो जाओ। मुझे भी तुम्हारे बाबा के लिए रोटी बनानी है।

जितनी नरमी इस समय धरती पर है। उतनी सारी इकट्ठी करके मैं घर को निकली। ये पहली बार था जब शहर से गांव का सफर बहुत लंबा तो था ही पर बेचैनी भरा भी था। कितने सारे सवाल होंगे, किस-किस का क्या जवाब दूंगी मैं। बाबा को तो सब समझा सकती हूँ। पर मां उनको क्या कहूँगी.? वो तो वैसे भी मुझे अभी भी छोटी सी बच्ची ही मानती है। उन्हें पता नहीं मैं कब बड़ी लगूंगी। अब तो मैं 24 साल की हो गई हूँ। इतनी उम्र में तो मैं अपने जीवन के फैसले ले ही सकती हूँ। अपना अच्छा बुरा समझ सकती हूँ। पता नहीं क्या सोचते होंगे मां बाबा भी।

आप लोग गांव के है न। ये सब तो आपको अजीब लगेगा ही। एक वहां शहर में देखो मैं उसके पूरे परिवार से मिल चुकी हूँ। सबको मैं पसंद हूँ। सब मुझे बहुत प्यार करते है। वो अच्छे लोग है बाबा सच में मेरा बहुत ख्याल रखते है। कितनी बार तो जब मैं जल्दी-जल्दी में खाना

नहीं बना पाती। तो वो मेरे लिए घर से खाना तक भेजते है। आप एक बार उसने मिल ले न..वो सब आपको बहुत पसंद आयेंगे।

खुशियों के दिन है। पर ज्यादा खुश हो लूं तो इन्हें अपनी ही नजर लग जाती है। यहां मैं अपने गांव आ कर जब बारिश में घर से निकली। तो सड़क पर एक बच्चे की बहती कागज की कस्ती देख, अपने बचपन में खो गई। वो घर का बगीचा, गुलाब की पंखुड़ियों में ठहरी पानी की बूंदें, बाबा के हाथो का भूंजा भुट्टा हम्म...नींबू नमक से लिपटा हुआ। वो मीठे-मीठे ताजा घर के बगीचे के जामुन। बड़े दिनों बाद इतना सुकून का दिन बीता है।

पर बाबा..वो मानने को तैयार ही नहीं है। इतना ही बस बहुत है मेरे लिए। मां से रसोई में मसाले के डब्बों का पता पूछ रहे है। और चाय की तपेली का भी। इतने दिनों बाद बाबा के हाथो की बनी चाय, मुझे तो लगा था बाबा बहुत नाराज़ होंगे। पर अब लगता है सब ठीक है।

सब ठीक ही तो है। मेरी आंखों से एक पट्टी उतरी है। जैसे कमरे की खिड़की पर चढ़ी ओस की बूंदों को किसी ने कपड़े से साफ कर दिया है। जिससे बाहर का नजारा साफ-साफ दिखने लगा है। वैसे ही मुझे इन मीठी बातों के पीछे के कच्चे रिश्ते साफ दिख गए है।

मैं एक गलत रिश्ते में जाते-जाते बच गई। मुझे लगता था शहर की चका-चौंध से अलग है मेरा और उसका रिश्ता। पर जब बात जिम्मेदारी की आई तो उसने भी अपना हाथ छुड़ा लिया। अजीब बंधन है शादी भी, मैं उसका साथ चाहूँ। तो अपना सब छोड़ कर उसके साथ चली जाऊं। उसका घर सवारूँ, उसकी सभी जिम्मेदारियों को अपनी जिम्मेदारी समझूं। जो कमा कर लाऊं उसके पूरे परिवार के साथ बाटूं।

और जब वो मेरा साथ मांगे तो मैं उसके साथ खड़ी रहूँ..पर सिर्फ मैं ही क्यों.? सिर्फ मैं क्यों?

मेरी जिम्मेदारियां, मेरा परिवार, मेरा जो कुछ भी कमाया है। वो मेरे मां बाबा का क्यों नहीं हो सकता। और उसकी भी तो जिम्मेदारी बनती है मेरा परिवार संभालने की। बहुत गुस्सा किया था मैंने उसकी इस बात पर। उसने बड़ा मुस्कुराते हुए कहां था। बेटियों का तो यही काम है। फिर मां ने भी यही समझाया के समाज ऐसे ही चलता है। बेटी को सब छोड़ कर एक दिन जाना ही पड़ता है। बेटी की जिम्मेदारिया समाज के प्रती अलग होती है। बेटियां बेटों की तरह जिद्द नहीं कर सकती। लेकिन मां की तो आदत है उन्होंने मुझे सही समझा ही कब है। मैंने भी कह दिया है। जब तक मेरी और उसकी जिम्मेदारी एक नहीं होती। मैं ऐसे ही रहूँगी। यहीं इसी घर में कहीं नहीं जाऊंगी। फिर चाहे मेरी उम्र कितनी ही क्यों न हो जाए।

मैं जिद्द करूं और बाबा मान जाए। अब ये बचपन की बात नहीं रही। जैसे तेज बारिश में धूप के आने से आसमान में इंद्रधनुष का दिखना होता है न। बिल्कुल वैसा ही किसी से धोखा खाने के बाद, जिंदगी में किसी अच्छे इंसान का मिल जाना होता है। पास मोहल्ले की एक दोस्त की शादी में किसी से मिलना हुआ। ज्यादा बात चीत नहीं हुई पर उसके खुले विचारों ने मुझे उसकी तरफ बहुत आकर्षित किया। फिर जब बातों-बातों में मैंने उसे बेटी होने की खामियां गिनाई। तो उसने हस कर मुझे सबके सामने पागल कहा। मैंने भी उसे इस बात पर कम नहीं सुनाई। कहा उसे क्या पता क्या होता है। किसी घर की अकेली बेटी होना। उनको क्या समझ इन सब की..लड़का जो ठहरा। किसी दिन व्याह लायेगा किसी आंगन की कली को उसके बगीचे से।

ज्यादा दिन पुरानी बात नहीं लगती। कुछ दिन पहले ही तो हम मिले थे। और आज मां कहती है, उसका रिश्ता आया है। उसके घर वाले मुझे देखना चाहते है। और वो भी मुझसे मिलना चाहता है। उन्हें पता चला है, बाबा मेरे लिए रिश्ता ढूंढ रहे है। मैंने भी कह दिया रिश्ता नहीं बेटा ढूंढ रहे है। अगर बेटा बन कर मेरा साथ दे सकते हो तो रिश्ता मंजूर है, नहीं तो जाएं वापिस।

बारिश थम गई है। धरती ने बूंदों की सारी नमी सोख ली है। बाग में फूल फिर से खिल उठे है। पेड़ों ने नई पत्तियों को जन्म दिया है। सूरज ने बादलों की चादर हटा चुपके से झांका है। अब तो तारे भी आसमान में साफ नजर आने लगे है। चांद भी बादलों के पीछे से इतराता नहीं है। ऐसे में उसका आना और कहना के सिर्फ बेटी नहीं चाहिए..,बेटा भी बनना है। सिर्फ अपनी जिम्मेदारियां नहीं बांटनी है। तुम्हारी जिम्मेदारियां उठानी भी है।

वैसे तुम्हारे बाबा अच्छा कमा लेते है। पर फिर भी तुम उनका साथ दोगी तो उन्हें चिंता नहीं रहेगी। सिर्फ तुम ही क्यों मेरे घर आ रही। कभी-कभी मैं भी अपने इस घर रहने आ जाया करूंगा। और फिर अकेले मेरे माता-पिता ही सेवा के हकदार थोड़े है। तुम्हारे मां बाबा भी तो मेरे मां बाबा है। अब तुम सोच लो और समझ लो अच्छे से, कहीं कोई ऐसा न आ जाए। जो ले जाए तुम्हे और फिर वापिस भी न आने दे।

मैं डरा नहीं रहा हूँ। बस कह रहा हूँ। दोस्त की तरह साथ निभाते है। तुम मेरे घर की बेटी बनना। मैं तुम्हारे घर का बेटा बन जाता हूँ। क्या अब तुम्हारे साथ जिंदगी के इस सफर पर चल सकता हूँ।

इतना ही अंतर है, नादानी और समझदारी में। जिस घर से मैं कभी दूर नहीं रह सकती थी। आज उस घर से दूर रहते मुझे 13 साल हो गए है। पहले के 10 साल पढ़ाई और नौकरी के लिए घर से दूर रही। और अब मेरी शादी को 3 साल पूरे हो गए है। पहले तो तीज त्यौहार घर जाना हो ही जाता था। पर अब..इन्हीं तीज त्यौहार के लिए अपने घर पर ही रहना पड़ता है। अजीब सफर है जिंदगी का भी पता ही नहीं चलता कब समझदारी नादानी की जगह ले लेती है।

Completed

Chapter 4 - शरद ऋतु (Autumn) Midlife

मेरा घर-मेरा घर करते-करते जीवन के इस बहाओं की तरफ कभी ध्यान ही नहीं गया। बचपन से जिस घर को अपना घर कहती थी। आज मां बाबा का घर कहने लगी हूँ। और ये सुन कर अजीब भी नहीं लगता। जैसे-जैसे समय की धारा आगे बढ़ रही है। मेरा ध्यान, मेरी व्यस्तताएं सब मेरे अपने घर के प्रति बड़ती जा रही है। पहले जिस घर से बाहर निकलने से पहले ही वापिसी का समय तय होता था। आज उसी घर पिछली बार कब गई थी, याद भी नहीं रहता। दिन अब पहले जैसे नहीं रहे, साल बदल गया है, समय बदल गया है। यहां अब खुद के घर के कामों से ही फुर्सत नहीं मिलती।

Chapter 4

सारा दिन इन्हीं बातों को सोचते-सोचते करते-करते गुजर जाता है। रात खाने में क्या बनाऊं, सुबह इनके टिफिन के लिए क्या बनाना सही रहेगा। त्यौहार आने वाले है। घर और आने-जाने वाले रिश्तेदारों के लिए कुछ नाश्ता बना के रख लूं। फिर सासु मां और ससुर जी को भी तो चारों धाम जाना है। उनके लिए भी तो कुछ तैयारी करनी पड़ेगी। आज तो सुबह बर्तन वाली भी नहीं आई। ये बर्तन भी मुझे ही धोने है अभी। अरे.! इतने सब में जरूरी बात हमेशा ही दिमाग से निकल जाती है। इनके पापा की दवाई बाजार से मंगानी थी। देखती हूँ नीचे कोई बच्चा खेल रहा हो तो ला देता।

दवाई का पर्चा...ऊपर के कमरे की दाहिनी तरफ रखी अलमारी में रखा है। अब कौन इतने काम के लिए ऊपर जाए? शाम छत पर कपड़े उठाने जाना है तभी ले आऊंगी। पहले कुछ खा लेती हूँ। सुबह से इन्हीं कामों के चलते नाश्ता भी नहीं कर पाई। अब कौन दरवाजे पर आ गया.? सासू मां और ससुर जी कुछ देर पहले ही तो कीर्तन के लिए निकले है, इतनी जल्दी आ गए.!

हां हां..आ रही हूँ.. थोड़ा रुक जाओ भाई। इतना बेसब्र हो कर तो ये लोग कभी दरवाजा नहीं बजाते। जरूर गली का कोई बच्चा शरारत करने आया होगा। जब से इस मोहल्ले में आए है। तब से ही यहां के बच्चों ने घंटी बजा-बजा कर परेशान कर रखा है। इतने शरारती बच्चे है। इनकी तो मां से भी कुछ कहो तो हस के टाल देती है..

'जी बच्चे ही तो है अभी शरारत नहीं करेंगे तो कब करेंगे जी।'

मैंने तो सोच लिए है। मैं अपनी गुड़िया को इन बच्चों से दूर ही रखूंगी। पता नहीं क्या-क्या करते रहते है ये। उस पर सब बच्चे गुड़िया से बड़े भी है यहां। हमारे पिछले मोहल्ले में अच्छा था। बहुत से बच्चे गुड़िया के साथ ही हुए थे। पर यहां गुड़िया और इन बच्चों की उम्र में बहुत अंतर है। इनके साथ खेलने देना.. मतलब खुद अपने बच्चे को बिगाड़ के रास्ते पे ले जाना है।

कितनी सामान्य बात है मेरे और गुड़िया के बीच। जब मेरा बचपन था तो मां बाबा को भी यही फिक्र रहती थी। कहीं मैं भी उन बड़े शरारती बच्चों की संगत में बिगड़ न जाऊं। तब मैं कुछ समझती ही नहीं थी। आज जब मेरी गुड़िया उसी उम्र में है। तो मां बाबा की रोक-टोक की वजह समझ आती है। समझ आता है के क्यों वो छोटी-छोटी बात पर गुस्सा कर जाते थे।

उनकी याद आती है। पर समय ही नहीं मिलता उनसे मिलने जाने का। यहां तो इतने काम निकल आते है के दिन छोटा पड़ने लगता है। उस पर गुड़िया की पढ़ाई भी तो है। मां बाबा का घर भी तो दूर गांव में है। जाने-आने के लिए ही दो दिन लगते है। उसपर अगर कुछ दिन न रुको तो फिर जाने का मतलब नहीं निकलता। फिर इनकी छुट्टी भी तो नहीं रहती। जो मिलती है वो घर बाहर के कामों में निकल जाती है। अब तो ये भी बड़े अफसर बन गए है। दफ्तर में इनकी जिम्मेदारियां भी बढ़ गई है। गुड़िया भी तो अकेले स्कूल के बाद घर में दादा-दादी के साथ रह लेती है। तो मैंने भी सोचा के कुछ काम मैं भी करने लगूं।

पहले तो थोड़ा सा समय बैठने को मिल भी जाता था। पर जब से काम पर जाने लगी हूँ। तब से तो पूरा दिन बस चलते-चलते निकल जाता है।

उस पर सबके इतने काम भी तो होते है। गुड़िया भी गर्मियों की छुट्टी में नाना-नानी के घर जाने की जिद्द कर रही थी। बच्ची है उसका तो मन होता ही है सबसे मिलने का। मन तो मेरा भी बहुत होता है। मां बाबा से मिलने का, बैठ कर उनसे लंबी बातें करने का। बाबा के हाथ की बनी गरमा-गरम अदरक की चाय पीने का। मां के हाथ की तली पूरियां, भजिए, गुलगुले, गुजिए.. खाने का। ये सब सोचते ही मुंह में पानी आ गया। कितना स्वाद है मां के हाथो में। और एक मुझे देखो इतने सालों से रोज सुबह-शाम खाना बनाती हूँ। पर अभी तक उस स्वाद का एक प्रतिशत भी स्वाद अपने खाने में नहीं ला पाई। हर रोज मसाले याद कर के सब्जी में डालती हूँ..टमाटर प्याज भी खूब पकाती हूँ। सब्जी दाल डालने के बाद, उसे भी देर तक गैस पर चढ़ा रहने देती हूँ। फिर भी जो खुशबू मां के छोंक लगाने से पूरे घर में बिखर जाती थी। वैसी खुशबू तो मेरी रसोई तक में नहीं फैलती।

कितनी मन मोहक खुशबू से महकता रहता है मां बाबा का घर। वो बगीचे में लगे गुलाब, चमेली..सुबह शाम शिव जी की मढिया में जलने वाला घी का दीपक, और चंदन की अगरबत्ती। उस पर सुबह-सुबह छुई माटी से लिपा हुआ चबूतरा और आंगन। कितनी बार तो मैंने मां से छुप कर वो छुई माटी आंगन में बने आले से उठा के खाई है। कुछ एक बार तो मैं पकड़ी भी गई। पर ज्यादा मार नहीं पड़ी, बस कान पकड़ कर मां ने कहा पेट में कीड़े पड़ जाएंगे अगर मिट्टी खाओगी तो।

मैं भी कम नौटंकी नहीं थी। रोते हुए दर्द में बैठी रहती थी बाबा..बाबा.. करते हुए। फिर मां कहती...

'अब दुबारा नहीं खाना कभी ठीक है '।

पर मैं भी मैं ही थी। कब मां की बात सुनती थी। जब-जब सुबह-सुबह वो सोंधी सी पानी में लिपटी मिट्टी की खुशबू मेरे नाक के छिद्रों के रास्ते मेरे मन तक पहुती। तो मैं अपने आप आंगन में बने उस आले की तरफ खिंची चली जाती। फिर होश में आते ही खुदको वहां पाती। फिर मेरे हाथ न जाने कैसे उस मिट्टी को मेरे मुंह तक ले आते। पर सच कहूँ मिट्टी खाते समय मेरे मन में वो कीड़े वाली बात का डर तो आता था। गुड़िया के समय भी मैंने बहुत मिट्टी खाई है। और अब जब दुबारा मैं मां बनने वाली हूँ। तो मिट्टी के साथ-साथ मां की डांट भी खा लेती हूँ।

बचपन में जब मां किसी बात पर डांटती थी तो बुरा लगता था। अब बड़ी हो गई हूँ तो वो..! किसी बात पर न डांटे तो बुरा लगता है। लेकिन अब वो कुछ ज्यादा नहीं कहती। बस हर बात पर समझा देती है। और हमेशा याद दिलाती है। मैं सच में बड़ी हो गई हूँ।

अब मेरी एक 5 साल की बेटी है और मैं दुबारा मां बनने वाली हूँ। इसलिए मुझे समझदार हो जाना चाहिए। काम, घर और गुड़िया और खुद पर पूरा ध्यान देना चाहिए। मुझे ये समझना चाहिए..मेरा अपना भी एक घर है।

मां भी कुछ भी कहती है..क्या वो घर मेरा नहीं है.? क्या मां बाबा पराए हो गए.? उनका हाल-चाल पूछना भी भला कोई परेशानी की बात है। लेकिन वो भी सही कहते है। बाबा कहते है...मैं उम्र के जिस पड़ाव में हूँ, वहां करने को काम बहुत सारे होते है। पर समय कम पड़ जाता है। सच ही कहते है। सुबह से सारा दिन गुड़िया, घर और दफ़्तर संभालते-संभालते निकल जाता है। हर शाम चाय पीते-पीते जरूरी कामों के बारे में बस सोच ही पाती हूँ। सारा दिन हाथ में होते हुए भी रेत की तरह फिसल जाता है। कितने दिन हो गए मां बाबा से बात किए हुए।

हर रोज सोचती हूँ..आज समय निकाल कर आराम से बात कर लूं। पर फिर आराम करने जैसे ही मिलता है। अगले दिन की चिंता होने लगती है। कितने काम बाक़ी है। गुड़िया भी छोटी है अभी। इसी उम्र में तो हमें उसके भविष्य का भी सोचना है। उसकी पढ़ाई लिखाई, उसकी शादी। फिर मुझे दूसरा बच्चा भी होने वाला है। महंगाई कितनी बढ़ गई है। अभी से जेवर नहीं लिए तो बाद में मुश्किल हो जाएगी। जब आज से तिनका-तिनका करके जोड़ना शुरू करेंगे। तब जा के जिस उम्र में मेरी शादी हुई है। उस उम्र तक उसके अच्छे भविष्य की व्यवस्था कर पाएंगे।

कितनी जल्दी समय निकलता जा रहा है। कल ही तो बारिश की बूंदों ने भिगोया था मुझे। और आज देखो पतझड़ भी आ गया। पेड़ों में लगी पत्तियों ने जैसे अपना रंग बदलना शुरू कर दिया है। मेरे और इनके सिर के बालों ने भी चांदी ओढ़नी शुरू कर दी है। जैसे-जैसे दिन वा दिन पत्तियां अपनी जड़ों से अपना असली रूप छोड़ती जा रही है। वैसे ही मेरे बालों की जड़ों में भी सफेदी आने लगी है।

गुड़िया कहती है उसे मेरे सिर पर सफेद बाल अच्छे नहीं लगते। पर उसे क्या पता यही तो नियम है। जैसे मां बाबा के बाल भी अब पूरे सफेद हो चुके है। इनके माता-पिता के बाल भी बिल्कुल सफेद है और अब हमारी वारी भी शुरू होने में है।

गुड़िया के मन की बेचैनी में समझ सकती हूँ। मैं भी जब मां बाबा को बुढ़ा होते देखती..तो मन में एक टीस सी उठती। लगता अगर इन मौसमों से कुछ मांग पाई या छीन पाई तो मां बाबा की जवानी छीनूंगी। कितने प्यारे लगते थे., वो उन दिनों में। एक दूसरे से लड़ते हुए पर प्यार

से, एक दूसरे से एक दूसरे की ही शिकायत करते हुए। फिर रूठते हुए, मनाते हुए।

'अब बात नहीं करना मुझसे कभी..जाओ मैं भी जा रहा '

ऐसा कह कर तंग करते हुए। फिर शाम होते ही जिद्द करके एक दूसरे को मानते हुए। लगता है ये इस मौसम का जादू ही है। जो दो लोगों को इतने करीब ले आता है।

वो छोटी-छोटी सी बातों को ले कर हुई नोक-झोक। आज चाय तुम्हारे ही हाथो की पीऊंगी वाली जिद्द। फिर सब्जी लेने जाएंगे तो साथ जायेंगे..ये तुम्हारा भी घर है समझी। आज कुछ करने का मन नहीं है, बाहर खा के आए। आज गुड़िया को स्कूल छोड़ते हुए दफ़्तर चले जाना न। और सुनो शाम घर आते समय धनिया, टमाटर लेते आना..और हां...माता जी की दवाइयां भी, पर्चा तुम्हारे पास ही होगा। कह कर मेरा जोर से छज्जे से ही चिल्लाना और उनका दबी आवाज में कहना.. हां सुन लिए ये सब, तुम मुझे घर में ही बता सकती थी न। पूरे मोहल्ले को किसने कहां बताने को। फिर उनका गुड़िया की तरफ देखना और दोनों का एक साथ हाथो को सिर पर रख लेना।

बहुत चुगली करती है गुड़िया मेरी अपने बाबा से। वो घर पर होते भी नहीं है। कितनी बार पर उनको सब पता होता है। कब किस बात पर मैंने उसके कान खींचे है, या कब मैंने उससे उसके बाबा की शिकायत की है। बहुत चुगली आती है इस लड़की को भी। मां बिल्कुल सही कहती है, मुझ पर ही गई है। मैं भी तो ऐसे ही हर शाम बाबा से मां की चुगली किया करती थी।

कितनी दूर और जाना है। मां बाबा का गांव भी कितनी दूर वसा हुआ है। ऐसे शादी के बाद बहुत बार आना हुआ है मेरा। पर अभी जब से

गुड़िया बड़ी हुई है। उसकी पढ़ाई की वजह से पूरे साल आना ही नहीं हो पाता। और आना होता भी है। तो एक या दो दिनों के लिए बस। वो भी किसी उत्सव या गमी के लिए। यहां किसी से मिलने के समय तक नहीं मिल पाता। बस भीड़ से हट कर थोड़ा समय निकाल कर मां बाबा से उनका हाल पूछ लेती हूँ।

मां बता रही थी बाबा कुछ दिनों से बहुत बीमार रहते है। ठीक से कुछ खाते भी नहीं। कहते है अकेला घर, चार दीवारें कोई चहके खिलखिलाए तो घर...घर लगे। अब उनकी इतनी उम्र भी नहीं रही। फिर भी कुछ न कुछ करते रहते है सारा दिन। मोहल्ले के एक दो चक्कर भी लगा लेते है। बगीचे को भी सजोते रहते है। लेकिन एक बात आज भी उनमें बहुत प्यारी है। वो आज भी मां को हर रोज एक गुलाब देना नहीं भूलते। हर शाम की चाय भी खुद ही बनाते है। और साथ उनका पसंदीदा गाना भी गाते है "जिंदगी एक सफर है सुहाना.., यहां कल क्या हो किसने जाना"।

ऐसे सुहाने सफर पर एक अच्छा और सच्चा साथी हो..तो उम्र कोई भी हो.. जिंदगी मीठी ही लगती है। बिल्कुल इस चाय की तरह। गुड़िया को कितने दिनों बाद इतना खुश देख रही हूँ। अरे..! देखो तो नानू के घर आते ही। उसने अपना हिस्सेदार बदल लिया इसने। पहले बाबा की पूंछ बनी रहती थी। और अब नानू का लाड़ खत्म नहीं हो रहा। सोच रही हूँ कुछ दिनों के लिए इसे यही छोड़ जाऊं। इसका भी मन बहला रहेगा। इसके साथ आप लोगों का भी मन लगा रहेगा। वहां शहर में हम दोनों दफ़्तर चले जाते है। इसके दादा-दादी आश्रम के सत्संग में निकल जाते है। फिर पूरा दिन घर पर अकेले रहती है। अब तो मेरी गुड़िया बड़ी भी हो गई है। मेरे और इनके बिना भी कुछ दिन रह सकती है ।

मैं दो दिन में बापिस निकल जाऊंगी। दफ़्तर का बहुत काम है बाबा। फिर ये भी अकेले है। इनको खाना बनाना सब करना बहुत मुश्किल हो जाता है। पर आप चिंता क्यों करते हो। जब गुड़िया घर का काम करना सीख जाएगी, तो मैं इसको और इसके बाबा दोनों को छोड़ कर यहां आप दोनों के पास आ जाऊंगी।

छत पर बैठे-बैठे जब आसमान पर छाए बादलों पर नजर पड़ी। फिर हल्के से हवा के झोंखे ने कुछ ठंड का एहसास कराया। तारे बादलों की ओट से छुप कर झांक रहे थे, और चांद..! चांद तो छुप कर भी साफ दिखाई दे रहा है। कितनी जल्दी-जल्दी भागा जा रहा है। लगता है इसकी भी उम्र निकल रही है। इस पर भी बढ़ती उम्र के घने बादल छाने लगे है। या फिर इसे भी हल्की सी ठंड का एहसास हो रहा है।

आंगन में मां बाबा गुड़िया के साथ बैठे कर मेरे बचपन की कहांनियां सुना रहे है। मां को मेरे बचपन की सारी बातें, शरारतें, नाराजगी..सब याद है। और बाबा..उनको देख ऐसा लग रहा है। जैसे सालों से इसी दिन के इंतेज़ार में थे। कब मेरे बच्चों को मेरे बचपन की कहानी सुनाएंगे।

पर मां बाबा की भी तो अपनी कहानी होगी। उनके भी बचपन के किस्से होंगे.? जबानी की गलतियां होंगी.? जो वो किसी को कहना चाहते होंगे।

मैंने भी उन्हें कभी नहीं सुना। हमेशा अपने में रही हूँ। मेरी जिद्द, मेरा काम, मेरी आजादी, फिर अब मेरा परिवार, मेरी गुड़िया और मेरे..मां बाबा.? ये भी तो अपनी कितनी बातें मुझसे कहना चाहते थे। पर मैंने कभी नहीं सुनी। और अब जब सुनना चाहती हूँ, तो समय नहीं मिलता।

अब तो यहां इस घर में कुछ देर रुक कर, अपना ही बचपन याद करने का समय नहीं रहा।

शादी के बाद सिर्फ लड़की पराई नहीं होती। घर भी पराया हो जाता है।

Completed

Chapter 5 - हेमंत ऋतु
(Pre-Winter Season) Elderhood

हमेशा सोच में ये एक सवाल रहता है। क्यों लोग बेटी होने के सुख को भी दुःख मानते है। बेटी भी तो घर आंगन की रौनक होती है। लेकिन रौनकें तो घर में सिर्फ दिवाली दशहरा ही होती है। बाकी पूरा साल तो सब शांति से ही दिन निकालते है। अपने काम-काज के व्यस्त जीवन की बहती उम्र की नदी में। जिसका बहाओं समय के साथ बदलता रहता है। और इस बदलते बहाओ में जब बेटियां बिदा हो कर दूसरों के घर की रौनक बन जाती है। तब उन्हें बेटों की कमी..कभी तो खलती होगी न।

Chapter 5

बाबा कुछ कहते नहीं है.. न ही मां कुछ बताती है। पर उन्हें कभी-कभी लगता तो होगा ही.! अगर एक बेटा होता तो उन्हें अपने इस बुढ़ापे की इतनी चिंता न होती। बेटियों को बेटा कहते-कहते बेटों की तरह जिम्मेदार बना दिया। पर बेटों की तरह बेटी आज भी अपने माता पिता के घर से बिदा होने के बाद। उनका ख्याल रखने का अधिकार नहीं पा सकी।

सब कुछ तो देखना पड़ता है न। यहां सास ससुर भी तो है। फिर मां बाबा भी तो बेटी हो..कह के पराया कर देते है। जब भी थोड़ा समय निकाल कर मां बाबा के घर जाती हूँ। तो कुछ दिन बिताते ही मां इनकी, इनके मां बाबा की याद दिला ही देती है। कहती है वो अकेले कैसे घर संभालते होंगे। दिन के कितने काम होते है., वो सब कौन करता होगा.? अभी गुड़िया की उम्र ही क्या है। वो कैसे सारे घर का खाना बनाती., घर के सब काम करती होगी.? मेरी ही तो जिम्मेदारी है..वहां शहर में सब संभालना।

हां..जानती हूँ। मेरी जिम्मेदारी है सब..सब कुछ मेरी जिम्मेदारी ही तो है। पर मां बाबा भी तो मेरी जिम्मेदारी है न। यहां अकेले रहते है। कौन है उनका ख्याल रखने वाला। वहां तो ये भी है..इन्हें भी तो थोड़ा बहुत काम आता है। फिर कुछ दिनों की ही तो बात होती है। इतना तो सब मिल कर घर सम्भाल ही सकते है। या बस मेरे ही सुबह उठने से घर पर चाय बनती है।

कितने दिन हो गए इस बात को। उसके बाद तो मैं भी मां से नाराज हो कर बापिस आ गई थी। और मां भी इतने दिन होने को है, एक बार भी मुझे फोन पर नहीं कहां..बेटा घर हो जाओ। बस जब भी बात होती है, यही समझाती है..अपना घर अच्छे से संभालो, गुड़िया का ख्याल रखो, वो बड़ी हो रही है..अपने सास ससुर का ख्याल रखो, वो बुढ़े हो रहे है, और अपने पति का ख्याल रखो। उम्र के इस पड़ाव में हम दोनों को ही एक दूसरे का सहारा बनना है..साथ देना है।

शायद मां सही भी कहती है। गुड़िया की भी उम्र ऐसे मोड पर है। जहां से गलत दिशा में जाना बहुत आसान होता है। और मेरा शरीर भी अब जल्दी थकान पकड़ जाता है। पता नहीं था 40 की उम्र में लोग इतना बुढ़ा महसूस करते है। मेरे तो बाल भी कुछ-कुछ सफेद होने लगे है। और इनका.! इनका हाल तो पूछो ही मत। जैसे पेड़ अपने पत्तों के पक जाने के बाद..उन्हें अपनी डाली से आजाद कर देता है। वैसे ही इनके सिर के बाल भी पकने के बाद इनके सिर से बिदा हो रहे है।

अभी से घुटनों में दर्द रहने लगा है। जरा-जरा से काम में थक जाती हूँ। उस पर दफ़्तर भी जाना होता है। फिर उसमें यहां-वहां का कोई काम निकल आए सो अलग। उस पर सुबह से शाम की घर-दफ्तर, दफ्तर-घर की परेड अलग हो जाती है।

हर सुबह पांच बजे उठती हूँ। ताकि पूरे घर का झाड़ू कटका कर पाऊं। और समय पर सबके लिए खाना बना कर, समय से दफ्तर पहुंच पाऊं। फिर सारा दिन दफ्तर का काम। कितना भी करो..पर कुछ परेशानियां तो वहां भी हो ही जाती है। बस एक सुख ये कह ले..शाम घर आ कर रसोई में नहीं जाना पड़ता। सासु मां रात का खाना बना कर रखती है।

वो ये सब कर लेती है तो सुबह फिर से पांच बजे उठने की हिम्मत बनी रहती है।

साल के इन दिनों मौसम भी तो ठंडा होने लगता है। सुबह से एक स्वेटर पहनने की जरूरत तो पड़ ही जाती है। फिर इस बढ़ती उम्र के साथ भी ठंड थोड़ा ज्यादा लगने ही लगती है।

कितनी भी कोशिश कर लूं..छोटी सी रात होती है। फिर मुझे नींद आती भी कितने देर है। जब तक एक कप चाय शरीर के अंदर चली न जाए, तब तक न मन उठता है, न ही इस शरीर की कुछ करने की हिम्मत होती है। उस पर ये त्यौहार भी। साल के सभी बड़े त्यौहार इसी मौसम में आने होते है।

झुरझुरी ठंड और उस पर इन त्यौहारों के इतने काम पड़े है। पूरे घर की साफ-सफाई करनी है। सबके लिए पकवान भी बनाने है। फिर इतने रिश्तेदारों का आना-जाना भी तो होगा। इतना सब कुछ करने को है और करने वाली सिर्फ मैं।

चलो अच्छा है..अब गुड़िया भी थोड़ा हाथ बटा देती है। सासु मां भी बहुत से काम खुद ही कर लेती है। बस एक ससुर जी है। जो सबके सिर में दर्द किए हुए है। सारा दिन इतनी चिढ़-चिढ़, बुढ़ापे का असल लगता है। हर बात से शिकायत, हर बात पे गुस्सा। वो तो सासु मां है जो संभाले हुए है। नहीं तो हर रोज कुछ न कुछ होता रहे इस घर में।

जाने कहां-कहां मन जाता है। देखो यहां पे तो काम करने वाले इतने लोग है। बाजार से कुछ मंगाना हो तो ये ला देते है। फिर अब तो गुड़िया भी चली जाती है अकेले। लेकिन मां बाबा..वो तो बिल्कुल अकेले है। उनके साथ कौन हाथ बटाने वाला है। उन्हें तो हर साल के सारे त्यौहार ऐसे ही अकेले मनाने पड़ते है। मैं भी यहां इतनी व्यस्तताओं में फसी

रहती हूँ। जाना हो ही नहीं पाता उनकी तरफ। फिर जाना हो भी तो कितने दिनों के लिए।

सुबह से शाम जब-जब गुड़िया को अपनी मदद के लिए आवाज लगाती हूँ। या वो खुद अपने आप आ कर मेरी मदद करने लग जाती है। तब उसे देख कर अपने बचपन की याद आ जाती है। कैसे मैं भी दिवाली की मिठाई मां के साथ बनाने लग जाती थी। कैसे वो मुझे गुजिया भरना और उसे गुथना सिखाती थी। हम दोनों कैसे साथ काम करते-करते यहां-वहां की बातों में मग्न हो जाते थे। फिर जब बाबा दफ्तर से आ कर पानी और चाय मांगते तो मां दोनों हाथो को ऊपर उठा अधबने लड्डू बाबा को इशारे से दिखाती। पहले बाबा उनकी तरफ देखते, फिर मेरी तरफ देख कर मुस्कुराते हुए कहते..

'मैं कपड़े बदल कर आता हूँ। क्या तुम दोनों भी चाय पिओगे.? लगता है आज रात खाने में बस पकवान ही मिलने वाले है।'

बाबा की ये बात सुन, मां आंखों से पास रखे रोटी के डब्बे और दाल की तपेली की तरफ इशारा करती।

मां बाबा भी न कितना छेड़ते है एक दूसरे को। वैसे इनका भी हाल कुछ कम नहीं है। इन्हें भी साल के हर त्यौहार के सभी तरह के पकवान बहुत पसंद है। अच्छा भी है इसी बहाने सही, घर में चहल कदमी बनी रहती है।

कैसे-कैसे विचार मन में गोता लगाते है..कुछ दिनों पहले ही तो इस घर में बिदा हो कर आई थी। अब...अब ये घर ससुराल से मेरा अपना घर बन गया है। सोचने में ऐसी बातें बड़ी लगती है। पर समय अपने साथ-साथ सब आसान बना देता है। गुड़िया कहती है वो हम दोनों को छोड़ कर कहीं नहीं जाएंगी। जिसे उससे शादी करनी हो वो घर जमाई बन

जाए, और हमारे साथ इसी घर में रहे। ऐसी बातें तो मैं भी मां बाबा से करती थी। तब मां बाबा ये सुन कर मुस्कुरा देते थे। जैसे अब मैं और ये सुन कर मुस्कुरा देते है। मां कहती थी ये सब बातें बस नादानी में करने की है। जब समझदारी आ जाएगी तो अपने घर का मतलब मुझे समझ आ जाएगा।

यहां मेरे पास हाथ बटाने को सभी है। पर मां बाबा उनको तो दवाइयां ला के देने वाला भी कोई नहीं ही। वो खुद ही एक दूसरे का ख्याल रखते है। कितना चिढ़ने लगे है दोनों.! छोटी- छोटी बातों में ही। जरा-जरा में गुस्सा कर जाते है। दोनों एक दूसरे से भी नाराज हो जाते है., फिर मना भी लेते है। और मना भी क्या लेते है..,भूल जाते है किसी बात पर झगड़े भी थे। या यूं कहूँ के याद होते हुए भी बात को जाने देते है। जानते है दोनों कितना सफर और बचा है। सब कुछ तो जीवन का अच्छा देख लिया है साथ। तो अब...अब इस बुढ़ापे में किस बात का झगड़ा करना। किस बात के लिए नाराज होना। वहां उस घर में दोनों के सिवा है ही कौन। अगर एक दूसरे से ही बात न करें तो क्या इन दीवारों से हाल पूछे.! या इन दरवाजों को अपनी बातें बताएं।

सोचती हूँ.., कभी तो बाबा के मन में ये बात आती होगी। चलो..आज मां से नहीं, बगीचे के फूलों से ही बात कर लूं। उनसे ही कह देता हूँ। थोड़ा ठंडक भरी हवा कर दें।

क्योंकि मां से पंखा चलाने को कहेंगे। तो वो पहले अपने जोड़ों के दर्द सुनाएंगी, फिर बाबा को उनकी कमिया बताएंगी। फिर रही बची कसर में रसोई पर चढ़ी दाल का किस्सा सुना देंगी। इतना सब सुन कर तो बाबा खुद ही पंखा चला लेंगे। और मुस्कुराते हुए मां का हाथ पकर

उनको कुर्सी में बिठा लेंगे। फिर रसोई से उनके लिए एक ग्लास पानी लाएंगे, और होले से पूछेंगे

'भाग्यवान चाय पियोगी। मैं बना लाता हूँ... वही चाय बनाते-बनाते रसोई में दाल भी देख लूंगा।'

पर मां..मां भी हद्द करती है। झुंझला कर उठेंगी..

‘हटो...तुमने देखी खूब दाल.! सब रसोई फैला दोगे..तब की बात और थी। अब नहीं समेंटा जाता मुझसे सब। तुम बैठो मैं लाती हूँ बना कर चाय।'

पर बाबा सुनते है कभी.. लेकिन मां भी तो बाबा को जिद्द करने देती है.।

मां – अजी...सुनो ऊपर की अलमारी में वाई तरफ मठरी भी रखी है..वो भी चाय के साथ लेते आना।

बाबा - जो हुकुम महारानी जी।

उन्हें ऐसे साथ देखती हूँ तो महसूस ही नहीं होता। उन्होंने जीवन के इतने साल एक साथ बिताए है। उन्हें देख कर लगता ही नहीं..उन्होंने कभी कोई उलझन महसूस भी की होगी। वो हमेशा एक दूसरे को खुद से पहले रखते है। दिन की सब बातें एक दूसरे से कहते है। छोटी से छोटी बात भी वो एक दूसरे को बताए बिना रह नहीं पाते।

जैसे मां बाबा से कहती है, आज बगीचे में गुलाब कम खिले है, बगीचे में लगी तरोई की बेल आम का तना पकड़ कर छत तक जा पहुंची है। इस साल आम की फसल भी कुछ खाश नहीं हुएं न। पर जितने भी हुए

स्वादिष्ट थे। तुम भी न सब पपीते यहां-वहां बाट देते हो। अब की बार कोई पपीता पके तो उसे अपने लिए रख लेना।

बाबा भी अपने मन की बात कह ही देते है.. मैंने भी तुम्हे कितनी बार कहां है..हर रोज पूरा घर मत झारा करो..थक जाती हो। पर यहां सुने कोई मेरी तो।

उन्हें इस तरह से छोटी-छोटी बातों पे लड़ते देखती थी। तो सोचती थी के इनके बीच अच्छा रिश्ता नहीं है। या ये दोनों अभी तक बड़े ही नहीं हुए।

धत्त...मैं भी पागल आज उन्हीं छोटी-छोटी चीजों में इनसे लड़ पड़ती हूँ। फिर जब मां समझाती है। ऐसे लड़ा मत करो.. तो उनसे इन्हीं का पक्ष लेते हुए कहती हूँ...

'नहीं मां हम लड़ते नहीं है। बस हमारे बीच थोड़ी सी नोक-झोक हो जाती है। वो भी कभी-कभी। ये भी इतने गलत नहीं होते। सही तो कह रहे थे। फिर से मां बनने वाली हूँ मैं। फिर भी कुछ नहीं समझती। अपना ख्याल भी नहीं रखती।'

जानती हूँ..इस बात से आप बहुत उदास होंगी और नाराज़ भी। पर मेरा बड़ा दिल है मां..इस बार मुझे लड़का हो। गुड़िया मुझे बहुत प्यारी है। मैं भी बेटी और बेटो में कोई अंतर नहीं करती।

पर जब आज इस उम्र में मां और बाबा को अकेले एक दूसरे को संभालते हुए देखती हूँ तो मन दुखता है। इसलिए नहीं के उनका कोई बेटा नहीं है। जो हर समय उनके साथ रह सके। दुःख होता है ये देख कर के अगर उन्हें कभी रात किसी की जरूरत पड़ी, या कभी बाबा से सुबह बिस्तर से उठा नहीं गया, या मां की हिम्मत न हुई किसी दिन

रसोई पर खाना पकाने की..! तो वो एक दूसरे का सहारा कैसे बनेंगे..? उस रोज तो मैं भी उनकी मदद के लिए नहीं जा पाऊंगी। कोई अपना होता उनके पास। तो मुझे उन्हें दवाइयां कौन ला कर देगा कि चिंता न होती।

घर की कितनी मरम्मत करनी होती है। सब कुछ बाबा अकेले कैसे करते होंगे। वो हर शाम मुझसे फोन पर हस कर बात करते है। पर जिस तरह से वो हस्ते-हस्ते अपनी रोज-मर्रा की परेशानियां बताते है। उन्हें लगता है मुझे कुछ समझ नहीं आता। वो भूल जाते है के मेरी भी एक बेटी है। मुझे अब सब समझ आता है। बेटियों का सुख बस तब तक ही है.. जब तक वो अपने बाबा के घर में होती है। बिदा होने के बाद वो पराई हो जाती है। मां बाबा मुझे अधिकार से एक दिन और ज्यादा अपने घर रोक भी नहीं पाते। और मैं भी तो इतनी जिम्मेदारियों से घिरी हुई हूँ..के चाह कर भी उन्हें समय नहीं दे पाती।

मैं उनसे कहती नहीं हूँ। पर मुझे लगता है, काश...काश उनका एक बेटा भी होता। तो मुझे हर पल उनकी चिंता न लगी रहती। मेरा मन कितना झटपटाता रहता है। उन्हें ऐसे रोज छोटी-छोटी चीजों के लिए परेशान होते देख। पर वो मुझसे कुछ नहीं कहते।

मैं अपने आप को ऐसे बुढ़ापे में नहीं देखना चाहती। हां जानती हूँ बुरा कर रही हूँ। कैसी मां बनूंगी मैं जो बेटी का सुख होते हुए भी बेटे का सुख मांगती है। पर मैं भी क्या करूं.. मां बाबा को इस उम्र में अकेले देख कर मन में डर सा बना रहता है। जाने कब उन्हें किसी की जरूरत पड़ जाए। पर तब उनके साथ कोई न हुआ तो.? अकेले रहते है वो दोनों उस बड़े से घर में। क्या करते होंगे दोनों सारा दिन.? इतनी तो यहां-वहां की बातें भी नहीं होती होंगी। मैं नहीं चाहती के जब मेरा

बुढ़ापा आए तो मैं और ये भी ऐसे ही दीवारों को देखते रहे। अपनी गुड़िया के आने के इंतेज़ार में दरवाजा तकते रहें।

मैंने हर प्रसिद्ध मंदिर में माथा टेका है। जबसे ये खबर सुनी है मैं फिर से मां बनने वाली हूँ। तब से मैंने शहर का कोई ऐसा मंदिर नहीं छोड़ा जहां में नहीं गई। सालों से हर तीज़ त्यौहार पूरे नियम चार से मना रही हूँ। साल का हर व्रत रखती हूँ। नवरात्री से ले कर गणेश चतुर्थी तक। यहां तक की हफ्ते के भी सारे व्रत किए है मैंने। कितनी मन्नते भी मांगी है।

बस इसी चाह में के मुझे एक बेटा चाहिए। मेरी गुड़िया मुझे बहुत प्यारी है। पर जब-जब इस बात का ख्याल मन में आता है। वो एक दिन हमें छोड़ कर अपने घर चली जाएगी। तब दिल में अजीब सा डर आ जाता है। क्या हम दोनों भी ऐसे ही मां बाबा की तरह अकेले हो जाएंगे..? नहीं नहीं.. ऐसा नहीं होगा। मुझे अच्छा सोचना है। मैं फिर से मां बनने वाली हूँ..और मुझे यकीन है माता रानी मुझे एक बेटा ही देंगी। जब वो थोड़ा बड़ा हो जाएगा न..तो मैं उसे मां बाबा के पास भेज दूंगी। वो उनके साथ रहेगा उनका ख्याल रखेगा। मैं और ये तो अभी अच्छे खासे स्वस्थ है। मां बाबा को एक बेटे की जरूरत है। मेरा बेटा हमारा और मां बाबा दोनों का सहारा बनेगा।

जैसे-जैसे दिन नजदीक आ रहे है। मन में उत्सुकता के साथ बैचेनी भी है। हर रोज सुबह-शाम बस माता रानी से एक ही प्राथना करती हूँ। इस बार वो मेरा मन रख लें। पर बाबा कहते है.. माता रानी के प्रसाद में भेद नहीं करना चाहिए। वो जो दे उसे खुशी से स्वीकार करना चाहिए। फिर वो चाहे औलाद के मामले में हो या जीवन के। उनसे अच्छा हमारा और कौन सोच सकता है।

आसमान पर पूरा चांद खिला है। हस्पताल की खिड़की से बाहर एक नीम का पेड़ दिख रहा है। मां उसे देख कर कहती है..

'नीम होती कड़वी है, पर हमारे शरीर को कई रोगों से निजात दिलाती है। वैसे ही हमें लगता है। बेटियां अच्छी नहीं होती। पर वो हमारे मन को तसल्ली, सुकून, उम्मीद और नई ऊर्जा से भर देती है।'

जब मेरी दूसरी गुड़िया हुई तो मैंने अपनी मांगी हर मन्नत पूरी की। मैं अब भी सारे व्रत करती हूँ। शहर के हर मंदिर पर जाती हूँ। मेरी कोई शिकायत नहीं है, न ही मेरा कोई गुस्सा है। सबको लगता है मुझे बेटा पाने का मोह इतना ज्यादा है। मैं अपनी दूसरी बेटी के आने से खुश नहीं होंगी। सबने मुझे समझाया..पर मैं अपने मन की दशा किससे कहूँ।

मुझे मां बाबा के हालात दिखते है। उनका अकेलापन जो वो अपनी मुस्कान, अपनी बातों के पीछे छुपा लेते है। मैं उनकी बेटी हूँ..समझ सकती हूँ। एक दिन जब उसी उम्र के पड़ाव पर हम दोनों पहुंचेंगे। तब हम दोनों की दशा भी ऐसी ही होगी। हम दोनों भी हर रोज सुबह-शाम अपनी बेटियों के घर आने का रास्ता देखेंगे। कब उनके ससुराल वाले उन्हें हमारे पास आने दें, कुछ दिन हमारे साथ ही रुकने दें। इसी उम्मीद में हम दोनों का भी बुढ़ापा सूनेपन में गुजर जाएगा।

मैं खुश हूँ...मैं फिर से मां बनी। मेरी बड़ी गुड़िया को एक बहन मिल गई। अब वो तो कम से कम आने वाले दिनों में अकेली नहीं रहेगी। अब उसके साथ खेलने को एक बहन है।

वो दोनों साथ खेलती रहती, एक दूसरे का ख्याल रखती है। मैं उनके भरोसे अब अपना घर छोड़ सकती हूँ। आराम से दफ़्तर जा कर अपना काम कर सकती हूँ।

बाबा से जब कभी उनका ख्याल रखने की बात होती है। तो वो मुझे हमेशा यही समझाते है। बेटा..जरूरी नहीं बेटे हों तो ही सुख मिले। कितने ऐसे लोग है जिनके बेटे होते हुए भी उनको बेटों का सुख नहीं मिला। मैं भी सुन लेती हूँ। और हस के कहती हूँ..वो भी पूरे गुमान से..जिसे न मिलना हो न मिले सुख बेटों का। मुझे तो मेरी बेटियों का बहुत सुख है। मुझे मेरी दोनों बेटियां बहुत प्यारी है।

Completed

Chapter 6 - शिशिर ऋतु/शीत ऋतु (Winter season) old age

कितना कुछ कहने को रह जाता है अपनो से। कहने को जिंदगी बहुत बड़ी है..इसमें अपनो से मिलना भी बहुत बार होता है। कितनी सारी बातें भी होती है सब से। पर फिर भी जब उनसे दूर हो जाओ..तो समझ आता है। कितना कुछ कहने को था। अभी तो बीती बातें भी करनी थी। बचपन की, जवानी की, अभी तो इन मौसमों के साथ बीते हर किस्से सुनाने थे। पर जब अपने थे तो समय नहीं होता था.. न ही बातें याद आती थी..और आज..देखो तो आज सब बातें भी याद है..और उन बातों को करने के लिए बहुत सारा समय भी है। पर जिनसे वो बातें कहनी है..उन्हें कहां से लाये.?

Chapter 6

अब तो बीते दिन बस यादों में ही जिंदा है। कभी मां बाबा यहां आ जाते थे हमने मिलने, कभी हम समय निकाल कर मां बाबा के यहां चले जाते थे। कितनी बार तो बाबा खुद आ कर, मेरी गुड़ियों को अपने साथ ले गए। उनका भी वहां मन सा लग जाता है। दोनों कहती है..नानू के घर समय का पता ही नहीं चलता। सारा दिन नानी नानू की नोक-झोक सुलझाते निकल जाता है। कितने किस्से सुनाती है वो मां बाबा के। नानू ऐसा करते है..नानी ऐसा कहती है। फिर उन्होंने ऐसे किया..फिर ये हुआ..फिर वो..! सब कहती है। वो सब जो मैंने बचपन से देखा है। पर देख कर भी उसमें कभी ध्यान नहीं दिया। जिस नोक-झोक की मेरी बेटियां आज प्रशंसा करती है। किसी रोज मैं इस नोक-झोक से चीड़ जाया करती थी।

इस साल की भी गर्मियों की छुट्टियां दोनों बाबा के घर बिता कर आईं है। बता रहीं थी दोनों। मां...नानू और नानी के सारे बाल सफेद हो गए है। नानू के तो कितने सारे बाल झड़ भी गए। छोटी बेटी ने फिर हस्ते हुए कहां..

'मां नानू गंजे हो गए है'

मैंने आंख दिखा कर उनको डांटा भी। पर फिर ख्याल आया मजाक ही सही बात तो सच है। बाबा बहुत बूढ़े लगने लगे है।

फिर उसने मेरी बात काटते हुए कहा..

'पर मां नानी तो फिर भी कभी-कभी बालों को डाई कर लेती है। पर नानू...नानू के तो सिर पर खेल का मैदान बनता जा रहा है।'

ये बात गुड़िया ने बड़े हस्ते हुए कहीं। कहा..

'नानू बूढ़े लगने लगे है, और नानी उन्हें तो कई बीमारियां हो गई है। अब तो वो अपनी पसंदीदा इमरती तक नहीं खा पाती, और नानू भी बहुत सी खाने की चीजों से परहेज करने लगे है।'

जैसे-जैसे मेरी दोनों बेटियां बड़ी हो रही है। उन दोनों का मन मां और बाबा के साथ बहुत लगने लगा है। जब-जब दोनों बाबा के घर जाती..तो उनका बापिस अपने घर आने का मन ही नहीं करता।

मन तो मेरा भी कुछ ऐसा ही करता है। किसी रोज समय निकाल कर बाबा के घर जाऊं..उनके साथ बैठूं..उनसे बहुत सारी बातें करूं। उन्हें बताऊं के जो शिकायतें बचपन में मेरे बारे में मां आपसे करती थी। वहीं शिकायतें मैं आज अपनी बेटियों की इनसे करती हूँ।

कभी-कभी तो दोनों शांत रहती है। पर कभी-कभी पूरे घर को ही जंग का मैदान बना लेती है। इतना गुस्सा दिलाती है दोनों कभी-कभी...मन करता है, इन दोनों की दोनों को आप दोनों के पास ही छोड़ आऊं। पर फिर सोचती हूँ। अगर ये दोनों नहीं रहेंगी घर में...तो घर खाली सा लगने लगेगा। इन्हीं की वजह से तो सारा दिन घर में चहल कदमी बनी रहती है। मैं और इन्हें तो कितना ही समय मिलता है। कुछ करने के लिए, घर संवारने के लिए।

ये दोनों ही है जो घर सजाती-संवारती रहती है। बाजार से तरह-तरह के साज सजावट के समान लाती रहती है। अब तो मेरा भी काम में

बहुत हाथ बटा देतीं है। इनकी वजह से मुझे भी बाल बनाने याद रहते है।

आज क्या पहनूं, कैसे तैयार होऊं, ये सब भी दोनों सम्भाल लेती है। बिल्कुल वैसे जैसे मैं मां से कहती थी..तोतली जुबान में। मेरी छोटी बेटी मेरे बाल बनाते-बनाते कहती है..

'मां आप भी न बिल्कुल ख्याल नहीं रखते अपना, इतने सुंदर बालों का क्या हाल बना रखा है आपने। इनका ख्याल रखा करो न, इतने प्यारे बाल है आपके।'

मैं भी उसके गाल सहला कर, उसको बाहों में भर कर कहती हूँ।

'जी दादी अम्मा...अब से जैसा आप कहेंगी वैसा ही करूंगी...अब खुश। मै जाऊं दफ्तर बहुत काम है। तुम दोनों अपना ख्याल रखना। ज्यादा शैतानी नहीं... ठीक है, बदमाश।'

बहुत बदमाश है दोनों ही, पर समझदार भी बहुत है। घर में सबका बहुत ख्याल रखती है। दादा-दादी की दवाइयां, घर के कुछ थोड़े छोटे-मोटे काम-काज, इनकी भी लिखा-पड़ी में थोड़ी बहुत मदद कर देतीं है। अक्सर रसोई में मेरा हाथ बटाने खुद व खुद आ जाती है। अभी कुछ दिनों पहले मेरी बड़ी गुड़िया ने पूरी-सब्जी बनाना सीखा है। और ये छोटी वाली, इनका क्या कहूँ..इन्हें तो सब आता है। ये तो हर काम में मास्टर है। पर बातें..इनकी बातें सुन ले कोई कभी। बहुत प्यारी और बहुत सारी बातें करती है ये। सारा दिन अपने बाबा के घर आने का रास्ता तकती है..ताकि उन्हें पूरे दिन की हाजरी दे सके।

फिर इनका एक और काम भी तो है, जो करना बहुत जरूरी है। सुबह से मैं इनको स्कूल के लिए तैयार करती हूँ और ये मुझे दफ्तर के लिए..

"न मां ये वाला नहीं इसमें आप अच्छे नहीं लगते..वो लाल वाला सूट पहने न। और इसके साथ ये वाले कान के झुमके भी..मां आप अपने बाल ऐसे चोटी नहीं बनाए न..इनको खुला रखें..,आप बहुत सुन्दर लगेंगी।"

ये तो बच्चे है। इन्हें क्या समझाए..कितना काम होता है दफ्तर में। वहां ये लाल चुनरी, और बाल सवारेंगे या काम करेंगे। पर इनकी इसी नादानियों की वजह से मन में उत्सुकता, उम्मीद और शांति बनी रहती है। रिश्तों में प्रसन्नता बनी रहती है।

फिर आप भी तो कहते थे। हमेशा मेरे होने से घर के रौनक रहती थी। और अभी भी जब-जब मैं घर आती हूँ। आपका मन ऊर्जा से भर जाता है। ऐसे जाड़े में भी आपका सुबह-सुबह उठने का..अपना नर्म-गर्म बिस्तर छोड़ने का मन हो जाता है।

मैं हमेशा इस बात से अचरज में आ जाती हूँ। कैसे आप इस उम्र में भी इतनी तेज़ ठंड में सुबह-सुबह छः बजे सिर्फ मेरे लिए बाजार से नाश्ता ले कर आते है। फिर शाम अलाव जलाते है। और अपने हाथो की बनी गरमा-गरम अदरक की चाय पिलाते है। घंटों बैठ कर कितनी यहां-वहां की बातें करते है न हम। और जब-जब मैं अपनी बेटियों की शिकायत आपसे करती या उनकी नादानिया आपको बताती। तो आप और मां मुझे मेरे बचपन के किस्से सुनाने लगते। मैं उन किस्सों को सुन के शर्मा जाती। कितनी शरारती थी मैं।

कैसे आप दोनों ने मुझे संभाला है। मेरे मुकाबले तो मेरी दोनों बेटियां बहुत शांत और प्यारी है। इनके बारे में आपसे क्या-क्या कहूँ..! एक एक दिन की भी कहानी कहूँ तो कई साल सुनाने में लग जाए। उस पर अभी.. मेरे बचपन के भी तो कितने अनगिनत किस्से आपसे सुनना

बाकी है। आप कितना कम बोलते हो न बाबा..! जब-जब मैं आपसे मिलने आती हूँ। आप बस मुझे ही सुनते रहते हो। मां तो फिर भी बहुत कुछ कह जाती है। बातों-बातों में उनसे मेरे और मेरी गुड़ियों के बचपन की,जवानी की, जिंदगी की, जिम्मेदारियों की बातें हो जाती है। पर आपसे..आपसे तो बातें बहुत होती है। पर सिर्फ मेरी, मेरे घर की, इनकी, मेरे सास-ससुर की, और इन दोनों बदमाशों की। मेरी आपसे सबके बारे में बात होती है। लेकिन आप ज्यादा कुछ नहीं कहते.? सबका हाल पूछ लेते है। गलत के लिए सलाह दे देते है, सही रास्ता दिखा देते है। मैं चीड़ जाऊं तो समझा देते है, मुझे दुलार करते है। इस उम्र में भी जब मैं दो बच्चों की मां हूँ। तब भी आप मुझे बचपन सा ही लाड़ करते है।

आप आज भी हमेशा की तरह बस मुझे बैठ कर सुनते है। ऐसे जैसे मैं ही हूँ जो पूरे ब्राह्मण की रचेता हूँ। जैसे दुनिया जहान की सारी जानकारी मेरे पास ही है। ऐसे सुनते है आप मुझे जैसे पता नहीं मैं कौन सा आपका पसंदीदा सुर गा रही हूँ। और तो और आप मेरी बेमतलब की बातों में भी मंदमुग्द हो जाते है। इतना ध्यान से तो कभी ये भी मुझे नहीं सुनते, और न ही मेरी बेटियां। बाबा जितना ध्यान आपका मेरी बातों में होता है..उतना ध्यान तो मैं भी कभी-कभी अपनी बातें कहते-कहते नहीं रख पाती। कभी-कभी तो सच में..मुझे सिर्फ कुछ बोलना होता है आपसे, इसलिए मैं कुछ भी कह देती हूँ।

आपको तो याद होगा न.? जब मैं आपको घर के पास वाले आम के पेड़ का किस्सा सुनाती थी। उस पेड़ में एक आंटी रहती है। जो तेज हवा चलने पर डाली में लगे आम तोड़ कर नीचे फेंक देती है। और वो इमली..उसके पेड़ के चढ़ने वाला किस्सा, अपने घर के पीछे वाली गली

के बूढ़े अंकल, जो सब बच्चों को चिल्लाते रहते थे। बिना मतलब कितनी शिकायत की मैंने उनकी आपसे।

स्कूल न जाने के सौ बहाने, इस कड़ाके की ठंड में न नहाने के सौ बहाने, सारा दिन आप घर पर रह कर मेरे साथ खेलते रहे बस। इसके लिए भी मैंने कितनी नौटंकियां की है। कितनी बार आपको बिना बताए आपकी जेब से पैसे निकाल कर बाहर पानी बतासे खाने.,तो कभी ठंडी-ठंडी कुल्फी खाने चली जाती थी मैं। आपको तो याद होगा.?

कितनी बार मैंने आपकी जेब से पैसे निकाल कर अपने लिए कपड़े, साज-सजावट का सामान लिया है। पर आपने कभी नहीं रोक, न कभी डांटा, न कभी कुछ कहा मुझसे या मां से भी। आपने हमेशा मुझे ऐसा करने दिया है।

आपने बचपन से मुझे अपनी मनमानी करने दी है। मुझे उन सभी मनमानियों की बात करनी है आपसे। जितनी बार भी आपने मुझे मेरी गलती होते हुए भी नहीं डांटा है। उन सभी गलतियों के बारे में पूछना है आपसे। और भी न जाने क्या-क्या कहने को है, कितनी सारी यादें है..।

कितनी सारी यादें है न..! कुछ खट्टी, कुछ मीठी, और कुछ तीखी सी भी। कुछ तो मीठे-तीखे चटकारों सी भी है, और कुछ तो बिलकुल तपते गर्मी के सूरज सी है। और कुछ जो माँ के लगाए छोंक की है, कुछ दोस्ती की मस्ती की है। कुछ यादें तो इस दिसंबर सी कड़कती ठण्ड सी भी है। कुछ उसमें अलाव से मिली गर्मी सी भी है।

देखो तो रुककर पीछे.! कितनी यादें तो इन बारिशो सी भी है। कितना रोती थी मैं बाबा..बाबा... करते हुए पूरे घर में। मां तंग आ जाती थी मुझसे। फिर मुझपे बादलो की तरह फट पड़ती थी। लेकिन

बाबा..और गुस्सा.. वो भी मुझ पे.! न कभी नहीं। मुझे देख कर तो उनके चेहरे पर बसंत सी मुस्कान खिल उठती थी। वो मुस्कान आज भी मुझे देख किसी गुलाब के फूल सी खिल उठती है।

जैसे मैं..आज भी उन्हें इतनी बड़ी होने के बाद भी। दूर रस्ते के मोड़ से आता देख लूँ तो फागुन सी चहक उठती हूँ। सुबह-शाम, घर में, दफ्तर में, जितनी बार भी मां-बाबा की याद आती है। या कभी बातों में उनका जिक्र होता है। तो उनके साथ बिताया हर लम्हा कम सा लगने लगता है।

लेकिन समझ ही नहीं पाती के आपसे ये कैसे कहूँ.? बचपन की उन यादों में और भी बहुत कुछ बताने को रह गया है। मेरे स्कूल के कितने सारे किस्से तो अभी आपने सुने ही नहीं। कितना कुछ मुझे आपके बारे में आपसे सुनना है। और कितना कुछ आपको आपके बारे में बताना है।

मैं आपके बारे में क्या सोचती हूँ.? आप क्यों मेरे लिए दुनिया के सबसे अच्छे बाबा है.? क्यों मैं आपके अलावा किसी के सामने नहीं रोती.? क्यों मुझे अपनी हर जिद्द आपसे पूरी कराने की आदत है.? ये सब आपसे कहने के लिए न जाने कौन सी हिम्मत ढूंढ रही थी मैं। हमेशा जब-जब आपको मुझे छोड़ कर जाते हुए देखती.. तो दौड़ कर आपको गले लगाने का दिल करता। फिर मैं पागल सोचती.! कोई बात नहीं जब आपके घर आऊंगी तो आपके साथ बहुत सारा समय बिताऊंगी। फिर जब घर आती तो न जाने किन्ही कामो में लग जाती। फिर वापिस आपसे दूर अपने ससुराल आते समय ये एहसास होता के इस बार भी...इस बार भी कुछ बहुत जरूरी पीछे छूट गया है। जो बातें करनी थी..अभी भी करने को रह गई है, आपको गले लगाना रह गया है,

आपसे आपका पसंदीदा गाना बैठ कर सुनना था। पर यही सोच कर फिर से ये बात भी जाने दी। कोई बात नहीं अगली बार आऊंगी तो फिर सुन लूंगी, बैठ कर बहुत सारी बातें कर लूंगी।

बार-बार हर रोज कितना बुलाते थे आप मुझे फोन कर-कर के पास अपने। बेटा कुछ दिनों के लिए आ जाओ। अच्छा ज्यादा नहीं आ सकती तो फिर एक-दो दिन के लिए ही अपने बाबा के साथ रह जाओ। अभी तो दफ़्तर की छुट्टियां भी होंगी न? अब आ जाओ घर समय निकाल कर बेटा। अपने बाबा से मिल जाओ।

मैं कितना चीड़ जाती थी न बाबा आपके ऐसे बार-बार फोन करके मुझे मिलने बुलाने से। कितना गुस्सा करने लगती थी मैं। कई बार तो आपकी इस बात पर मैंने चिल्लाया भी है आपको। कई बार कुछ बातें भी कह दी थी। जो आज लगता है नहीं कहनी चाहिए थी।

'जैसे... आपको क्या बाबा आप तो अब रिटायर हो गए। आपको कहां जाना होता है। न आपके पास कोई काम रहता है। मैं यहां बहुत व्यस्त रहती हूँ। जब समय मिलेगा आ जाऊंगी पक्का। आप यूं बार-बार मुझे फोन करके एक ही सवाल मत किया करें। मैं घर कब आ रही हूँ.? जब आऊंगी तब आपको पता चल जाएगा।'

लेकिन आपने तब भी गुस्सा नहीं किया। आप तब भी मुस्कुराकर ही जबाव देते थे।

कितना निराश करती थी न मैं आपको..? कितनी बेमतलब की व्यस्तताएं आपको गिनाने लगती थी। ऐसे जैसे आपने तो कभी घर संभाला ही न हो, कभी कोई काम किया ही न हो।

हां पर एक बार जब आप मुझसे थोड़ा सा...बस थोड़ा सा नाराज़ हुए थे। तक मुझे आपकी कही बातों का बहुत बुरा लगा था। कैसे आपने बड़े आराम और इत्मीनान से कह दिया था।

अब से आप मुझे बार-बार घर आने का नहीं कहेंगे। जब आपका मुझसे मिलने का मन होगा आप मेरे पास आ जाएंगे। हालाकि फिर भी आप मुझसे पुछे बिना कभी मुझसे मिलने नहीं आए। हमेशा मेरी व्यस्तता को समझा है आपने। फिर भी मैं पागल मां से आपकी शिकायत कर देती थी।

'मां देखो न बाबा हर रोज एक ही बात कहते है, बस घर आ जाओ। अब आप ही बताए न भला कैसे यहां अपने सास, ससुर, पति, दो बेटियों को छोड़ कर हां..हां..कुछ दिनों के लिए ही सही..आपके पास आ जाऊं।'

इतना आसान नहीं था बाबा। आपने ही तो कहा था न। एक बेटा अपना घर बनाता है। अपनो का भरन पोषण करता है। उसकी मर्यादा का पालन करता है। पर एक बेटी..बेटी दो घरों की नींव होती है। बेटी वो चौखट होती है, जिसमें दो घरों के दरवाजे बने होते है। और उसके लिए उन दोनों दरवाजों की अपनी मर्यादाएं होती है। उन दोनों घरों के सम्मान की रखवाली बेटियों को ही करनी होती है। फिर आप भी बताएं..? भला कैसे मैं ज्यादा दिनो तक अपना घर छोड़ कर आपके पास रह सकती हूँ?

कितनी भी कोशिश कर लूं..दफ़्तर से छुट्टी मिलने पर भी। आपके पास चाह कर भी ज्यादा दिनो के लिए नहीं आ पाती। अब तो मां भी कहने लगी है। समय निकाल कर घर हो जाया करो।

जानते हो बाबा दिन में एक बार ही सही काम के बीच ये ख्याल मन में आ ही जाता है। सोचती हूँ..आप दोनों को अपने पास बुला लूं। सब साथ रहेंगे। यहां शहर में.. मेरे घर पर। ऊपर का कमरा भी खाली है। आप दोनों के रहने की वहां अच्छी व्यवस्था हो जाएगी। पर जब-जब भी मैंने आप दोनों से ये बात कहीं। तो आप दोनों ने ही मुझे ऐसा करने से मना कर दिया। वो भी ये कह कर के बेटी के घर में कौन से मां-बाप रहने जाते है।

अब आप ही बताए न बाबा जब मैं बचपन से आपका बेटा थी। और अपका घर आपके इस बेटे का था। तो आज आपके बुढ़ापे में मेरा घर बेटी का घर कैसे हो गया। मतलब मैं आपके घर से बिदा हो गई तो बेटी हो गई। जब तक मैं आपके साथ आपके घर में रहती थी तो मैं आपका बेटा थी। मेरे इनके साथ सात फेरे होने तक भी तो मैं आपका बेटा ही थी। फिर अब क्या हुआ बाबा.? अब मैं बेटी क्यों हो गई.?

आपने ही मुझे हमेशा बेटों की तरह रहना सिखाया है। इसलिए तो आज मैं घर बाहर के सारे काम कर लेती हूँ। और मैंने पूरी जिम्मेदारी से अपना घर भी सवारा हुआ है। पर आप दोनों, आप दोनों भी तो मेरी ही जिम्मेदारी है न। आपका ख्याल मैं नहीं रखूंगी तो कौन रखेगा। एक तो आप दोनों की जिद्द भी मुझे गुस्सा दिलाती है। ऐसा थोड़ा होता है।हमेशा आपकी ही बात मानी जाए। इस बार मैं कुछ नहीं सुनूंगी ऐसा ही सोचा था मैंने।

अंग्रेजी साल का पहला महीना है। ठंड भी कड़ाके की है। ऐसी ठंड में तो रजाई से भी निकलने का मन नहीं होता। इन दिनों में आपके पास गांव आने की हिम्मत कौन करे। सोचती हूँ इस ठंड से कुछ राहत मिले और बसंत आए तो आप दोनों से मिलने आऊं। और इस बार कुछ

सुनना ही नहीं मुझे आपकी। इस बार आप दोनों.. यहां मेरे घर मेरे साथ रहेंगे और हम बहुत सारी बातें करेंगे। अब तो बस ये जैसे-तैसे जनवरी की ठंड से छुटकारा मिले।

पता नहीं इस ठंड में आप दोनों कैसे एक दूसरे का ख्याल रखते होंगे। अलाव की आंच भी कब तक आप दोनों को नर्मी दे पाती होगी। घर के सारे काम-काज भी आप दोनों को खुद ही करने होते होंगे। इतनी ठंड में तो पानी भी जमने लगा होगा.. न चाहते हुए भी बाबा आपको बगीचे में सुबह-सुबह पौधो को पानी देने जाना पड़ता होगा। मां भी तो पानी गर्म कर करके झूठे बर्तन और गंदे कपड़े धोती होंगी। उस पर पूरे घर की साफ-सफाई भी तो करनी होती है। आप दोनों का तो सारा दिन काम में ही निकल जाता होगा न।

कैसी-कैसी बातें सोचते दिन निकल जाता है। करने कुछ बैठती हूँ..! बैठे-बैठे कुछ सोचने लगती हूँ। वो एक दिन भुलाना इतना मुश्किल है क्या.? कितने और प्रयास करूं मैं बाबा आपकी यादों से बाहर आने के। हर रोज सुबह उठती हूँ, सोचती हूँ...अब से पुरानी यादों में नहीं उलझूंगी। पर फिर घर के जिस कोने में नजर पड़ती, जिस चीज पर नजर पड़ती..आपकी कहीं, बताई हर बात याद आने लगती। कैसे आपने मुझे घर के हर कोने को, हर चीज को सवारना शिकाया है। कैसे आप मुझे घंटों बैठ कर अपने घर को बनाने के किस्से सुनाया करते थे। आपने एक-एक ईंट इस घर की खुद अपने सामने लगते देखी है। कैसे आप ऐसी भरी ठंड में भी खुद सुबह-सुबह आ कर इन दीवारों को सिंचा करते थे। ताकि इनकी मजबूती बनी रहे। यहां की हर चीज बाबा आपकी यादों से भरी हुई है।

बगीचे का वो एक गुलाब का पौधा जो आपने पिछले बसंत बड़े प्यार से लगाया था मुरझा गया है। आम के पेड़ में लिपटी मधुमालती की बेल ने भी उदासी में बढ़ना छोड़ दिया है। घर के बाहर दरवाजे के किनारे पर लगे अपराजिता के फूल ने तो कब से खिलना बंद ही कर दिया है। अब इस घर में पहले सी महक नहीं रही। दीवारों में दरार दिखने लगी है, सीलिंग पर लगा पंखा भी साफ करने वाला कोई नहीं है। इस साल तो बारिश का पानी भी आंगन में भर गया था। आंगन के कोने में बनी नाली भी सूखे यहां-वहां बिखरे पत्तों की वजह से जाम हो गई थी। इस गर्मी किसी ने इन सूखे पत्तों को..सुखी गिरी पेड़ की डालियों को भर कर ठंड के लिए इकट्ठा नहीं किया।

अब इतना सन्नाटा सा रहता है सारे घर में। कोई कितनी किससे बात करे..! क्या बात करे.? ये सोचने में ही समय निकल जाता है। सब डरते है के जो भी बात करेंगे, जहां से भी शुरू करेंगे, वो सारी बातें घूम कर आपके पास आ ही जाएगी। सभी का मन उदास है। सभी उस बीते एक दिन की बात बार-बार करते है। सब जानते है..क्या हुआ, कैसे हुआ, बस मानने को तैयार नहीं।

मैं सोचती हूँ सबको समझाऊं पर फिर अपने में ही उलझ जाती हूँ। क्या कहूँ सबको.! यही सब तो होना था। या ये के कितनी बार आपके बुलाने पर भी घर नहीं आई मैं।

अभी कुछ दिनों पहले ही तो बाबा ने फोन पर कहा था। घर आ जाओ उन्हें मेरी याद आ रही है। ज्यादा समय के लिए न सही। कुछ दिनों के लिए ही आ जाओ बेटा। कैसे वे-मन से बिना सोचे समझे झटकार दिया था मैंने उनको। उनकी बातों से कितना चीड़ गई थी मैं। उस गुस्से में

मैंने उनसे दो दिनों तक बात तक नहीं की थी। पर उन्होंने भी कुछ नहीं कहां। न ही वापिस डाटा मुझे।

उसके बाद..उन्होंने कुछ भी तो नहीं कहां। मेरा भी अपनी व्यस्तता में इस बात से ध्यान हट गया के बाबा ने दो दिनों से मुझे अपने घर नहीं बुलाया। मैं पागल सोचती थी के चलो अच्छा है। बाबा ने अब आ जाओ-आ जाओ कि रट लगाना बंद कर दिया है।

मेरी उनसे आखरी बार की बात थी। जो मुझे हमेशा याद रहेगी। उन्होंने बस मुझसे मेरा हाल पूछा था। मैंने भी सब ठीक है बाबा.. बाद में आराम से बात करती हूँ आपसे, कह कर फोन रख दिया था।

मुझे वो दिन हमेशा याद रहेगा। कड़ाके की ठंड थी..हल्की बारिश भी थी.. मैं सुबह से अलाव जला कर अपने काम में लगी हुई थी। खाना बनाने के बाद रसोई में बर्तन समेंट रही थी। रसोई के दरवाजे के बाहर दाहिनी तरफ रखी छोटी अलमारी के ऊपर मेरा फोन रखा-रखा कितनी बार बज गया..। उसकी आवाज पर ध्यान ही नहीं गया मेरा। उस तरफ से मां बार-बार फोन किए जा रही थी। और यहां मैं हर बात से वे-खबर बर्तनो के शोर में ही मन लगाए अपना काम किए जा रही थी।

इतने सारे शोर एक साथ थे..यहां बर्तनो के शोर के साथ चूल्हे पर चढ़े कुकर में भी सीटी आ गई थी। बाहर सड़क पर दूध वाला भी गाड़ी का हॉर्न बजाए जा रहा था...उस पर उसकी ऊंची तीखी आवाज भी। ऐसा लगता है सुबह-सुबह किसी से लड़ कर आता है।

'दीदी दूध ले लो निकलना है मुझे भी, जल्दी आ जाओ दीदी।'

ऊपर से ये बाजू से आते कुत्ते के भौंकने का शोर।

अरे....आज तो हद्द ही हो गई। इन दोनों लड़कियों ने भी सुबह से घर सर पर उठाया हुआ है। किसी का जूता नहीं मिल रहा तो किसी के बालों की रिबन। रसोई के काम से निपटूं तो इन्हें देखूं मैं। दोनों की आवाज एक साथ आ रही है। समझ ही नहीं आ रहा क्या कह रही है। हां-हां बेटा पता है मुझे आज 26 जनवरी है। स्कूल की प्रतियोगिता में तुम दोनों ने भी अपना नाम दिया है। जरा कुछ देर रुको न आती हूँ। सब ढूंढ कर देती हूँ। ये बच्चे भी......

फिर अचानक से इतने गहरे शोर को चीरते हुए एक आवाज आती है...ये आवाज इनकी थी..क्या हुआ इन्हें अब..? इस तरह से ये पहले तो मेरा नाम नहीं पुकारते थे..! हां आती हूँ अभी.. कह कर मैं अपने काम में लग गई..। फिर पीछे से मेरी बड़ी गुड़िया ने आ कर कहा..

मां.

मैं अपने काम में मग्न उसकी आवाज को सुन नहीं पाई। उसने फिर जोर से आवाज दी और मुझे आ कर पीछे से गले लगा लिया। मुझे लगा शायद इसकी छोटी से किसी बात पर लड़ाई हो गई है। मैं उसे समझाने को पलटी ही..तो रसोई के दरवाजे पर खड़ी मेरी सासु मां ने होले से हल्की आवाज में कहा.

'तुम सारा काम छोड़ दो मैं कर लूंगी। कुछ जरूरी सामान ले लो। तुम्हे बच्चों को ले कर अपनी मां के घर जाना है। कुछ जरूरी काम है। और तुम्हारा फोन कहां है इतनी देर से तुम्हारी मां फोन कर रही है। अपना फोन क्यों नहीं उठा रही तुम.?'

कितने सवाल होते है ऐसे मौके पर। लेकिन जवाब किसी के पास नहीं मिलता। मैंने सबसे पूछा क्या हुआ..? यहां तक कि मां को भी कितनी बार फोन लगाया। लेकिन हर बार मां बाबा को छोड़ कर किसी न

किसी यहां-वहां के व्यक्ति ने उनका फोन उठाया। हर बार जिसने भी फोन उठाया सबसे पूछा मैंने के क्या हुआ मां कहां है.? बाबा कहां है.? पर किसी ने सही जवाब नहीं दिया। उस दिन मुझे बाबा की कहीं एक बात पर यकीन हुआ।

'दुनिया में लोग बातें बनाना बहुत जानते है। लोगों के बातें बनाने के तरीखों से ही ये दुनियां चल रही है।'

इतनी ठंड में जहां रजाई से निकलना भी मुश्किल होता है। उतनी ठंड में मैं अपनी दोनों बेटियों को ले कर इनके साथ दूर शहर से अपने गांव की तरह सफर कर रही थी। ये सफर तो मैं इतने सालों से कर रही थी। पर आज न जाने क्यों ये जरूरत से ज्यादा लंबा लग रहा है। रास्ते में पड़ने वाले हर मंदिर से ट्रेन में बैठे-बैठे ही प्राथना करती जा रही थी मैं। न जाने मैं पागल उन सभी से क्या मांग रही थी। ऐसी कोई बात तो सुनने में भी नहीं आई थी मेरे।

फिर भी मन में डर ने अपना डेरा डाल हुआ था। मैं हर कुछ देर में कभी मां को कभी बाबा को फोन लगाती। और हर बार कोई अलग शख्स उस तरफ से फोन उठाता। मैं फिर से वही सवाल करती.! वो फिर अजीब सा, उलझनों भरा.. जवाब देता या मेरी आवाज कट रही है कह कर फोन काट देता।

कितना छुपाने की कोशिश कर रही थी मैं। कितना अपने मन को मनाया था मैंने। मेरी छोटी गुड़िया पूरे रास्ते मुझे दिलासा देती रही।

‘मां सब ठीक है आप रो मत।'

पर इस मन का क्या करूं जो मां बाबा की आवाज सुनने को तरसा जा रहा है। अभी कल शाम ही तो दोनों से बात हुई थी मेरी। और अभी

सुबह-सुबह मां ने कितने फोन किए मुझे पर अब..! अब जब मैं फोन कर रही हूँ तो वो बात क्यों नहीं कर रही।

इस बात का जवाब मुझे घर पहुंचते ही मिला। जब मैंने अपने घर की गली के मोड पर अपने अनगिनत जान-पहचान के लोगों को देखा। इतनी भीड़..! इतनी भीड़ तो मेरी शादी के समय भी नहीं थी। कितनी दूर-दूर से सब आएं है। इनमें से तो कितने ऐसे से जिनसे सालों से मिलना नहीं हुआ हमारा। सब मेरी तरफ निराशा से देख रहे है। इन सबकी नजरें मेरी तरफ ही क्यों है? इनकी नजरें बता रही है। वो सब यहां घर के बाहर बैठ कर सिर्फ मेरा ही इंतेज़ार कर रहे थे।

भारी सी, आधी चलती सांसे, आंखों में बेचैनी, हलक पर जान साधे हुए, लड़खड़ाती चाल में, भरे हुए कंठ से मैंने बाहर खड़े लोगों से पूछा.. मां कहां है..! बाबा..बाबा..! कहते हुए घर के दरवाजे की तरफ मां पर नजर पड़ी मेरी। मैं दौड़ कर उनके पास गई उनका हाल पूछा..पूछा बाबा.. मां बाबा कहां है। उनको तलाशती मेरी नजरों ने सब तरह देखा।

आंसुओं से आंखों में बनी पतली सी पानी की परत से आस-पास का सब धुंधला सा दिखने लगा था। मैं पागलों की तरह बचपन के जैसी जोर से चिल्लाई बाबा...और रुक गई इस उम्मीद में के दूसरी तरह से हर बार की तरह बाबा की आवाज आएगी। वो भी जोर से आवाज लगा कर कहेंगे.! क्या हुआ मेरी गुड़िया.? पर कोई आवाज नहीं आई। सबने कहां संभालो खुद को। पर मैं किसी से नहीं कह पाई। अब संभालने को बचा क्या है। अब क्या संभालूं मैं। बाबा के बिना सब कैसे संभल सकता है।

वो समय न कुछ कहने का था न कुछ सुनने का। सब अपने-अपने काम में लगे थे। मां भी बेसुध एक कोने में चुप-चाप बैठी थी। फिर सब

अपना-अपना काम करके चले गए। जिसे मैंने कुछ दिनों पहले हस्ते खेलते बात करते देखा था। वो 6 फुट का एक इंसान कैसे 10X10 cm की एक थैली में बन सकता है। ये सवाल मेरे मन में आज भी है। आज भी मैं न चाहते हुए भी उस दिन की बातों में खो जाती हूँ। और रसोई के चूल्हे पर चढ़े बर्तन जला बैठती हूँ। कभी हड़बड़ी में तेज जलने की बू आने पर उन्हीं बर्तनों को बिना कपड़े के छू कर अपना हाथ जला बैठती हूँ।

अपने ही किए कामों पर गुस्सा आने लगा है अब। वो एक फोन जिसमें रोज घर आ जाओ बेटा सुन-सुन कर मैं पक्क जाती थी, चीड़ जाती थी। आज बार-बार उसी नंबर पर फोन लगा कर एक आवाज सुनने की कोशिश करती हूँ। हर बार इसी एक उम्मीद से फोन लगाती हूँ।

'कभी उस तरफ से बाबा की आवाज आएगी। और वो मुस्कुराते हुए कहेंगे, बेटा थोड़ा समय निकाल कर सही कुछ दिनों के लिए घर आ जाओ। अपने बाबा के पास नहीं आओगी। इस साल बगीचे में बहुत स्वादिष्ट आम लगे है मीठे-मीठे, रसीले और बहुत सारे भी है। उन्हें खाने ही आ जाओ। बैठ कर बाप बेटी बचपन की तरह खूब सारे आम खाएंगे। कुछ दिनों को घर आ जाओ बेटा।'

पर ऐसा कुछ नहीं होता। हर बार निराश होती हूँ मैं। पता ही नहीं चलता कब काम करते-करते पुरानी यादों में खो जाती हूँ। बचपन से सुनी बाबा की आवाज कब मन में ही गूंजने लगती है। उनकी कहीं बातें याद आने लगती है, मुझे पता ही नहीं चलता। उसके बाद कोई और आवाज कानों तक नहीं आती। आज बड़े दिनों बाद इस आवाज के बीच से एक और आवाज सुनाई दे रही है। ये भी किसी जाने पहचाने की आवाज है। ऐसे तो मुझे मेरे नाम से बाबा ने कभी नहीं बुलाया। वो

हमेशा मुझे गुड़िया कहां करते थे। ये अलग सी आवाज उसमें मेरा नाम और जोर से सुनाई देने लगा है। जैसे कोई मेरे करीब आता जा रहा है।

'ऋतु...ऋतु कहां खो गई चूल्हे में दूध चढ़ा है। देखो तो कहीं फिर से जल न जाए। तुम भी न कहां खो जाती हो रोज-रोज। ऐसे कैसे चलेगा..इतना नुकसान हो जाता ही इससे। तुम्हारे भी दफ्तर जाने का समय हो गया है। बच्चों को मैं स्कूल छोड़ आता हूँ। शाम को मिलते है। अपना ख्याल रखा करो।'

इतना कह कर ये भी चले गए। और मैं भी बीती यादों से बाहर आ गई। ज्यादा दिन तो नहीं हुए अभी बाबा को हमसे दूर गए हुए पर उनके बिना रहना बहुत मुश्किल है। या यूं कहूँ के उनके बिना रहने का दिल नहीं करता। मां भी खुद को कैसे संभाल पाती होगी। सबके सामने तो वो बहुत हिम्मत से रहती है। पर जब अकेले में बाबा की बनाई हर चीज पर उनकी नजर पड़ती होगी? तो वो खुद को कैसे संभाल पाती होंगी.? मुझसे तो अपना ही आप नहीं संभाला जाता अब। कहीं भी बैठी हूँ, किसी के भी साथ हूँ..बाबा की यादों में खो ही जाती हूँ।

उनसे कितना कुछ कहने को था..पर कभी कहां ही नहीं। बाबा भी कितना कुछ कहना चाहते होंगे मुझसे। पर मैंने वो भी नहीं सुना।

कभी इन यादों को गर हकीकत में बदल पाई। तो बाबा सच कहती हूँ...आपके साथ बैठ कर बहुत सारी बातें करूंगी मैं। और आपकी सभी अनकहीं बातें सुनूंगी भी। और हां एक और बात अगर मैं फिर कभी उठ कर जाने की बात करूं या कोई जरूरी काम याद दिलाऊं। तो आप डांट कर अपने पास ही बैठा लेना मुझे। और जब तक आपकी बात पूरी न हो जाए मुझे आपसे दूर नहीं जाने देना।

जानती हूँ लोग सही कहते है। ये सब अब बातें है। जिनसे मैं खुद को दिलासा दिलाती रहती हूँ। पर मैं इसके सिवा और कुछ कर भी तो नहीं सकती। न बाबा के पास जा सकती हूँ और न ही उन्हें अपने पास ला सकती हूँ। सोचो किस मुंह से मैं उसने कहूँ के वापिस आ जाओ बाबा। अगर उन्होंने पलट कर ये पूछ लिया के क्यों.? तो क्या कहूँगी उनसे..?

जब वो साथ थे तब भी तो मैं उनसे दूर थी। आज वो मुझसे दूर है तो मेरा मन तरस रहा है। इतने साल जो उन्होंने सिर्फ मेरी आवाज सुन कर बिताए। वो कितना तरसे होंगे मुझे देखने के लिए, मुझसे बैठ कर बात करने के लिए। मेरी छोटी-छोटी नादानियां देखने के लिए। तब मेरे पास इन सब के लिए समय नहीं था। अब उनके पास इन सबके लिए समय नहीं है।

लेकिन फिर भी मैं हर रोज उनसे ऐसे बिना बताए चले जाने की शिकायत करती हूँ। हर रोज मन की यादों में उनसे लड़ती हूँ। फिर लड़ते-लड़ते रो पड़ती हूँ..उनसे मिन्नतें करती हूँ। बाबा एक बार बस एक बार आपकी आवाज सुननी है। आपका सबसे पसंदीदा गाना आपकी आवाज में सुनना है। बस एक बार गा दें न मेरे लिए बस एक बार बाबा।

"जिंदगी एक सफर है सुहाना....यहां कल क्या हो किसने जाना"

"सहमे से मौसम में जब हम घर गए,
एक फोन आया और हम डर गए,
देखा जब पिता को चैन से सोते हुए,
हमारे हर ख़ाब वही पर मर गए।"

Completed

Chapter 7 - मेरी प्यारी गुड़िया... ऋतु ।

सफर की शुरुआत में लगभग सब सोचा हुआ था। कैसे-कैसे मौसम आएंगे, कैसे-कैसे हम उन्हें जीते आगे बढ़ते जाएंगे। फिर साल बीतने लगे। दिन कब जीते-जीते कटने लगे है, ये बात मन को समझ नहीं आई। अब तो सफर का अंत होने को है। जैसे-जैसे मौसम आते जा रहे है। हम भी उन्हें जीते जा रहे है।

अब हम बारिशों से शिकायत नहीं करते, न ही तेज धूप में गुस्सा आता है, और न इस कड़कड़ाती ठंड से चिढ़ होती है। किसी रोज कह पाए तो सबको बताएंगे। ये मौसम जीवन के हर पड़ाव की याद दिलाते है। और ये साल उम्र की। ज्यों-ज्यों ये मौसम बदलते है। हमारा जीवन भी अपना पड़ाव बदलता है।

जैसे बसंत से बचपन, ग्रीष्म से किशोर अवस्था, बारिश से जबानी और ठंड से बुढ़ापा। सब एक जैसा ही तो है। सबको ऐसे ही आगे बढ़ना है। बस एक ऋतु बीती तो दूसरी आ जाएगी फिर तीसरे फिर साल खत्म होते ही दुबारा से पहली ऋतु। पर एक इंसान के पास एक ही जीवन है और अंत भी एक है।

Chapter 7

कमर झुकने लगी है। जनवरी की तेज ठंड से शरीर में दर्द भी रहता है। मेरी गुड़िया तुम कुछ दिनों के लिए अपनी गुड़ियों के साथ यहां आ जाती तो इस बुढ़ापे को शिशिरती ठंड का एहसास ज्यादा नहीं होता। लेकिन जानता हूँ मैं ये तुम्हारे लिए मुश्किल है। तुम्हारा भी अपना घर-बार है। तुम्हारे साथ-साथ दामाद जी का भी दफ़्तर रहता है। फिर तुम्हारी दोनों बेटियों की भी पढ़ाई है। वो सब भी तो तुम्हे ही देखना होता है।

तुम्हारी मां को चलने के लिए सहारे की जरूरत पड़ने लगी है। मैंने कल ही तुम्हारे भेजे हुए पैसों से उन्हें एक छड़ी ला कर दी है। बहुत नाराज़ हो रही थी वो। बोली के अभी इतनी भी बूढ़ी नहीं हुई हूँ के सहारे की जरूरत पड़े।

कुछ दिनों से इतनी तेज ठंड है। में सुबह जल्दी उठ ही नहीं पाता। सुबह की चाय भी अब तुम्हारी मां ही बनाती है। बगीचे में इस ठंड कमल के फूल भी लगाए है। तुम्हारी मां ने अखबार में उन्हें घर पे लगाने की विधि पढ़ी थी। तब से पीछे पड़ी थी के इस साल कमल भी लगाएंगे। सो मैंने भी लगा लिए। जानती हो इस साल बगीचे में मैंने मटर और गाजर की खेती भी की है। तुम आती तो तुम्हे उनकी सब्जी और हलवा जरूर खिलाता। वो भी अपने हाथो से बना कर।

सोच रहा हूँ अपना कमरा और रसोई नीचे ही बना लूं। अब इस बुढ़ापे में ये चढ़ाओ चढ़ते उतरते सांस भूल जाती है, उस पर ये ठंड भी। छज्जे

में धूप भी कम-कम सी आती है। नीचे न उतरना पड़े इसके लिए दोनों बुड्ढा-बुड्ढी काम टालते रहते है। फिर भी दो तीन बार तो नीचे आना-जाना हो ही जाता है। नीचे ही रहने लगेंगे तो चढ़ने उतरने की समस्या नहीं रहेगी। एक बार बस पानी की टंकी देखने आना पड़ेगा। बाकी सारी व्यवस्था मैं और तुम्हारी मां नीचे ही बना लेंगे। फिर तुम्हारी मां का कहना है। ऊपर का मकान किराए पर दे दो। तो साथ कुछ और लोग रहने लगेंगे। फिर पूरे घर में अकेलापन नहीं रहेगा।

एक तो इस ठंड में पानी हाथो में लग जाए तो प्राण जाने जैसा है। मैंने तो खूब सारी लकड़ियों का इंतेज़ाम कर रखा है। मैं हर रोज सुबह-शाम अलाव जला लेता हूँ। सुबह तो इतनी फुर्सत नहीं रहती के तुम्हारी मां से ज्यादा बात कर पाऊं। पर शाम को दोनों बैठ कर साथ चाय पीते है। फिर तुम्हारी हमारी यहां-वहां की ढेरों बातें होती है। कुछ दिन पहले ही शाम बातों-बातों में चर्चा उठी।

ये अपने पास गली के नुक्कड़ पर प्रेम साहब रहते थे न। अरे जिनकी नौकरी PWD में थी। वो सरकारी दफ़्तर वाले। जो तेरे पैदा होने के बाद से जब भी घर आते, कहते रहते थे के एक बेटा तो होना ही चाहिए। बुढ़ापे का सहारा होता है बेटा तो। बेटियों का क्या है, व्याह के बाद अपने घर की हो जाएंगी। याद आया..? वही जिनके लड़के से तेरा हमेशा झगड़ा हो जाता था। वो भी सिर्फ इस बात पर के तेरे बाबा सबसे अच्छे है। पगली गुड़िया मेरी। अब तो याद आ जाएगा तुम्हे में किसकी बात कर रहा हूँ। उनके बेटे और बहु ने प्रेम विवाह किया था। वो भी तुम्हे याद होगा। तेरी शादी के दूसरे दिन उसकी शादी थी। अपनी जिद्द से अपनी मर्जी की दूल्हन लाया था वो। अब अपनी दुल्हन की जिद्द से उसने अपने दोनों बुड्ढा-बुड्ढी को घर से निकाल दिया। वो पिछले एक हफ़्ते से वृद्ध आश्रम में रह रहे है। कल तुम्हारी मां और मेरा विचार

बना। हम सोच रहे है उनको पीछे वाला कमरा जो आंगन से लग कर है., रहने को दे दूं। इस उम्र में कहां आश्रम में रहेंगे बेचारे। फिर हम दो वो दो अकेले-अकेले नहीं रहेंगे। अभी घर में हम दोनों की चार रोटी बनती है..फिर वो आ जाएंगे तो चार रोटी उनकी बनने लगेगी। उनके आने से तुम्हारी मां को भी एक साथी मिल जाएगा। पर खर्च की चिंता तुम मत करना..ऐसा नहीं के फिर ज्यादा पैसे भेजने लगो। अभी भी बहुत कर देती हो तुम अपने मां बाबा के लिए। उस पर अब तो इत्ती बड़ी अफ़सर बन गई है। चार बूढ़े मां बाप के नखरे मेरी गुड़िया हस कर उठाएगी., जनता हूँ मैं।

पर तुम अपनी मां की बातो का बुरा मत माना करो। वो भी क्या करे जब इस कड़ाके की ठंड में उसकी बुढ़ी हड्डियां एक जगह बैठे-बैठे जम जाए और अचानक उसको याद आए के चूल्हे में पानी गरम करने चढ़ाया है। तो उठ कर जाने में जान तो टूटती ही है। बस ऐसे में उसे लगता है के लड़का होता तो साथ रहता। उसकी शादी करते तो वो हमें छोड़ कर जाता नहीं किसी को अपने संग लाता। फिर जैसे तुम्हारी दो प्यारी सी शरारती बेटियां है। वैसे उसके भी तो बच्चे होते। उनमें से किसी को भी आवाज दे कर वो चूल्हे में चढ़ा पानी उतरवा लेती।

पर बेटा ये उदासी की बात नहीं है। कमियां तो परेशानियों में ही खलती है। तब जब जवानी थी। तो तेरे होने का सुख काफी था। फिर तू बिदा हो गई। अब तेरे व्यवस्थित होने का सुख है। और फिर ठंड तो ठंड है। जवानी की भी खलती ही है, और बुढ़ापे की भी। बस जवानी में हिम्मत जवाब नहीं देती।

वैसे इस ठंड और बुढ़ापे में समानता थोड़ी ज्यादा है। जैसे ठंड में अकड़न और रूखापन थोड़ा ज्यादा होता है। वैसे ही बुढ़ापे की हड्डियां

भी अकड़ जल्दी जाती है। उसपर टूटता हुआ शरीर व्यक्ति को थोड़ा ज्यादा रूखा बना देता है। फिर जैसे-जैसे ठंड बढ़ते-बढ़ते बीते मौसमों की याद दिलाती है। वैसे ही बुढ़ापा भी बढ़ते-बढ़ते बीते दिनों की याद दिलाता है।

वो गर्मी के लंबे दिन और दूध की कुल्फी, बरसात की गरमा-गरम चाय और पकोड़े, बसंत के रंग-बिरंगे बगीचे उस पर ताजे गुलाब की खुशबू। बीते जिंदगी के सारे मौसम प्यारे लगने लगते है।

हमारी जिंदगी भी तो इन मौसमों की तरह ही है गुड़िया। जैसे साल के अपने मौसम होते है। इंसान के जीवन के भी अपने मौसम है। शिशिरती ठंड सभी मौसमों में सबसे आखरी मौसम है। वो आते ही सबको अपने में समेंट लेती है। जैसे घर का कोई बुढा अपनी नई पीढ़ी को समेंटता है। फिर जाते-जाते नया मौसम दे जाता है। सब सोचते है के सारे नए फल-फूल बसंत में आते है। पर उन्हें लगाने की शुरुआत तो इस जाती हुई ठंड में ही होती है। वैसे ही एक बूढ़ा व्यक्ति अपनी आने वाली नई पीढ़ी को फलने-फूलने की सीख दे जाता है।

सभी मौसमों में एक ठंड ही है, जिसके लिए व्यक्ति सारा साल इंतेज़ाम करता है। फिर चाहे वो रजाई, स्वेटर हो या लकड़ियां या खाने-पीने की वस्तुएं। एक ठंड ही है जिसको सब आराम से बिताना चाहते है। जलते हुए अलाव के सामने बैठ कर एक गर्म चाय के साथ। कोई इस मौसम में ज्यादा कहीं आना-जाना नहीं चाहता। जहां जिस समय उसको नर्म-गर्म हवा से राहत मिले, वहीं रुक जाना चाहता है। इसी मौसम में सबको बौछारें खलती है। पानी की हल्की सी बूंद भी अंदर तक व्यक्ति को ठिठुरन से भर देती है। इसी मौसम में महबूब की करीबी भी ज्यादा प्यारी लगती है। उससे मिलने के बहाने भी अच्छे लगते है। उसके नखरे

उसका गुस्सा भी मीठा लगता है। जैसे मुझे ही देख लो। अब इस बुढ़ापे में तुम्हारी मां की बातें भी प्यारी लगती है। वो थोड़ा जोर से भी बोले तो कानों को उसकी आवाज चुभती नहीं है। पर गलती उसकी भी नहीं है। उसको थोड़ा कम सुनाई देने लगा है। इसलिए वो मुझसे भी ऊंची आवाज में बात करती है।

मैं भी सुन लेता हूँ। ये सोच कर के कम से कम वो मेरे साथ तो है। पर तुम उससे ये कहना मत..नाराज़ हो जाएगी। फिर अब इस उम्र में मुझसे उसे मनाया नहीं जाता। उसपर इस ठंड में तो बिल्कुल भी नहीं।

मैं अब सुबह-सुबह जल्दी उठ कर बगीचे से गुलाब तोड़ कर उसके लिए गुलदस्ता नहीं बना पाता। ठंड ही इतनी है। पर अच्छी बात ये है के वो समझती है सब। अब हम दोनों भी ज्यादा परेशानी नहीं लेते किसी चीज की। आराम-आराम से करते है सब काम। रात का खाना भी समय पर खा कर आराम करने चले जाते है। ज्यादा ठंड में यहां-वहां टाला-वटोली नहीं करते।

पर कितना भी करे, कितना भी जीवन भर इस बुढ़ापे के लिए व्यवस्था बना ले। कुछ न कुछ तो करने को रह ही जाता है। फिर ठंड तो हर साल आती है। इंतेज़ाम सब हो जाता है। ये बुढ़ापा पहली बार आया है। अब समझ आता है, जवानी में जो साधन जुटा लिया और जो साधन रह गया है। वो तो सब खुद को ही करना पड़ेगा।

कल से सारा सामान नीचे ले के जाना है। बाजू वाले घर पर एक किराएदार आया है। उसको बोला है मदद करने के लिए। जब सब सामान जम जाएगा तो PWD वाले बाबू और उनकी धरम पत्नी को भी मैं और तुम्हारी मां जा के ले आयेंगे। वो आ जाएंगे साथ रहने तो एक दो काम और ज्यादा हो जाया करेंगे। अभी हम दोनों कभी यहां बैठे

कभी वहां बैठे। सारा दिन घर नापते रहते है। इतने सालों में कभी नजर नहीं गई। पिछले महीने पुराना सामान छांटते-छांटते तुम्हारे सामान पर नजर गई। देखा मेरी गुड़िया कितनी सी इस दुनिया ने आई थी। और अब देखो उसकी भी दो गुड़िया है। तेरे खिलौने, तेरे कपड़े और न जाने क्या-क्या। सब रखा है तेरी मां ने संभाल कर। देख तेरी मां भी कितनी चालाक है.! वैसे तो बहुत बेटा-बेटा करती थी। पर प्यारी तू भी उसे मुझ जितनी ही है।

बहुत साल इंतेज़ार किया था हमने तेरे आने का। कितने प्रयास किए थे हमने तुम्हे इस दुनिया में लाने के लिए। समय ने भी हमको फिर निराश नहीं होने दिया। जैसे हर साल ऋतुओं की शुरुआत बसंत से होती है। उस साल तेरे आने से हमारे जीवन की भी नई शुरुआत हुई थी। तेरे आने से हमको पता चला।

कैसे हर साल नन्ही कलियां खिलती है, बागों में कैसे नए फूल आते है। जैसे उस बसंत नए फूल आने से मेरे बाग में खुशबू ही खुशबू बिखरी हुई थी। वैसे ही तुम्हारा हमारी जिन्दगी में आने से हमारा जीवन महक उठा था। वो दिन आज भी मेरी पुरानी सभी यादों में सबसे खास है।

उस साल ऐसे ही सर्दी का मौसम अपने आखिरी दिनों में था। वसंत ऋतु आने में थी और उसकी झलक इन बागों में दिखने लगी थी। मैं जब भी उन दिनों के बारे ने सोचता, तो अपने मन के भीतर ही उन दिनों में पहुंच जाता। फिर तेरे मन में चल रहे कुछ विचारों को अपनी सोच से भिन्न पाता। तुम अब तक यही सोचती हो न, के मुझे कैसे पता चला था के तुम क्या सोचती थी।

तुम मेरा ही तो अंश थी। मैं तुम्हारी आहट तब भी महसूस कर लेता था, जब तुम इस दुनिया में आई भी नहीं थी। तो मैं तुम्हारी सोच को कैसे

न जान पाता। इसलिए भी कुछ तुम्हारे बाबा ने उस साल बगीचे में फूल ज्यादा लगाए थे। और तुम्हें वो सब बहुत प्यारे लगे थे। ये जान कर तुम्हारे बाबा कितने खुश हुए थे जानती हो। भले तुमने खुद से तब कुछ कहा नहीं था। पर तुम क्या सोचती थी, मैं सब जानता था।

कितना डर था तुम्हें एक बेमतलब सी बात का। मैंने कभी ये सोचा ही नहीं था के मुझे बेटा चाहिए या बेटी। पर तुम्हारे मन में ये ख्याल आया मुझे इस बात का दुःख था। शायद मैं एक पिता के रूप में इतना सफल नहीं रहा।

याद है बचपन में तुम्हारे मन में ये बात घर कर गई थी। अगर तुम एक लड़का होती, तो मैं और तुम्हारी मां तुम्हे इतना रोकते-टोकते न। सच कहूँ कुछ दिनों तक तुम्हारी बात सुन कर मैं समझ ही नहीं पाया। क्या कह कर मैं तुम्हे ये समझाऊं के मेरे लिए तुम मेरा अंश हो, मेरी जिंदगी की बेशकीमती कमाई सब तुम ही हो। हा सामाजिक रूप से वो अंश एक बेटी के रूप में मेरे सामने है। और ये समाज बेटों को ज्यादा प्राथमिकता देता है। पर इसका ये मतलब कभी नहीं था, के तुम मेरे लिए समाज के सभी बेटों से कमतर हो।

हा ये बात सच है और मैं जनता हूँ। इस बात से तुम मुझसे आज तक नाराज़ होगी। क्यों मैंने तुम्हे कभी बेटों की लड़कों की बराबरी नहीं करने दी। या उनके जैसा कुछ भी नहीं दिया तुम्हे।

जानती हो..क्यों मैंने तुम्हे लड़कों सी आजादी नहीं दी। क्यों मैंने तुम्हे उस आसमान में उड़ने नहीं दिया जहां सभी लड़कों की बराबरी कर रहे है। या मैंने तुम्हे क्यों बचपन से अपना बेटा नहीं कहां। तुम बहुत चीड़ जाती थी न इस बात से। क्यों मैं तुम्हे अपनी प्यारी गुड़िया बुलाता हूँ। क्यों मैं तुम्हे कभी बेटा नहीं कहता। जबकि तुम्हारी मां अक्सर तुम्हे

बेटा कह कर बुलाती थी। पर मैंने.. मैंने हमेशा तुम्हे अपनी प्यारी बेटी ही माना। तुमने भी बस मुझसे हमेशा उस बात की शिकायत ही की। कभी अपने बाबा से पूछा नहीं, के मैं ऐसा क्यों करता हूँ। पर आज...

गुड़िया आज सुबह से तेरी बहुत याद आ रही है।

कल 26 जनवरी है। तुम्हारी दोनों बेटियों ने भी स्कूल की प्रतियोगिताओं में भाग लिया होगा। वैसे ही तुम भी बचपन में हमेशा स्कूल की हर प्रतियोगिता में भाग लेती थी। हर प्रतियोगिता के कई दिनों पहले से तुम सामान इकट्ठा करने लगती थी। याद है हमेशा मुझे दफ्तर से घर आते ही दरवाजे में पकड़ लेती थी तुम।

'नहीं बाबा आप नहीं थके है। अभी बाजार बंद नहीं हुआ है। आप तो मेरे सबसे ताकतवर बाबा हो। चलो न अभी बाजार चलते है। रविवार तक तो बहुत देर हो जाएगी। फिर इतना सारा सामान लेना है। सब एक दिन में नहीं होगा न बाबा..चलो न...चलो...। लाओ ये अपना सामान मुझे दो मैं अंदर रख कर आती हूँ., फिर चलते है।'

'बाबा आप फिर से चाय पीने बैठ गए। ये आपकी तीसरी चाय है। अब बस भी करो न., मेरे साथ इस गुलदस्ते पर फूल लगाओ। कल मुझे ये स्कूल की प्रतियोगिता में ले के जाना है।'

'अरे...ये क्या किया..! आपने तो पूरा कागज खराब कर दिया। आपने तो कहा था आपको कागज के फूल बनाना आता है।'

'बाबा मजाक नहीं न। मुझे इस प्रतियोगिता में सबसे अब्बल आना है।'

जानता था बहुत बेकार सलाह दी थी मैंने। अपने बगीचे के फूल उस टीन के छोटे से डब्बे जैसे गुलदस्ते में लगाने की। पर तुम ने भी तो हद्द की थी। मेरी हर बात मान लेती थी। ऐसा भी भला कोई करता है क्या?

कितना हसी थी तुम्हारी मां हम दोनों पर। इतना के उसको ठसका तक लग गया था। तुम कैसे डर कर उसको खांसते देख दौड़ कर रसोई से पानी लाने गई थी। फिर वापिस आते समय कुर्सी पर टकरा कर पैर में चोट भी लग ली थी तुमने। तुम्हे उस चोट से थोड़ा तो दर्द हुआ था। पर फिर भी कितना खुश थे उस दिन हम तीनों। इतना हसा था मैं उस दिन..,के हस्ते-हस्ते थक गया था। उस पर तुम और तुम्हारी मां दोनों मिल कर मुझे गुदगुदी करने लगे थे। बहुत डांट खाई थी तुम दोनों ने मुझ से। फिर भी दोनों की शरारतें कम नहीं हुई।

उस दिन शाम घर में खाना भी नहीं बना। तुम्हारी मां का पसंदीदा डोसा खाने गए थे हम। उसके बाद तो फिर लंबे समय तक ऐसे बाहर जाना नहीं हुई। फिर और लंबे समय तक..फिर..फिर तो जैसे सालों बीतने लगे। पर मेरी बुद्धि भी देखो ये बात थोड़ी कहनी थी तुमसे, ये सब तो तुम्हे भी याद है। कहना तो वो है जो तुम्हे भी नहीं पता।

जब बसंत की बेला मैं हस्पताल की नर्स ने तुम्हे मेरी गोद में रखा था। तब मेरे मन में उत्साह की कोई सीमा ही नहीं थी। कुछ देर को तो मैं ठहर ही गया था। मेरे हाथो की कपन तुम्हे भी महसूस हुई होगी। जब तुमने अपने नन्हे से हाथो से अपनी आंखों को होले से मसल कर मेरी तरफ आधी बंद छोटे-छोटे तारों सी चमकती आंखों से देखा था। तो मेरे कितने सारे सपने एक साथ पूरे हो गए थे। ये बात मैं बता नहीं सकता। मेरा जी चाह रहा था। उसी समय हा-हा उसी समय तुम मुझे बाबा भी कह दो। एक बार अपनी तोतली जुबान से पुकारो मुझे।

मेरी आंखों के आंसू जब मेरी पलकों से संभाले न गए, और वो तुम्हारे कोमल सुर्ख गुलाबी चेहरे पर जा गिरे। तो कितना डर गया था मैं। कहीं मेरी गुड़िया को कुछ हो न जाए। मेरी इतनी नन्ही सी जान क्यों उठाए

मेरे इन आंसुओं का भार। मैं अपनी इस जान को कभी पता नहीं लगने दूंगा के आंसू क्या होते है। तुम्हारी मां इतना लड़ी थी मुझे। बार-बार एक ही रट मुझे भी दो मेरी बेटी। अरे..! मेरी बेटी..मेरी बेटी क्या होता है। उसके पास तो तुम पिछले 9 महीने से थी। अब भी तुम उसे ही चाहिए। ऐसे थोड़ा होता है। अभी तो मेरी गुड़िया अपने बाबा के पास रहेगी। मां के साथ रहने का कोटा पूरा हो गया।

पर ये बात बस मजाक की है। जब मैं तुम्हे देखने को इतना व्याकुल हो सकता हूँ। तुम्हे अपनी गोद में ले कर इतना ममतामई हो सकता हूँ। तो तुम्हारी मां के साथ तो तुम पिछले 9 महीने से थी। उसके मन की दशा का व्याख्यान मैं नहीं कर सकता। हा पर उसकी बेचैनी तुम्हे एक नजर भर कर देखने की, मैं महसूस कर सकता था।

तुम्हारे आने से हम दोनों के रिश्ते की जड़ और ज्यादा गहरी और मजबूत हो गई थी। उस दिन के बाद से मैंने कभी तुम्हारी मां पर गुस्सा नहीं किया। और न कभी उससे ऊंची आवाज में बात की। मैं हमेशा सोचता था के अगर मैं एक अच्छा पति न बन पाया। तो आने वाले समय में अपनी गुड़िया के लिए एक अच्छा जीवन साथी कैसे ढूढूंगा। क्या देखूंगा मैं किसी लड़के में तुम्हे उसे सौंपते समय।

शायद इसलिए जब तुमने मुझे शहर के अपने किसी दोस्त से मिलवाया था। तो मेरा मन नहीं लगा था उस पे। पर तुम्हारी जिद्द के आगे मैंने कुछ कहा नहीं। मुझे लगा भी था उससे मिल कर। वो मेरी गुड़िया को खुश नहीं रख पाएगा। पर जब तुमने कहा वो अच्छा है। तो मुझे लगा तुम समझदार हो। सब देखा भाला है तुमने। तुम अपना ख्याल रख सकती हो। पर जो हुआ अच्छा हुआ। बाद में बड़े से गड्ढे में गिर जाने के दुख से, पहले की लडखडाहट अच्छी होती है। तुमने भी उन हालातो

को समझा। सही-गलत का सही चयन किया। तुम्हारी उस हिम्मत को देख तुम्हारे बाबा को कितना गर्व महसूस हुआ था। ये मैंने पहले तुमसे कभी नहीं कहां।

अक्सर मन करता था। तुमसे कहूँ के तुम्हारे बाबा को तुम्हारे लिए हर फैसले पर नाज है। पर फिर मन में ये बात आती के कहीं तुम्हे उन दिनों की याद न दिल दूँ। और तुम फिर से कुछ देर को ही सही उदास न हो जाओ।

समझता हूँ मैं और जनता भी हूँ। तुम भी कभी-कभी ही सही उस लड़के को याद कर लेती होगी। उसके दिए पुराने तोहफ़े भी तुमने जो फेक दिए थे। कभी तो तुम्हे उसकी याद दिलाते होंगे। फिर तुम अब उसी शहर में रहती हो। कभी किसी गली, चौराहे में उससे टक्कर भी हो ही जाती होगी। पर तुमने सब बहुत अच्छे से संभाला हुआ है। ये देख कर मैं निश्चिंत रहता हूँ। मेरी गुड़िया बहुत बड़ी हो गई है। अपना घर अपनी जिम्मेदारिया संभालना जानती है।

उसने इतना सब सहने के बाद भी अपने मन को बांधा हुआ है। वो सबसे हस के मिलती है, खुश रहती है, सबका ख्याल रखती है। पर अपना..अपना ख्याल रखने के लिए उसे आज भी अपने बाबा की डांट लगती है। पर ये बात मुझे आज भी संतोष देती है। तुम इतनी बड़ी होने के बाद भी अपने बाबा की बात नहीं टालती।

कितना सारा समय निकल गया है। समझ ही नहीं पाता अब कहां से बात कहना शुरू करूं और कहां खत्म। कहीं से कोई बात याद है, तो कहीं से कोई। कहीं जबानी के दिनों में खो जाता हूँ। तो कहीं तुम्हारा बचपन याद आ जाता है।

कभी-कभी तो हद्द ही होती है। अपने ही बुढ़ापे के दिनों के बारे में बैठा सोचता रहता हूँ। सोचता हूँ कोई मिले तो उससे ढेर सारी बातें कह दूं। फिर लगता है.. किससे कहूँ.! समय किसके पास है इतना। जो मेरे 65 साल के सभी किस्से सुने। अब तो आधे से ज्यादा याद भी नहीं। कोई याद दिलाए तो सब कहूँ।

पर तुमसे मैं सब कह सकता हूँ न गुड़िया। तुम तो अपने बाबा का कहां सब सुनती हो। पर उसके लिए भी तुम्हारा समय चाहिए। और तुम तो इतनी व्यस्त रहती हो। व्यस्तता तो होगी है। करने को इतना काम जो होता है। कोई बात नहीं चलो.. ऐसे ही जो सब याद है कह देता हूँ।

आज दिल सुबह से बड़ा खाली-खाली सा महसूस कर रहा है। तुम्हे लगाने को कितनी बार फोन उठाया पर फिर सोचा तुमसे कहूँ क्या.? कोई कहने को बात भी याद नहीं आती। और मन में जो इतनी बातें चल रही है उनका पूछो मत। लगता है बौखला गया हूँ मैं। तुम यहां होती तो अपने बाबा की ऐसी हरकते देख बहुत हस्ती। मेरा तुम और तुम्हारी मां दोनों मिल कर मजाक बनाती। अच्छा है तुम यहां पर नहीं हो..।

पर यहां होती तो और भी अच्छा होता। देखो..देख रही हो मेरा दिमाग काम ही नहीं करता आज-कल। बीते दिनों की बहुत याद आ रही है।

रह-रह कर वो..छन-छन करती पायल का सुर मेरे कानो को सुरीली आवाज, मीठी आवाज से भर रहा है। तुम्हारे नन्हे पैरों में बंधी नन्ही-नन्ही सी वो पायलें। मैं और तुम्हारी मां ने अब तक संभाल कर रखी है। उस पर लगा हरा और लाल रंग तुमको कितन भाया था न। पर फिर भी कभी तुमने उन्हें कुछ देर से ज्यादा नहीं पहना। जब-जब तुम्हारी मां तुम्हें जबरजस्ती वो पायल पहना देती तो तुम जोर-जोर से रोने

लगती थी। अपने छोटे-छोटे हाथो से उन्हें उतारने की कोशिश करती पर नहीं उतार पाती। फिर उसके बाद...उसके बाद तुम्हारी मासूमियत भरी नौटंकी..आंखों में कैसे पानी उतार लेती थी तुम। अपने गुलाब की पंखुड़ी से होठों को जोर से दवा, दोनों आंखों से गंगा-जमुना बहाती, हल्की सी गर्दन तेडी कर मेरी तरफ उम्मीद से देखती तुम्हारी आंखे। जो जोर से चिल्ला के कहती

'बाबा इन्हें उतार दो।'

मैं दूर सोफे में बैठ, जीवन की इस झांकी का आनंद लेता हुआ कितना मगन रहता था। तुम्हारी सभी नादानियों के बीच जीवन का वो सुखमय समय था।

सुबह तुम्हे चैन से सोता देख। तुम्हारा माथा चूम दफ़्तर जाता हुआ मैं। सारा दिन इसी सोच में काम जल्दी-जल्दी करता। ताकि जल्दी से घर आ कर अपनी गुड़िया को अपनी गोद में उठा सकू, उसे लाड़ कर सकू।

बिना एक मिनट भी यहां-वहां बरबाद किए दफ़्तर से आ कर। पूरे घर में तुम्हे ढूंढ कर, अपने दिन का सारा हाल तुम्हे सुनाने से ले कर.. तुम्हारा मुझे सुबह घर से दफ़्तर जाते समय ' टाटा बाबा ' कह कर हर शाम दरवाजे पर मेरा इंतेज़ार करना। अगर में थोड़ा सा भी देर कर दूं आने में.., तो तुम्हारा खफा हो कर अपने कमरे में चले जाना। फिर जैसे ही मेरी आवाज सुनना., दौड़ कर पूरे घर में मुझे खोजना और मेरे पास आ कर सारे दिन का हाल सुनाना।

'बाबा आज ये हुआ, आज मैंने ऐसा किया'

और न जाने क्या-क्या। कितना कुछ कहूँ मैं, कितन कुछ बताऊं.. बताओ.?

इतनी जल्दी रेत के जैसा मुट्ठी से समय फिसला है। मेरी नन्हे लड़खड़ाते पैरों से चलने वाली गुड़िया। आज उन्हीं मजबूत पैरों से दौड़ने लगी है। अब मैं उसे बाजार घुमाने नहीं ले जाता। अब वो मुझे बाजार की एक-एक गली बताती है।

'बाबा ये यहां मिलता है, वो वहां मिलता है। बाबा वहां की चाट खाएं, और वहां से मां के लिए चूड़ियां लेनी है। और मुझे अपने बालों के लिए दो..? नहीं दो नहीं कम से कम चार रिबन लेने है। और..और बाबा मुझे एक कंगन भी लेना है..और बिंदी भी, फिर काजल भी खत्म हो गया मेरा, और भी कितना सारा सामान लेना है। आधा तो मुझे याद भी नहीं। क्या हम कल भी बाजार आ सकते है, बाकी का सामान लेने। बाबा मैं अब न पर्चा बना लिया करूंगी।'

'अरे..बाबा देखो वो पानी बतासे की दुकान पहले वो खा लें। चलो न बाबा पहले खा लेते है। फिर सब सामान ले लेंगे। ओह.! बाबा अब याद आया एक नाखून पॉलिश भी लेनी थी। मैं तो भूल ही गई थी..'

बाजार के रस्ते पर चलते-चलते तुम्हे ये सब याद आता था। क्या अब भी जब तुम अपना सब सामान लेने बाजार जाती हो। तो अपने साथ चलते, तुम्हारी हर बात मानते, तुम्हे समझते, तुम्हारा हाथ पकड़ कर रास्ता पार कराते, तुम्हे सड़क पर अंदर की तरफ चलने को कहते, और खुद बाहर गाड़ियों की तरफ चलते, हर दुकान से जब तुम अपना सामान ले लेती और अपने बाबा को पैसों की पर्ची पकड़ा देती, या सामान लेते ही मेरी तरफ देखती और तुम्हारी नजरे मुझसे कह देती के बाबा बस इतना ही लेना था., अब आप पैसे दे दो। कहीं नुक्कड़ पर

खड़ा चाट का ठेला देख... अपने बाबा की याद आती है.? उनकी कमी लगती है क्या?

ऐसा तो याद आता होगा न। जब बाबा थे तो कैसे तुम्हारी मन मानी चलने देते थे। अब तो शायद वैसे शौक पूरे नहीं होते होंगे न.! मैं भी न पागल कैसी-कैसी बातें सोचता हूँ। अब तो अपने मन के शौक ज्यादा पूरे होते होंगे। अब बाजार में कोई टूक-टुक करने वाला नहीं होता न। मैं भी अब ज्यादा बाजार नहीं जाता। सब्जी मसाले वाला घर ही आ जाता है सब सामान देने। अब जब तुम आती हो तब ही जाना होता है।

देखो तो अब खर्च करने को भी कितना है। इतनी पैंशन आती है। लग-भग पूरी की पूरी ही बैंक में पड़ी रहती है। तुम्हारी मां और मुझे कितना खर्चा लगता है। पहले कमाता था तो तुम थी खर्च करने को। अब कुछ कमाई किस्तों में आती तो है, पर खर्च नहीं होती। तुमने भी तो अब मुझसे पैसे लेना बंद कर दिया है। जब से तुम्हारी शादी हुई है। तब से कुछ तो अपने आप बदल गया है। जो मुझे आज तक न समझ आया और न ही मन को अच्छा लगा।

पहले जब तेरा मन होता था बिना मेरे कहे। बिना बताए ही तुम अपने मन से घर आ जाती ही। और अब इतनी बार कहने पर भी तुम्हे सबकी इजाज़त लगती है। उस पर अगर आ भी जाओ तो रुकती नहीं ज्यादा देर। अपनी ही बेटी के साथ अपने घर में रहन को मुझे राह तकनी पड़ती है। पहले यहां-वहां पैसे छूट जाए तो हिसाब रखना पड़ता था। कहीं तुमने बिना मतलब खर्च तो नहीं कर दिए।

अब देखो नीचे बैठक के कोने वाले दराच में हजारों रुपए पड़े रहते है। कोई उनको हाथ लगाने वाला नहीं। तुम भी घर आती हो तो उन पैसों का इस्तेमाल नहीं करती। न ही अपनी गुड़ियों को करने देती हो।

कितनी बार तुम्हारी मां और मैं कहते भी है तुमसे..गुड़िया ये सब तुम्हारा ही तो है। पर तुम एक नहीं सुनती..अपनी बातों में उलझा लेती हो हम दोनों को।

मैं कभी कह नहीं पाता ये और समझाना भी मुश्किल ही लगता है। जैसे पानी बादलों का साथ छोड़ धरती पर आता है। तो सब बारिश को सुख मानते है, उसके बेहिस बरसने की, उसकी आजादी की सराहना करते है। पर कोई भी उन बादलों का दुख नहीं समझ पाया कभी। उन बूंदों के दूर हो जाने के बाद आसमान का हर एक बदल कितना उदास होता होगा न। कितना खाली महसूस करता होगा न।

या उन डालियों की बात करें। उनकी कलियां जब फूल बन जाती होगी, और लोग उन फूलों को तोड़ कर उन्हें डालियों से दूर कर देते है। तो सब फलों की खुशबू की, उनकी सुन्दरता की तारीफ करते है। कोई पलट कर उस डाली का दुख नहीं देखता।

समाज में भी सभी बेटियों की परवरिश देखते है, उनकी सुन्दरता देखते है, उनकी चंचलता की तारीफ करते है। पर कोई भी उनके मां बाप का तप नहीं देखता, उनका त्याग नहीं देखता। सब देखते है के तुम बड़ी हो कर कैसे अपने ससुराल को संभालती हो। जब-जब यहां आती हो इस घर को भी संवारती हो। सब कहते है तुम बड़ी हो गई हो। तुम्हारे विदा होने के पहले, मैं इस बात को मानने से कतराता था। मेरी गुड़िया और बड़ी.! न..न..जी.. उसमें तो अभी भी बचपन भरा हुआ है।

वो खुद शहर में इतनी बड़ी अफ़सर है। पर फिर भी जब-जब घर आती है। अपने पसंद का सामान बाजार से बाबा के पैसों से ही लेती है। आज भी उसके पास कितने भी पैसे क्यों न हो। जब तक अपने बाबा के बटुए से पैसे न निकाले उसकी खरीदारी पूरी नहीं होती। पर मुझे भी उसका

ऐसा करना बहुत भाता है। उसी के लिए तो है सब। वो जब पूरे हक़ से बिना मुझसे पूछे मेरे बटुए से पैसे लेती है। तो मुझे उस पर और ज्यादा गर्व होता है।

मेरी गुड़िया इतनी समझदार हो गई है। सही जगह पर खर्च करना जानती है। अब मुझे उसके हिसाब-किताब की चिंता करने की जरूरत नहीं है। लेकिन जब से तुम विदा हुई हो। पता नहीं क्या हुआ है। इस घर को छोड़ने के साथ-साथ तुमने इस घर पर अपन हक भी छोड़ दिया। अब न पहले जैसी जिद्द रही न पहले जैसा तुम्हारा मुझ पर हक जताना।

मैंने कितनी बार जान कर अपना बटुआ मेंज पर रखा। ताकि तुम उससे जरूरत के पैसे निकाल सको। पर तुमने उसकी तरफ देख भी नहीं। देखा भी तो मुझे बापिस कर दिया। मेरे मन की दशा इस दृश्य को देख कर क्या होती है। ये कोई फूल से बिछड़ी डाली या सुखे बादल ही समझ सकते है। तुम अपने पैसे खुद कमाने लगी हो। और अब तो दामाद जी भी है। इस पिता की संपत्ति से तुम्हारा क्या लेना देना।

इस घर पर रखी हर चीज, इन दीवारों पर सजी हर तस्वीर तुम्हारे मन की है। पर जब से तुम विदा हुई हो, तुमने इन्हें संवारना भी छोड़ दिया है। ये भी मेरी ही तरह तुमसे होले-होले बिछड़ने का दुख..मेरे साथ ही सहती है। मेरे साथ-साथ ये भी तुम्हे इस घर से पराया होते देखती है।

अब तो आंगन में तुम्हारे द्वारा लगाए गए पेड़, पौधे भी मुझसे तुम्हारी शिकायत करने लगे है। पहले के दिनों में तो मैं उन्हें डांट देता था। कहता था ऐसा नहीं है। पर अब धीरे-धीरे उनकी कुछ बातें सुनने और मानने लगा हूँ। अब भी कई बार मेरा उनसे झगड़ा हो जाता है। वो कहते है की संसार का नियम ही यही है। जो एक बार घर से निकला

है वापिस नहीं आया। फिर बेटियां तो होती ही पराई है। वो जब एक बार घर से बिदा होती है तो वापिस नहीं आती। फिर चाहे इस घर में कितना भी सुख-दुख आए। हमें सब अकेले ही देखना-सहना पड़ेगा।

मैं कल शाम भी उनसे खूब लड़ा उनकी इस बात पर। फिर तुम्हारे लगाए गुलाब के तने से बात हुई। वो भी बहुत मायूस था। उसकी भी कई शिकायतें थी। उसने भी अपना हाल सुनाया। बोला आपका तो अच्छा है। एक ही बेटी थी। बस एक ही के दूर जाने का दुख लिए बैठे हो। मुझसे पूछो न जाने कितनी अनगिनत कलियां खिल कर मूर्छा गई, जाने कितनी तो बिना खिले ही डाली से गिर गई या तोड़ ली गई। और जो खिल पाई और खिल कर सुंदर फूल बन गई, उन्हें भी आप लोगों द्वारा तोड़ लिया गया। आपकी बिटिया कम से कम आपसे मिलने तो आती है। हमारी कलियां तो जो एक बार गई तो गई। हम तो इसे ही जीवन चक्र मानते है।

उसकी बात सुनने में अजीब थी और सच भी। पर मेरा मानने का मन नहीं हुआ। ऐसे कैसे तुम पराई हो.? ये सवाल मैंने बगीचे में बैठ कर खुद से किया। लेकिन जवाब आस-पास की सभी डालियों ने दिया। वो कहती है जो बिछड़ गया है, वो पराया ही तो है। मैं न मानू ये अलग बात है। पर जब पेड़ से एक शाख गिरी और बापिस कभी न जुड़ पाई, तो वो अब पराई हुई न।

सब मुझसे तुम्हारा हाल पूछ रहे थे। बोले बड़े दिनों से तुम आई नहीं। दीवार की ओट पर रखी मिट्टी कल फिर से पूछ रही थी। मेरी बिटिया अपने घर का रास्ता भूल गई क्या। वैसे तो मैंने कह दिया है। तुम अभी अपनी कुछ परेशानियों को सुलझाने में व्यस्त हो। जैसे ही फुर्सत मिलेगी तुम दौड़ी अपने बाबा के पास चली आओगी।

कितना कुछ बदल गया न। अभी कुछ दिनों पहले तेज बारिश के साथ हल्की सी धूप भी थी। और आज इतनी ठंड है मौसम में। ऐसे ही जीवन बदल जाता है। आपके आस-पास के लोग बदल जाते है। ये बात देर से समझ आती है। पर जब समझ आ जाए तो मन को दुखों से, उदासी से भर देती है।

अब तो तुम अपनी परेशानियों के हल भी खुद ही खोज लेती हो। कितनी भी बड़ी परेशानी हो मुझ तक उसकी खबर तक पहुंचने नहीं देती। मुझे कुछ दिनों पहले तुम्हारी मां ने बताया, के तुम्हारे घर पर कुछ अच्छा नहीं चल रहा। दामाद जी से किसी बात को ले कर झगड़ा हो गया है। और तुम्हारे सास-ससुर भी तुमसे कुछ चीड़-चीड़े से रहते है। दफ़्तर में भी कुछ तना-तनी सी रहती है आज कल। इतने सबके बीच तुमको घर और दफ़्तर सब संभालना होता है। फिर दो-दो बच्चे भी तो है उनका भी ध्यान रखो। कितना कुछ करना होता है तुमको।

मुझे लगा मैं तुमसे बात करूं। इस बार में कहूँ तुमसे के ज्यादा परेशान मत होना। मन न लगे वहां तो अपने बाबा के पास आ जाना। किसी बात की चिंता मत करना। कुछ मदद लगे, किसी बात की सलाह मसौरा करना हो तो बाबा को फोन कर लेना। या ऐसा करो के कुछ दिनों के लिए दफ़्तर से और ससुराल से..,दोनों जगह से छुट्टी ले लो और यहां आ जाओ। हम तीनों मिल कर खूब मजे करेंगे। तुम्हारी पसंद की चाट खाने भी चलेंगे।

यहां तुम अपनी मर्जी से रहना। कोई जरूरत नहीं सुबह 5 बजे उठने की। जितना मन करे उतनी देर सोना। आराम से..जब नींद पूरी हो जाए तब ही उठना। फिर जैसे मन करे वैसे कपड़े पहनना, मन करे तो बाल बनाना, नहीं तो तुम तो ऐसे ही अच्छी लगती हो। कुछ देर आराम से

बगीचे में बैठ कर मेरे हाथ की बनी गरमा-गरम चाय पीना और हमसे बहुत सारी बातें करना। बात करने का मन न भी हो तो भी कोई जबरजस्ती नहीं है। मत करना बात बस आराम से बैठना। बैठने का मन न हो तो बैठक में सोफे पर आराम से लेट जाना और टीवी देखना। जो तुम्हारा मन करे वो देखना, गाने सुनने का मन करे गाने सुनना, या खुद भी गाने का मन करे तो जोर-जोर से गा भी लेना।

बाजार घूमने का दिल करे तो मुझे भी जबरजस्ती अपने साथ ले जाना। फिर जाते-जाते रास्ते में अपनी खरीदारी का सामान याद करना और मुझे यहां-वहां सभी दुकानों पर ले कर जाना। फिर जो तुम्हारा मन करे सब खरीद लेना और पैसे देने के लिए अपने बाबा को बिल पकड़ा देना।

गुड़िया फिर वापिस आते समय नुक्कड़ की चाट खायेंगे। तुम्हारा मन न हो तो शाम का खाना भी तुम मत बनाना। तुम्हारी मां सब देख लेगी। तुम बस बैठना और अपनी फरमाइश करना। तुम्हे मेरे हाथ की बनी दाल बहुत पसंद है न। मैं तुम्हारे बिना कहे ही तुम्हारे लिए दाल बनाऊंगा और तुम्हारी मां से ढेर सारी वाटी बनवाऊंगा। फिर साथ खाना खाएंगे, बिल्कुल पहले की तरह।

फिर तुम्हारी मां ने मुझे रोकते हुए कहां..

‘सुनो कैसी बातें करते हो तुम.! लड़की है वो तुम्हारी, उसका ससुराल है वो। भला ससुराल से कोई छुट्टी कैसे ले सकता है। तुमने ब्याह दिया है उसको। अब वो तुम्हारी छोटी सी गुड़िया नहीं रही। उसको उसकी परेशानी खुद हल करने दो। ऐसे तुम कब तक उसका सहारा बने रहोगे। बड़ी हो गई है वो अब। अपना अच्छा बुरा सब समझ सकती

है। अगर वो बताए तो ठीक., नहीं तो उससे ज्यादा पूछना मत उसकी परेशानियों के बारे में।'

इस घर में सब कुछ है गुड़िया। सभी तरह के सन-साधन है। हर तरह का आराम है। सभी मौसमों के लिए इस घर को मैंने अनुकूल बनाया है। पर बस यही एक मौसम है जो काटे नहीं कट रहा है। ये घर बुढ़ापे के मौसम के लिए नहीं बना है। इसमें गर्मी की नमी तो है, पर ठंड की धूप..वो कहीं खो गई है। थोड़ी दूर चल कर जाऊं तो थक जाता हूँ। ऐसा नहीं है के अब शरीर में जान नहीं रही या हिम्मत नहीं है। बस अब मन नहीं होता कुछ भी करने का। हर रोज समझाता हूँ खुद को के यही तो नियम है।

चलो अच्छा है सबने अपना-अपना काम संभाल लिया। तुम भी अब बड़ी हो गई हो। समझदार हो गई हो। अब अपनी परेशानियों के लिए तुम्हे बचपन की तरह अपने बाबा की जरूरत नहीं पड़ती।

अब तुम उदास हो कर रोती हुई अपने बाबा के पास दौड़ती हुई नहीं आओगी। और न ही इसकी-उसकी किसी की भी मुझसे शिकायत करोगी। तुम्हारे आस-पास अब और भी लोग है, जो तुम्हे सुनते है। जिनसे तुम अपनी बात कह सकती हो। एक मैंने ही तुम्हारे अलावा किसी और को सुनने की आदत नहीं डाली।

खैर..छोड़ो भी मेरी बातें। जैसे इतने मौसम गुजर गए है। ये ठंड भी गुजर जाएगी। मेरा क्या है...बुढ़ापे का शरीर है। थोड़ा आराम तो मांगता ही है।

पर तुम्हारी मां कहती है। मैं अभी इतना भी बुढ़ा नहीं हुआ हूँ। अभी मेरी उम्र ही क्या है। लेकिन सोचता हूँ उम्र का क्या है। कितनी भी हो

जिसकी बेटी इतनी बड़ी हो गई है। अपना काम खुद कर सकती है। उसके बाबा की उम्र चाहे जो भी हो। वो मन से तो बुढ़ा हो ही गया है।

अरे...देखो तो इस पगले को। लगता है अब दिमाग ने भी काम करना बंद कर दिया है। इतना कुछ लिखने को था। सोचा था समय के आभाव में सब कह नहीं पाता। तो लिख कर तुम्हे एक ख़त भेजता हूँ। पर यहां बैठे-बैठे सुबह से शाम कर दी और लिखा एक शब्द भी नहीं। मैं अपने ही ख्यालों में तुमसे ये सब कह गया। और तुम्हे कुछ पता ही नहीं। सोचा था सब बताऊंगा तुम्हे। तुम मेरे लिए कितनी खास हो। होती होंगी बेटियां समाज के लिए बोझ। मेरे लिए तो मेरी गुड़िया मेरी पूरी दुनिया है।

खैर छोड़ो ये सब अब...अब फिर किसी रोज बैठूंगा और मन की सब बातें लिखूंगा। तुमसे कहूँगा के समय निकाल कर जल्दी, कुछ बहुत सारे दिनों के लिए अपने घर बापिस आ जाओ। तुम्हारे बाबा तुम्हारी राह तकते है।

हर शाम चबूतरे में कुर्सी डाल कर, स्टेशन की तरह जाती सड़क की तरह चेहरा करके बैठते है। इसी उम्मीद से के कभी मेरी गुड़िया को मेरी इतनी याद आए..और वो मुझसे मिलने दौड़ी चली आए।

अब बहुत नीद आ रही है। लगता है थक गया हूँ मैं। तुम्हारी मां भी आवाज दे रही है। आज सुबह से मैंने उसकी एक नहीं सुनी है। दिल में बहुत भारीपन सा है। आज तो सुबह से एक भी सिगरेट नहीं पी है। तुम कितना चीड़ जाती थी न, मेरी इस सिगरेट पीने की आदत से। कितना गुस्सा करती थी। पर क्या करूं..एक ही बुरी आदत थी तुम्हारे बाबा में। जो वो कभी सुधार नहीं पाए। चलो अब सोने जाता हूँ मैं। तुम्हारी आवाज सुनने का मन कर रहा है। पर तुम्हारी यादों में खोए

समय पर ध्यान ही नहीं गया। अब तो बहुत रात हो गई है। तुम सब भी सो गए होगे। सुबह तुम्हे फोन करता हूँ। अपन ख्याल रखना गुड़िया। तुम्हारे बाबा तुम्हे बहुत याद करते है।

Completed

SPECIAL THANKS

Rai Sir

जो मैं इतने सालों से करना चाहती थी। वो आपकी एक सलाह से इतना आसान हो गया। किसी ने बहुत पहले कहा था। एक हल्का सा सपोर्ट भी बड़ी इमारत को गिरने से बचा सकता है। किसी की एक सलाह जीवन में कितना बड़ा परिवर्तन ला सकती है, ये मैंने आपसे जाना है। बहुत सालों का मेरा एक किताब लिखने का सफर, आपके साथ साझा करने से चंद दिनों में पूरा हो गया। मुझे ये खबर तो थी के मैं कर सकती हूँ। मगर कैसे ये रास्ता सर आपसे मिला है। पता नहीं क्यों पर लगता है। अगर पिताजी होते, तो वो भी बिलकुल आपकी ही तरह मुझे मेरे सपने पुरे करने के लिए प्रेरित करते। THANK YOU SOO MUCH SIR मेरी कहानी को पढ़ने और उसकी अशुद्धियाँ सुधारने के लिए।

Preeti Ma'am

मैंने सोचा तो था। कभी और बहुत जल्दी अपनी खुदकी कोई कहानी लिखूंगी। खुदसे एक पूरी किताब लिखूंगी। मन में कई कहानिया थी, बहुत सारे बिचार थे। पर फिर एक रोज़ आपने अपना एक विचार मुझसे साझा किया।

" बेटियां बिदा होने से पराई हो जाती है , बेटियों के माता पिता बुढ़ापे में अकेले रह जाते है।"

बहुत दिन लगे आपकी कहीं उस एक छोटी सी बात को समझने में। पर जब वो बात समझ आयी। तो मैं खुद को उसके बारे में लिखने से

रोक नहीं पाई। THANK YOU SOO MUCH मुझे मेरे जीवनी की पहली और बहुत प्यारी सी कहानी देने के लिए।